मासिक

शिविरा
पत्रिका

वर्ष : 56 | अंक : 9 | मार्च, 2016 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹10

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते...

सावित्री बाई फूले

इन्दिरा नूई

किरण बेदी

सत्यमेव जयते

प्रो. वासुदेव देवनानी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा एवं भाषा विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

"वर्तमान शैक्षणिक सत्र 2015-16 समाप्ति पर है। यह सत्र विगत सत्रों की तुलना में विशिष्ट रहा है। स्टाफिंग पैटर्न एवं शाला दर्पण जैसे नवाचारों के कारण विद्यालयों में समान सूत्र से शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक पदों का निर्धारण किया गया है तथा आधुनिक सूचना एवं प्रौद्योगिकी को अपनाकर शाला दर्पण पोर्टल पर विद्यालयों की सभी सूचनाएं अपलोड करने से पारदर्शिता एवं विश्वसनीयता स्थापित हुई है।"

परीक्षाएं - निष्ठा एवं पारदर्शिता

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर की **वार्षिक सैद्धान्तिक परीक्षाएं 2016** का आगाज दिनांक 03 मार्च 2016 से हो चुका है। इसके अन्तर्गत उच्च माध्यमिक परीक्षा, वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा, माध्यमिक परीक्षा तथा प्रवेशिका परीक्षा का आयोजन होगा। इस वर्ष इन परीक्षाओं में बैठने वाले परीक्षार्थियों की संख्या लगभग 20 लाख है। इतनी भीमकाय परीक्षार्थी संख्या एवं प्रदेश के विभिन्न जिलों में दूर-दूर तक स्थापित परीक्षा केन्द्रों की भौगोलिक बसावट के दृष्टिमध्य परीक्षा हेतु आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवाना, प्रश्न पत्रों की सुरक्षा, परीक्षा में अनुचित साधनों की रोकथाम, उत्तर पुस्तिकाओं की सुरक्षा एवं उन्हें संग्रहण केन्द्र तक पहुँचाने जैसे अनेक काम इस दौरान किए जाने हैं।

वास्तव में बोर्ड परीक्षा का कार्य शिक्षा विभाग के स्तर पर होने वाले विभिन्न कार्यों में सर्वाधिक वृहत् एवं चुनौती भरा कार्य है। यह कार्य नहीं बल्कि महाकार्य है जिसे वर्षों से प्रामाणिकतापूर्वक निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सम्पन्न करवाकर राजस्थान ने पूरे देश में अद्भुत कीर्तिमान स्थापित किया है। यह हमारी प्रतिबद्धता, समर्पण एवं सतत सजग रहकर कार्य निष्पादन करने पर निर्भर करता है। मैं चाहूंगा कि मेरे सहयोगी अधिकारी, कर्मचारी एवं शिक्षक अपनी कर्तव्यनिष्ठा एवं प्रामाणिकता से कार्य करते हुए श्रेष्ठता का एक नवीन इतिहास इस वर्ष रचें।

बोर्ड परीक्षा आयोजन को महायज्ञ की उपमा देना भी अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा। शिक्षक एवं शिक्षा अधिकारी इस महायज्ञ के पुरोहित हैं। अपने अनुभव व दक्षता की निष्ठापूर्वक आहुति देकर इस यज्ञ को वे निर्विघ्न-यशमय पूरा करेंगे, ऐसा मुझे विश्वास है। इस अवसर पर मेरी अपेक्षा है कि:-

1. परीक्षा केन्द्रों पर परीक्षा की पवित्रता सर्वथा सुनिश्चित की जावे। वहाँ का वातावरण ही ऐसा हो कि अनुचित साधनों के उपयोग करने जैसी बात परीक्षार्थियों के मन में ही न आए। इसके बावजूद कहीं अनुचित साधनों के उपयोग का कोई प्रकरण बनता है तो नियमानुसार सख्त कार्यवाही अमल में लाई जावे।
2. परीक्षा प्रश्न पत्रों की सुरक्षा के लिए हर स्तर पर अपेक्षित सावधानी बरती जावे। याद रखें कि प्रश्न पत्रों की सुरक्षा में किंचित भी लापरवाही पूरे प्रदेश को संकट में डाल सकती है।
3. परीक्षा कार्य में लगने वाले वीक्षकों एवं पर्यवेक्षकों से मेरी अपील है कि वे सम्पूर्ण सचेष्ट रहकर वीक्षण-पर्यवेक्षण कार्य करें। परीक्षा की पवित्रता उन्हीं पर निर्भर है।
4. मेरे ध्यान में आया है कि कतिपय परीक्षा केन्द्रों पर विद्यालय के स्वयं के पर्याप्त शिक्षक वीक्षण कार्य हेतु उपलब्ध होते हुए भी ग्रामीण क्षेत्रों से शिक्षकों को बुलाया जाता है। यह सर्वथा अनुचित है। ऐसा हरगिज न करें। सबसे पहले अपने विद्यालय तथा उसके बाद स्थानीय विद्यालयों से शिक्षकों को वीक्षण-पर्यवेक्षण हेतु लगाने के पश्चात् भी आवश्यक हो तो सम्बन्धित पंचायत समिति सीमा से शिक्षकों को लगाया जावे।
5. बोर्ड परीक्षा के उपरान्त अप्रैल माह में गृह परीक्षाओं का आयोजन होगा। ऐसी स्थिति में यह माह गृह परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले छात्र-छात्राओं के लिए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। बोर्ड परीक्षा केन्द्र वाले विद्यालयों के संस्थाप्रधान एवं शिक्षकों से मैं चाहूँगा कि वे परीक्षा समय के बाद विद्यालय में अधिक से अधिक सम्भव समय में कक्षाएं लगाकर विद्यार्थियों को शिक्षण करवाएं।

वर्तमान शैक्षणिक सत्र 2015-16 समाप्ति पर है । यह सत्र विगत सत्रों की तुलना में विशिष्ट रहा है। स्टाफिंग पैटर्न एवं शाला दर्पण जैसे नवाचारों के कारण विद्यालयों में समान सूत्र से शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक पदों का निर्धारण किया गया है तथा आधुनिक सूचना एवं प्रौद्योगिकी को अपनाकर शाला दर्पण पोर्टल पर विद्यालयों की सभी सूचनाएं अपलोड करने से पारदर्शिता एवं विश्वसनीयता स्थापित हुई है।

हम सब मिलकर विभाग में इसी भावना के साथ सुधार एवं सम्बलन की दिशा में आगे बढ़ते रहें। मैं बोर्ड परीक्षा में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों के उत्तम परीक्षा परिणाम एवं उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करता हूँ।

(प्रो. वासुदेव देवनानी)

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 56 | अंक : ९ | माघ–फाल्गुन २०७२ | मार्च, 2016

प्रधान सम्पादक
बी.एल. स्वर्णकार

वरिष्ठ सम्पादक
प्रकाश चन्द्र जाटोलिया

सम्पादक
गोमाराम जीनगर

सह सम्पादक
मुकेश व्यास

प्रकाशन सहायक
नारायण दास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 10

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 50
- संस्थाओं/विद्यालयों/अन्य व्यक्तियों के लिए ₹ 100
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334 001
दूरभाष : 0151–2528875
फैक्स : 0151–2201861
E-mail : shivirasecedubkn@gmail.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **–वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- सर्वोच्च प्राथमिकता : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा 5

आलेख

- मन की बात 6
  (माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विशेष प्रसारण का अविकल रूप)
- गाँधी चिन्तन में शिक्षा और महिला सशक्तीकरण 11
  भगवती प्रसाद गौतम
- मातृरूपा : नारी 14
  किशनगिरि गोस्वामी
- महिला शिक्षा–समाज की आवश्यकता 15
  अर्चना गौड़
- ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं महिला स्वावलंबन 16
  डॉ. मनीष कुमार सैनी
- संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ : अर्थपूर्ण सीखने का ताना–बाना 18
  योगेन्द्र भूषण
- स्टेट इनशिएटिव फॉर क्वालिटी एजुकेशन (SIQE) कार्यक्रम में कक्षा प्रक्रिया 21
  प्रेमनारायण
- महर्षि दयानंद सरस्वती 24
  डॉ. श्याम मनोहर व्यास
- उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (I.A.S.E.) 30
  गीता बलवदा
- बुद्ध की नैतिक शिक्षा 32
  भारत दोसी
- बोर्ड परीक्षा में केन्द्राधीक्षक की भूमिका 33
  अरुण कुमार शर्मा
- विद्यालय और प्रबंधन समिति 34
  रामनिवास शर्मा
- सकारात्मक सोच 35
  डॉ. गिरीश दत्त शर्मा
- क्लिप्टोमेनिया : आवश्यक है निदान 36
  पूर्णिमा मित्रा
- विशिष्ट बालक 37
  डॉ. रामरतन लटियाल
- होली के गीत 38
  संकलन : **कुन्दन जीनगर**
- बिखरते रंग : होली के संग 39
  मनमोहन अभिलाषी
- वन–गोचर संसाधन 41
  रमेश कुमार शर्मा
- अंकुरित अनाज 42
  अचलचन्द जैन
- ई–लर्निंग 44
  राजेश कुमार तिवाड़ी
- पुस्तकों का आनन्द 46
  दीपचन्द सुथार

इस माह का गीत

- तमसो मा ज्योतिर्गमय 17
  संकलन : **रामकिशोर**

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

- धौलपुर : ऐतिहासिक नगर एवं पूर्वी सिंहद्वार 43
  अनुराग शर्मा

स्तम्भ

- पाठकों की बात 6
- आदेश–परिपत्र 25–29
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 29
- शाला प्रांगण 47–48
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50

पुस्तक समीक्षा 45–46

- भारतीय भू–भोम री टाळवां कहाणियां : (श्रीमती) पुष्पलता कश्यप
  समीक्षक–**डॉ. बसंती पंवार**
- गद्य–सतरंग : डॉ. नमामीशंकर आचार्य
  समीक्षक–**डॉ. गौरीशंकर**

आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर
मो. 9414142641

▼ परिचय

श्री जगदीश चन्द्र पुरोहित
निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी श्री जगदीश चन्द्र पुरोहित ने दिनांक 12 फरवरी, 2016 को निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान का पदभार ग्रहण किया। आपका जन्म दिनांक 24 मई 1959 है।

आप इतिहास प्राचीन भारत और इतिहास आधुनिक भारत विषय के अधिस्नातक हैं। आपको राज्य के विभिन्न विभागों में प्रशासनिक कार्यों के सफल सम्पादन का अच्छा अनुभव है।

प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक के रूप में आपका नेतृत्व विभाग में नई ऊर्जा का संचार करेगा। आप शिक्षा के प्रति समर्पित संवेदनशील अधिकारी हैं। कार्यों को त्वरित और श्रेष्ठतम रूप में सम्पादित करवाना आपकी प्राथमिकताओं में है।

पाठकों की बात

- 'शिविरा' पत्रिका का मैं नियमित पाठक हूँ। इस पत्रिका के संपादक मण्डल को मेरा हार्दिक साधुवाद। शिविरा पत्रिका मार्गदर्शक की भूमिका निभाती है, जिससे विद्यार्थी को उचित ज्ञान मिलता है। एकात्म मानववाद एवं मानव कल्याण, रामकृष्ण परमहंस के आध्यात्मिक विचार अपनाकर निश्चित ही जीवन में सार्थकता सिद्ध होगी।

–रामचंद्र बालवा, नागौर

- ''शैक्षिक गुणवत्ता एवं विभागीय पदोन्नति को समर्पित'' फरवरी 16 के मुखपृष्ठ पर निदेशालय बाह्य चित्र के साथ श्री रामकृष्ण परमहंस 18 फरवरी 2016 जयंती दिवस तथा पं. दीनदयाल उपाध्याय शताब्दी वर्ष को देखकर हर्षानुभूति हुई। उत्सुकता के साथ सर्वप्रथम अपनों से अपनी बात में शिक्षामंत्री ने अच्छी प्रासंगिक प्रस्तुति के साथ शिक्षकगणों को जो मार्गदर्शन किया है, वह सराहनीय है। साथ ही श्रीमान् निदेशक महोदय ने अपेक्षा व्यक्त की है कि सरकारी विद्यालयों के अधिक छात्र शीर्षस्थ स्थान की सूची में अपना नाम दर्ज कराएं तो अधिक श्रेष्ठ है। साथ ही वसन्तोत्स धूमधाम से मनाने का आग्रह करते हुए जो अपनी अभिलाषा प्रकट की है वह सराहनीय है। शैक्षिक गुणवत्ता में योगेन्द्र भूषण जी की अच्छी प्रस्तुति रही। ये सभी अधिगम के उपाय व्यावहारिक के साथ शिक्षकगण कार्यान्वित करें तभी आलेख की सार्थकता प्रभावित होगी। 'पदोन्नति' में आलेख श्री अरुण शर्मा ने वांछित जानकारी देकर लाभान्वित किया है। 'दिव्य धरा यह धरती' इस माह के संकलित गीत में बालक/बालिका के चयन करने से सूझ-बूझ प्रशंसनीय रही। उत्तम यह है कि इस माह के गीत के अन्तर्गत संकलित प्रस्तुति न देकर यदि लेखक की मौलिक काव्य रचना प्रकाशन में प्राथमिकता दें तो अधिक श्रेष्ठ है। 12 फरवरी को बसंत पंचमी थी। इस अंक में किसी अध्यापक/लिपिक की सरस्वती वंदना की मौलिक रचना को प्राथमिकता दी जाती तो अधिक अच्छा रहता। उपनिदेशक श्री ओमप्रकाश सारस्वत की तो लेखनी में ही सरस्वती की वाणी है जो शब्दों में उतरकर प्रेरणादायक हो जाती हैं। अस्तु उनकी रचना के सन्दर्भ में कुछ भी कहना सूरज को दीपक दिखाना है। श्री रामकृष्ण परमहंस की शिक्षा पद्धति, आलेख में प्रेरक रही। आद्योपांत अवलोकन कर मनोयोग में शिविरा को पढ़ने के लिए अब जन उतावला रहता है। फिर कार्टूनिस्ट श्री रामबाबू माथुर की तारीफ किए बिना सब कुछ अपूर्ण है।

–मनमोहन अभिलाषी, भरतपुर

- 'अच्छे दिन वो थे, ये नहीं' सुभाष सोनगरा का लेख आद्योपांत पढ़ा। लेखक का प्रयास प्रशंसनीय है। पुरातन मानव मूल्यों को उजागर करने का स्तुत्य प्रयत्न है। आज विज्ञान का युग है, शिक्षा में नवीन तकनीक, नूतन नवाचार प्रारंभ हो चुके हैं। बाल हृदय की गहराइयों तक पहुँचने का दायित्व शिक्षक, अभिभावक व समाज का है। इस हेतु सतत प्रयास हमको करने पड़ेंगे। हम पुरानी विधाओं का समवाय स्थापित कर नूतन 'मल्टी लेवल' शिक्षा पद्धति को स्वीकार करें तथा शिक्षा में गुणवत्ता प्रदान करने का प्रयास करें। निः संदेह करके सीखने की विधा द्वारा शिक्षा में स्थाई आयाम उजागर होंगे। इंजीनियरिंग, चिकित्सा व्यवस्था, कला-विज्ञान की शिक्षा हमें बाल-वैज्ञानिकों को देनी होगी, उन्हें लेपटॉप, वाट्सअप, इंटरनेट से मुखातिब कराना होगा। आधुनिक उपकरणों के सहयोग बिना हम अधूरे हैं। अतः ''बीति ताहीं बिसारिये, आगे की सुध लेय'' उक्ति सही चरितार्थ होगी। अर्थात पुरानी शिक्षण पद्धति को नहीं भूलना है, उसमें समवाय के नये प्रयोग करने है।

–अम्बालाल स्वर्णकार, अजमेर

- शिविरा पत्रिका का फरवरी 16 का अंक ठीक बसन्ती पंचमी के दिन हाथ में आया, सोचा आज तो मां सरस्वती का जन्मोत्सव है। फरवरी 16 अंक के मुख पृष्ठ पर राजस्थान शिक्षा के निदेशालय के भवन के चित्र के साथ ऊपर की तरफ मां सरस्वती का सुन्दर चित्र मन को आनन्दित कर रहा था, साथ ही भारत की प्राचीन आध्यात्मिक सम्पदा के मूर्त रूप रामकृष्ण परमहंस का चित्र, तो एक तरफ चिन्तनशील दार्शनिक पं. दीनदयाल उपाध्याय व दूसरी तरफ विश्वविख्यात वैज्ञानिक डॉ. होमी जहांगीर भाभा का चित्र, साथ में बाल वैज्ञानिक का अन्वेषणरत चित्र देखकर बहुत अच्छा लगा, वास्तव में मुखपृष्ठ बहुत सुन्दर है। फरवरी 16 का अंक निःसंदेह शैक्षिक गुणवत्ता एवं विभागीय पदोन्नति को समर्पित अंक कहा जा सकता है।

इस अंक के द्वारा पाठकों व कार्मिकों को अपने पदोन्नति के अधिकार के प्रति जागरूक रहने के लिए प्रमुख बिन्दुओं की ओर ध्यान दिलाया गया है यथा प्रत्येक कार्मिकों को अपनी वरिष्ठता सूची में अपना नाम, पात्रता, वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रपत्र सक्षम अधिकारी तक यथा समय पहुँचाना तथा न्यायिक व विभागीय प्रकरणों के निस्तारण की जानकारी यथा समय नियुक्ति अधिकारी तक पहुँचे यह आवश्यक है। वास्तव में शिविरा पत्रिका कार्मिकों के कल्याण की भावना रखती है इसमें कोई संदेह नहीं है। प्रदेश के शिक्षा विभाग का प्रत्येक कार्मिक उक्त बिन्दुओं के प्रति सजग रहे तो उन्हें पदोन्नति के अवसर सहज ही प्राप्त होंगे व विभागीय पदोन्नति के पुनरावलोकन की स्थिति नहीं बनेगी व कार्मिकों एवं विभाग का श्रम व समय बचेगा। शिविरा पत्रिका के माध्यम से कार्मिकों को पदोन्नति प्रकरणों में सजग किए जाने के लिये श्री अरुण शर्मा सहायक निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर को हार्दिक धन्यवाद।

–त्रिभुवन नारायण गौड़, जोधपुर

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

सत्यमेव जयते

बी.एल. स्वर्णकार
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

▼ *परिचय*

भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी श्री बी.एल. स्वर्णकार ने 11 फरवरी 2016 को निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान का पदभार ग्रहण किया। आपका जन्म दिनांक 10 जुलाई 1957 है। मूलतः भीलवाड़ा जिले के श्री बी.एल. स्वर्णकार अपने विद्यार्थी जीवन से ही प्रतिभासम्पन्न छात्र रहे हैं। आपने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की हायर सैकण्डरी (कला वर्ग) परीक्षा-1975 की राज्य मेरिट में प्रथम तथा सैकण्डरी (कलावर्ग) परीक्षा-1974 में चौथा स्थान प्राप्त किया।

आप M.A. (English), PG Diploma in GIS and Remote Sensing हैं। वर्तमान में इग्नू से M.B.A. में अध्ययन जारी है।

आपने प्रशासनिक और वित्तीय प्रबन्धन के विभिन्न पदों पर रहते हुए राज्य को अपनी विशिष्ट सेवाएँ प्रदान की हैं।

माध्यमिक शिक्षा निदेशक के रूप में आपकी सर्वोच्च प्राथमिकता है कि राज्य के विद्यालयों में सभी विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले। सभी योजनाओं के केन्द्र में मूलरूप से विद्यार्थी हों। इसके लिए आधुनिक संचार तकनीक अपनाते हुए सुदृढ़ प्रबन्धकीय व्यवस्था से नवाचारों के साथ विद्यालयों में उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करना सुनिश्चित किया जाए। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रति समर्पित निदेशक महोदय संवेदनशील और प्रखर मेधा के धनी हैं।

सर्वोच्च प्राथमिकता : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

दिशाकल्प के माध्यम से राज्य के समस्त शिक्षकों, कर्मचारियों से संवाद करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है।

वर्तमान शिक्षा-सत्र सम्पन्न होने को अग्रसर है। विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा दी गई गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के आकलन का समय आ गया है। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 10 और 12 की परीक्षा की तैयारी में विद्यार्थी, शिक्षक और कर्मचारी सभी प्राण-पण से जुट गए हैं। मुझे आशा है परीक्षाओं में जहाँ विद्यार्थी अपने अर्जित ज्ञान का श्रेष्ठतम प्रदर्शन करेंगे, वहीं शिक्षक और कर्मचारी अपनी सुदृढ़ प्रबन्धकीय व्यवस्थाओं से परीक्षा का सफल संचालन करेंगे।

हमें आधुनिक संचार प्रणाली को अपनाते हुए नवाचारों के साथ शिक्षा के गुणात्मक स्वरूप को नये आयाम देने हैं। राज्य के प्रत्येक विद्यार्थी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलना सुनिश्चित हो यह हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है।

होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

(बी.एल. स्वर्णकार)

विशेष...

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विशेष प्रसारण का अविकल रूप

मन की बात

विद्यार्थी सकारात्मक चिन्तन के साथ अपनी श्रेष्ठतम उपलब्धि हासिल करें यह भाव प्रत्येक माता-पिता, अभिभावक और सच्चे शिक्षक का रहता है। आगे बढ़ने के लिए विद्यार्थी सत्रपर्यंत अध्ययन करते हुए परीक्षा जैसे महत्त्वपूर्ण पड़ाव को पार कर निरन्तर प्रयासरत रहते हैं। इन्हीं प्रयासों को तब पंख लग जाते हैं जब कोई आत्मीय आगे आकर अपना वरद हस्त उन पर रखता है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 28 फरवरी, 2016 को सुबह 11 बजे आकाशवाणी और दूरदर्शन से प्रसारित 'मन की बात' प्रसारण में बहुत ही आत्मीय, प्रेरक और मार्गदर्शक उद्‌बोधन देकर विद्यार्थियों को परीक्षा के डर से मुक्त कर अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए सरल, छोटे परन्तु अचूक सूत्र दिए हैं जो कि गुरूमंत्र की तरह हैं।

शिविरा को अपने पाठकों-शिक्षकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रसारण का अविकल रूप प्रकाशित करने में अतीव प्रसन्नता हो रही है।

-व.सं.

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार! आप रेडियो पर मेरी **'मन की बात'** सुनते होंगे, लेकिन दिमाग इस बात पर लगा होगा- बच्चों के exam शुरू हो रहे हैं, कुछ लोगों के दसवीं-बारहवीं के exam शायद 1 मार्च को ही शुरू हो रहे हैं। तो आपके दिमाग में भी वही चलता होगा। मैं भी आपकी इस यात्रा में आपके साथ शरीक होना चाहता हूँ। आपको आपके बच्चों के exam की जितनी चिंता है, मुझे भी उतनी ही चिंता है। लेकिन अगर हम exam को, परीक्षा को देखने का अपना तौर-तरीका बदल दें, तो शायद हम चिंतामुक्त भी हो सकते हैं।

मैंने पिछली मेरी 'मन की बात' में कहा था कि आप Narendra Modi App पर अपने अनुभव, अपने सुझाव मुझे अवश्य भेजिए। मुझे खुशी इस बात की है-शिक्षकों ने, बहुत ही सफल जिनकी करियर रही है ऐसे विद्यार्थियों ने, माँ-बाप ने, समाज के कुछ चिंतकों ने बहुत सारी बातें मुझे लिख कर के भेजी हैं। दो बातें तो मुझे छू गईं कि सब लिखने वालों ने विषय को बराबर पकड़ के रखा। दूसरी बात इतनी हजारों मात्रा में चीज़ें आई कि मैं मानता हूँ कि शायद ये बहुत महत्वपूर्ण विषय है। लेकिन ज़्यादातर हमने exam के विषय को स्कूल के परिसर तक या परिवार तक या विद्यार्थी तक सीमित कर दिया है। मेरी App पर जो सुझाव आये, उससे तो लगता है कि ये तो बहुत ही बड़ा, पूरे राष्ट्र में लगातार विद्यार्थियों के इन विषयों की चर्चायें होती रहनी चाहिए।

मैं आज मेरी इस **'मन की बात'** में विशेष रूप से माँ-बाप के साथ, परीक्षार्थियों के साथ और उनके शिक्षकों के साथ बातें करना चाहता हूँ। जो मैंने सुना है, जो मैंने पढ़ा है, जो मुझे बताया गया है, उसमें से भी कुछ बातें बताऊंगा। कुछ मुझे जो लगता है, वो भी जोड़ूंगा। लेकिन मुझे विश्वास है कि जिन विद्यार्थियों को exam देनी है, उनके लिए मेरे ये 25-30 मिनट बहुत उपयोगी होंगे, ऐसा मेरा मत है।

मेरे प्यारे विद्यार्थी मित्रो, मैं कुछ कहूँ, उसके पहले आज की 'मन की बात' का opening, हम विश्व के well-known opener के साथ क्यूँ न करें। जीवन में सफलता की ऊँचाइयों को पाने में कौन-सी चीज़ें उनको काम आईं, उनके अनुभव आपको ज़रूर काम आएँगे। भारत के युवाओं को जिनके प्रति नाज़ है, ऐसे भारतरत्न श्रीमान सचिन तेंदुलकर, उन्होंने जो message भेजा है, वह मैं आपको सुनाना चाहता हूँ:-

'नमस्कार, मैं सचिन तेंदुलकर बोल रहा हूँ। मुझे पता है कि exams कुछ ही दिनों में start होने वाली हैं। आप में से कई लोग tense भी रहेंगे। मेरा एक ही message है आपको कि आपसे expectations आपके माता-पिता करेंगे, आपके teachers करेंगे, आपके बाकी के family members करेंगे, दोस्त करेंगे। जहाँ भी जाओगे, सब पूछेंगे कि आपकी तैयारी कैसी चल रही है, कितने percent आप स्कोर करोगे। यही कहना चाहूँगा मैं कि आप ख़ुद अपने लिए कुछ target set कीजियेगा, किसी और के expectation के pressure में मत आइयेगा। आप मेहनत ज़रूर कीजियेगा, मगर एक realistic achievable target खुद के लिए सेट कीजिये और वो target achieve करने के लिए कोशिश करना। मैं जब Cricket खेलता था, तो मेरे से भी बहुत सारे

expectations होते थे। पिछले 24 साल में कई सारे कठिन moments आये और कई-कई बार अच्छे moments आये, मगर लोगों के expectations हमेशा रहते थे और वो बढ़ते ही गये, जैसे समय बीतता गया, expectations भी बढ़ते ही गए। तो इसके लिए मुझे एक solution find करना बहुत ज़रूरी था। तो मैंने यही सोचा कि मैं मेरे खुद के expectations रखूँगा और खुद के targets set करूँगा। अगर वो मेरे खुद के targets मैं set कर रहा हूँ और वो achieve कर पा रहा हूँ, तो मैं ज़रूर कुछ-न-कुछ अच्छी चीज़ देश के लिए कर पा रहा हूँ। और वो ही targets मैं हमेशा achieve करने की कोशिश करता था। मेरा focus रहता था ball पे और targets अपने आप slowly-slowly achieve होते गए। मैं आपको यही कहूँगा कि आप, आपकी सोच positive होनी बहुत ज़रूरी है। positive सोच को positive results follow करेंगे। तो आप positive ज़रूर रहियेगा और ऊपर वाला आपको ज़रूर अच्छे results दे, ये मुझे, इसकी पूरी उम्मीद है और आपको मैं best wishes देना चाहूँगा exams के लिए। एक tension free जा के पेपर लिखिये और अच्छे results पाइये। Good Luck!

दोस्तो, देखा, तेंदुलकर जी क्या कह रहे हैं। ये expectation के बोझ के नीचे मत दबिये। आप ही को तो आपका भविष्य बनाना है। आप खुद से अपने लक्ष्य को तय करें, खुद ही अपने target तय करें-मुक्त मन से, मुक्त सोच से, मुक्त सामर्थ्य से। मुझे विश्वास है कि सचिन जी की ये बात आपको काम आएगी। और ये बात सही है। प्रतिस्पर्द्धा क्यों? अनुस्पर्द्धा क्यों नहीं। हम दूसरों से स्पर्द्धा करने में अपना समय क्यों बर्बाद करें। हम खुद से ही स्पर्द्धा क्यों न करें। हम अपने ही पहले के सारे रिकॉर्ड तोड़ने का तय क्यों न करें। आप देखिये, आपको आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं पायेगा और अपने ही पिछले रिकॉर्ड को जब तोड़ोगे, तब आपको खुशी के लिए, संतोष के लिए किसी और से अपेक्षा भी नहीं रहेगी। एक भीतर से संतोष प्रकट होगा।

दोस्तो, परीक्षा को अंकों का खेल मत मानिये। कहाँ पहुँचे, कितना पहुँचे? उस हिसाब-किताब में मत फँसे रहिये। जीवन को तो किसी महान उद्देश्य के साथ जोड़ना चाहिए। एक सपनों को ले कर के चलना चाहिए, संकल्पबद्ध होना चाहिए। ये परीक्षाएँ, वो तो हम सही जा रहे हैं कि नहीं जा रहे, उसका हिसाब-किताब करती हैं; हमारी गति ठीक है कि नहीं है, उसका हिसाब-किताब करती हैं। और इसलिए विशाल, विराट ये अगर सपने रहें, तो परीक्षा अपने आप में एक आनंदोत्सव बन जायेगी। हर परीक्षा उस महान उद्देश्य की पूर्ति का एक कदम होगी। हर सफलता उस महान उद्देश्य को प्राप्त करने की चाबी बन जायेगी। और इसलिए इस वर्ष क्या होगा, इस exam में क्या होगा, वहाँ तक सीमित मत रहिये। एक बहुत बड़े उद्देश्य को ले कर के चलिये और उसमें कभी अपेक्षा से कुछ कम भी रह जाएगा, तो निराशा नहीं आएगी। और जोर लगाने की, और ताकत लगाने की, और कोशिश करने की हिम्मत आएगी।

जिन हजारों लोगों ने मुझे मेरे App पर मोबाइल फोन से छोटी-छोटी बातें लिखी हैं। श्रेय गुप्ता ने इस बात पर बल दिया है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन रहता है students अपनी पढ़ाई के साथ-साथ अपनी health का भी ध्यान रखें, जिससे आप exam में स्वस्थतापूर्वक अच्छे से लिख सकें। अब मैं आज आखिरी दिन ये तो नहीं कहूँगा कि आप दंड-बैठक लगाना शुरू कर दीजिये और तीन किलोमीटर, पाँच किलोमीटर दौड़ने के लिए जाइये। लेकिन एक बात सही है कि खास कर के exam के दिनों मे आप का routine कैसा है। वैसे भी 365 दिवस हमारा routine हमारे सपनों और संकल्पों के अनुकूल होना चाहिये। श्रीमान प्रभाकर रेड्डी जी की एक बात से मैं सहमत हूँ। उन्होंने खास आग्रह किया है, समय पर सोना चाहिए और सुबह जल्दी उठकर revision करना चाहिए। examination centre पर प्रवेश-पत्र और दूसरी चीजों के साथ समय से पहले पहुँच जाना चाहिए। ये बात प्रभाकर रेड्डी जी ने कही है, मैं शायद कहने की हिम्मत नहीं करता, क्योंकि मैं सोने के संबंध में थोड़ा उदासीन हूँ और मेरे काफ़ी दोस्त भी मुझे शिकायत करते रहते हैं कि आप बहुत कम सोते हैं। ये मेरी एक कमी है, मैं भी ठीक करने की कोशिश करूँगा। लेकिन मैं इससे सहमत जरूर हूँ। निर्धारित सोने का समय, गहरी नींद ये उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी कि आपकी दिन भर की और गतिविधियाँ और ये संभव है। मैं भाग्यवान हूँ, मेरी नींद कम है, लेकिन बहुत गहरी जरूर है और इसके लिए मेरा काम चल भी जाता है। लेकिन आपसे तो मैं आग्रह करूँगा। वरना कुछ लोगों की आदत होती है, सोने से पहले लम्बी-लम्बी टेलीफोन पर बात करते रहते हैं। अब उसके बाद वही विचार चलते रहते हैं, तो कहाँ से नींद आएगी? और जब मैं सोने की बात करता हूँ, तो ये मत सोचिए कि मैं exam के लिए सोने के लिए कहा रहा हूँ। गलतफहमी मत करना। मैं exam के time पर तो आपको अच्छी परीक्षा देने के लिए तनावमुक्त अवस्था के लिए सोने की बात कर रहा हूँ। सोते रहने की बात नहीं कर रहा हूँ। वरना कहीं ऐसा न हो कि marks कम आ जाये और माँ पूछे कि क्यों बेटे, कम आये, तो कह दो कि मोदी जी ने सोने को कहा था, तो मैं तो सो गया था। ऐसा नहीं करोगे न! मुझे विश्वास है नहीं करोगे।

वैसे जीवन में, discipline सफलताओं की आधारशिला को मजबूत बनाने का बहुत बड़ा कारण होती है। एक मजबूत foundation discipline से आता है। और जो unorganized होते हैं, Indiscipline होते हैं, सुबह करने वाला काम शाम को करते हैं, दोपहर को करने वाला काम रात देर से करते हैं, उनको ये तो लगता है कि काम हो गया, लेकिन इतनी energy waste होती है और हर पल तनाव रहता है। हमारे शरीर में भी एक-आध अंग, हमारे body का एक-आध part थोड़ी-सी तकलीफ करे, तो आपने देखा होगा कि पूरा शरीर सहजता नहीं अनुभव करता है। इतना ही नहीं, हमारा routine भी चरमरा जाता है। और इसलिए किसी चीज को हम छोटी न मानें। आप देखिये, अपने-आपको कभी जो निर्धारित है, उसमें compromise करने की आदत में मत फंसाइए। तय करें, करके देखें।

दोस्तो, कभी-कभी मैंने देखा है कि जो student exam के लिए जाते हैं, दो प्रकार के student होते हैं, एक, उसने क्या पढ़ा है, क्या सीखा है, किन बातों में उसकी अच्छी ताकत है-उन चीजों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। दूसरे प्रकार के student होते हैं-यार, पता नहीं कौन-सा सवाल आयेगा, पता नहीं कैसा सवाल आयेगा, पता नहीं कर पाऊंगा कि नहीं कर पाऊंगा, पेपर भारी होगा कि हल्का होगा? ये दो प्रकार के लोग देखे होंगे आपने। जो कैसा पेपर आयेगा, उसके tension में रहता है, उसका उसके परिणाम पर भी नकारात्मक प्रभाव होता है। जो मेरे पास क्या है, उसी विश्वास से जाता है, तो कुछ भी आ जाये, वो निपट लेता है। इस बात को मुझसे भी अच्छी तरह अगर कोई कह सकता है, तो checkmate करने में जिनकी मास्टरी है और दुनिया के अच्छों-अच्छों को जिसने checkmate

कर दिया है, ऐसे Chess के champion विश्वनाथन आनंद, वो अपने अनुभव बतायेंगे। आइये, इस exam में आप checkmate करने का तरीका उन्हीं से सीख लीजिए: –

Hello, this is Viswanathan anand. First of all, let me start off by wishing you all the best for your exams. I will next talk a little bit about how I went to my exams and my experiences for that. I found that exams are very much like problems you face later in life. You need to be well rested, get a good night's sleep, you need to be on a full stomach, you should definitely not be hungry and the most important thing is to stay calm. It is very very similar to a game of Chess. When you play, you don't know, which pawn will appear, just like in a class you don't know, which question will appear in an exam. So if you stay calm and you are well nourished and have slept well, then you will find that your brain recalls the right answer at the right moment. So stay calm. It is very important not to put too much pressure on yourself, don't keep your expectations too high. Just see it as a challenge - do I remember what I was taught during the year, can I solve these problems. the last minute, just go over the most important things and the things you feel, the topics you feel, you don't remember very well. You may also recall some incidents with the teacher or the students, while you are writing an exam and this will help you recall a lot of subject matter. If you revise the questions you find difficult, you will find that they are fresh in your head and when you are writing the exam, you will be able to deal with them much better. So stay calm, get a good night's sleep, don't be over-confident but don't be pessimistic either. I have always found that these exams go much better than you fear before. So stay confident and all the very best to you.

विश्वनाथन आनंद ने सचमुच में बहुत ही महत्वपूर्ण बात बताई है और आपने भी जब उनको अन्तर्राष्ट्रीय Chess के गेम में देखा होगा, कितनी स्वस्थता से वो बैठे होते हैं और कितने ध्यानस्थ होते हैं। आपने देखा होगा, उनकी आँखें भी इधर–उधर नहीं जाती हैं। कभी हम सुनते थे न, अर्जुन के जीवन की घटना कि पक्षी की आँख पर कैसे उनकी नजर रहती थी। बिलकुल वैसे ही विश्वनाथन को जब खेलते हुए देखते हैं, तो बिलकुल उनकी आँखें एकदम से बड़ी target पर fix रहती हैं और वो भीतर की शांति की अभिव्यक्ति होती है। ये बात सही है कि कोई कह दे, इसलिये फिर भीतर की शांति आ ही जायेगी, ये तो कहना कठिन है। लेकिन कोशिश करनी चाहिये! हँसते–हँसते क्यों न करें! आप देखिये, आप हँसते रहेंगे, खिलखिलाहट हँसते रहेंगे exam के दिन भी, अपने–आप शांति आना शुरू हो जाएगी। आप दोस्तों से बात नहीं कर रहे हैं या अकेले चल रहे हैं, मुरझाए–मुरझाए चल रहे हैं, ढेर सारी किताबों को last moment भी हिला रहे हैं, तो–तो फिर वो शांत मन हो नहीं सकता है। हँसिए, बहुत हँसते चलिए, साथियों के साथ चुटकले share करते चलिए, आप देखिए, अपने–आप शांति का माहौल खड़ा हो जाएगा।

मैं आपको एक बात छोटी सी समझाना चाहता हूँ। आप कल्पना कीजिये कि एक तालाब के किनारे पर आप खड़े हैं और नीचे बहुत बढ़िया चीज़ें दिखती हैं। लेकिन अचानक कोई पत्थर मार दे पानी में और पानी हिलना शुरू हो जाए, तो नीचे जो बढ़िया दिखता था, वो दिखता है क्या? अगर पानी शांत है, तो चीज़ें कितनी ही गहरी क्यों न हों, दिखाई देती हैं। लेकिन पानी अगर अशांत है, तो नीचे कुछ नहीं दिखता है। आपके भीतर बहुत–कुछ पड़ा हुआ है। साल भर की मेहनत का भण्डार भरा पड़ा है। लेकिन अशांत मन होगा, तो वो खजाना आप ही नहीं खोज पाओगे। अगर शांत मन रहा, तो वो आपका खजाना बिलकुल उभर करके आपके सामने आएगा और आपकी exam एकदम सरल हो जायेगी।

मैं एक बात बताऊं मेरी अपनी–मैं कभी–कभी कोई लेक्चर सुनने जाता हूँ या मुझे सरकार में भी कुछ विषय ऐसे होते हैं, जो मैं नहीं जानता हूँ और मुझे काफी concentrate करना पड़ता है। तो कभी–कभी ज्यादा concentrate करके समझने की कोशिश करता हूँ तो एक भीतर तनाव महसूस करता हूँ। फिर मुझे लगता है, नहीं–नहीं, थोड़ा relax कर जाऊँगा, तो मुझे अच्छा रहेगा। तो मैंने अपने–आप अपनी technique develop की है। बहुत deep breathing कर लेता हूँ। गहरी साँस लेता हूँ। तीन बार–पांच बार गहरी साँस लेता हूँ, समय तो 30 सेकिंड, 40 सेकिंड, 50 सेकिंड जाता है, लेकिन फिर मेरा मन एकदम से शांत हो करके चीजों को समझने के लिए तैयार हो जाता है। हो सकता है, ये मेरा अनुभव हो, आपको भी काम आ सकता है।

रजत अग्रवाल ने एक अच्छी बात बतायी है। वो मेरी App पर लिखते हैं–हम हर दिन कम–से–कम आधा घंटे दोस्तों के साथ, परिवारजनों के साथ relax feel करें। गप्पें मारें। ये बड़ी महत्वपूर्ण बात रजत जी ने बताई है, क्योंकि ज्यादातर हम देखते हैं कि हम जब exam दे करके आते हैं, तो गिनने के लिए बैठ जाते हैं, कितने सही किया, कितना गलत किया। अगर घर में माँ–बाप भी पढ़े लिखे हों और उसमें भी अगर माँ–बाप भी टीचर हों, तो–तो फिर पूरा पेपर फिर से लिखवाते हैं–बताओ, तुमने क्या लिखा, क्या हुआ! सारा जोड़ लगाते हैं, देखो, तुम्हें 40 आएगा कि 80 आएगा, 90 आएगा! आपका दिमाग जो exam हो गयी, उसमें खपा रहता है। आप भी क्या करते हैं, दोस्तों से फ़ोन पर share करते हैं, अरे यार, उसमें तुमने क्या लिखा! अरे यार, उसमें तुम्हारा कैसा गया! अच्छा, तुम्हें क्या लगा। यार, मेरी तो गड़बड़ हो गयी। यार, मैंने तो गलती कर दी। अरे यार, मुझे ये तो मालूम था, लेकिन मुझे याद नहीं आया। हम उसी में फंस जाते हैं। दोस्तो, ये मत कीजिये। exam के समय हो गया, सो हो गया। परिवार के साथ और विषयों पर गप्पें मारिए। पुरानी हँसी–खुशी की यादें ताजा कीजिए। कभी माँ–बाप के साथ कहीं गये हों, तो वहाँ के दृश्यों को याद करिए। बिलकुल उनसे निकल करके ही आधा घंटा बिताइए। रजत जी की बात सचमुच में समझने जैसी है।

दोस्तो, मैं क्या आपको शांति की बात बताऊँ। आज आपको exam देने से पहले एक ऐसे व्यक्ति ने आपके लिए सन्देश भेजा है, वे मूलतः शिक्षक हैं और आज एक प्रकार से संस्कार शिक्षक बने हुए हैं। रामचरितमानस, वर्तमान सन्दर्भ में उसकी व्याख्या करते–करते वो देश और दुनिया में इस संस्कार सरिता को पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसे पूज्य मुरारी बापू ने भी विद्यार्थियों के लिए बड़ी महत्वपूर्ण tip भेजी है और वे तो शिक्षक भी हैं, चिन्तक भी हैं और इसलिए उनकी बातों में दोनों का मेल है: –

मैं मुरारी बापू बोल रहा हूँ। मैं विद्यार्थी भाइयों–बहनों को यही कहना चाहता हूँ कि परीक्षा के समय में मन पर कोई भी बोझ रखे बिना और बुद्धि का एक स्पष्ट निर्णय करके और चित्त को एकाग्र करके आप परीक्षा में बैठिये और जो स्थिति आई है, उसको स्वीकार कर लीजिए। मेरा अनुभव है कि परिस्थिति को स्वीकार करने से बहुत हम प्रसन्न रह सकते हैं और

खुश रह सकते हैं। आपकी परीक्षा में आप निर्भार और प्रसन्नचित्त आगे बढ़ें, तो जरूर सफलता मिलेगी और यदि सफलता न भी मिली, तो भी fail होने की ग्लानि नहीं होगी और सफल होने का गर्व भी होगा। एक शेर कह कर मैं मेरा सन्देश और शुभकामना देता हूँ-लाज़िम नहीं कि हर कोई हो कामयाब ही, जीना भी सीखिए नाकामियों के साथ। हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री का ये जो 'मन की बात' का कार्यक्रम है, उसको मैं बहुत आदर देता हूँ। सबके लिए मेरी बहुत-बहुत शुभकामना। धन्यवाद।

पूज्य मुरारी बापू का मैं भी आभारी हूँ कि उन्होंने बहुत अच्छा सन्देश हम सबको दिया। दोस्तो, आज एक और बात बताना चाहता हूँ। मैं देख रहा हूँ कि इस बार मुझे लोगों ने जो अपने अनुभव बताये हैं, उसमें योग की चर्चा अवश्य की है। और ये मेरे लिए खुशी की बात है कि इन दिनों मैं दुनिया में जिस किसी से मिलता हूँ, थोड़ा-सा भी समय क्यों न मिले, योग की थोड़ी सी बात तो कोई न कोई करता ही करता है। दुनिया के किसी भी देश का व्यक्ति क्यों न हो, भारत का कोई व्यक्ति क्यों न हो, तो मुझे अच्छा लगता है कि योग के संबंध में इतना आकर्षण पैदा हुआ है, इतनी जिज्ञासा पैदा हुई है और देखिये, कितने लोगों ने मुझे मेरे मोबाइल App पर, श्री अतनु मंडल, श्री कुणाल गुप्ता, श्री सुशांत कुमार, श्री के.जी. आनंद, श्री अभिजीत कुलकर्णी, न जाने अनगिनत लोगों ने meditation की बात की है, योग पर बल दिया है। खैर दोस्तो, मैं बिलकुल ही आज ही कह दूँ, कल सुबह से योग करना शुरू करो, वो तो आपके साथ अन्याय होगा। लेकिन जो योग करते हैं, वो कम से कम exam है इसलिए आज न करें, ऐसा न करें। करते हैं तो करिये। लेकिन ये बात सही है कि विद्यार्थी जीवन में हो या जीवन का उत्तरार्द्ध हो, अंतर्मन की विकास यात्रा में योग एक बहुत बड़ी चाबी है। सरल से सरल चाबी है। आप जरूर उस पर ध्यान दीजिए। हाँ, अगर आप अपने नजदीक में कोई योग के जानकार होंगे, उनको पूछोगे तो exam के दिनों में पहले योग नहीं किया होगा, तो भी दो-चार चीज़ें तो ऐसे बता देंगे, जो आप दो-चार-पाँच मिनट में कर सकते हैं। देखिये, अगर आप कर सकते हैं तो! हाँ, मेरा उसमें विश्वास बहुत है।

मेरे नौजवान साथियो, आपको परीक्षा हॉल में जाने की बड़ी जल्दी होती है। जल्दी-जल्दी पर अपने bench पर बैठ जाने का मन करता है? क्या ये चीजें हड़बड़ी में क्यों करें? अपना पूरे दिन का समय का ऐसा प्रबंधन क्यों न करें कि कहीं ट्रैफिक में रुक जाएँ, तो भी समय पर हम पहुँच ही जाएँ। वर्ना ऐसी चीज़ें एक नया तनाव पैदा करती हैं और एक बात है, हमें जितना समय मिला है, उसमें जो प्रश्नपत्र है, जो instructions हैं, हमें कभी-कभी लगता है कि ये हमारा समय खा जाएगा। ऐसा नहीं है दोस्तो। आप उन instructions को बारीकी से पढ़िए। दो मिनट-तीन मिनट-पाँच मिनट जाएगी, कोई नुकसान नहीं होगा। लेकिन उससे exam में क्या करना है, उसमें कोई गड़बड़ नहीं होगी और बाद में पछतावा नहीं होगा और मैंने देखा है कि कभी-कभार पेपर आने के बाद भी pattern नयी आयी है, ऐसा पता चलता है, लेकिन पढ़ लेते हैं instructions, तो शायद हम अपने आपको बराबर cope-up कर लेते हैं कि हाँ, ठीक है, चलो, मुझे ऐसे ही जाना है। और मैं आपसे आग्रह करूँगा कि भले आपके पाँच मिनट इसमें जाएँ, लेकिन इसको ज़रूर करें।

श्रीमान यश नागर, उन्होंने हमारे मोबाइल App पर लिखा है कि जब उन्होंने पहली बार पेपर पढ़ा, तो उन्हें ये काफी कठिन लगा। लेकिन उसी पेपर को दोबारा आत्मविश्वास के साथ, अब यही पेपर मेरे पास है, कोई नये प्रश्न आने वाले नहीं हैं, मुझे इतने ही प्रश्नों से निपटना है और जब दोबारा मैं सोचने लगा, तो उन्होंने लिखा है कि मैं इतनी आसानी से इस पेपर को समझ गया, पहली बार पढ़ा तो लगा कि ये तो मुझे नहीं आता है, लेकिन वही चीज दोबारा पढ़ा, तो मुझे ध्यान में आया कि नहीं-नहीं सवाल दूसरे तरीके से रखा गया है, लेकिन ये तो वही बात है, जो मैं जानता हूँ। प्रश्नों को समझना ये बहुत आवश्यक होता है। प्रश्नों को न समझने से कभी-कभी प्रश्न कठिन लगता है। मैं यश नागर की इस बात पर बल देता हूँ कि आप प्रश्नों को दो बार पढ़ें, तीन बार पढ़ें, चार बार पढ़ें और आप जो जानते हैं, उसके साथ उसको match करने का प्रयास करें। आप देखिये, वो प्रश्न लिखने से पहले ही सरल हो जाएगा।

मेरे लिए आज खुशी की बात है कि भारतरत्न और हमारे बहुत ही सम्मानित वैज्ञानिक सी.एन.आर. राव, उन्होंने धैर्य पर बल दिया है। बहुत ही कम शब्दों में लेकिन बहुत ही अच्छा सन्देश हम सभी विद्यार्थियों को उन्होंने दिया है। आइये, राव साहब का message सुनें:-

This is C.N.R. Rao from Bangalore. I fully realise that the examinations cause anxiety. That too competitive examinations. Do not worry, do your best. That's what I tell all my young friends. the same time remember, that there are many opportunities in this country. Decide what you want to do in life and don't give it up. You will succeed. Do not forget that you are a child of the universe. You have a right to be here like the trees and the mountains. All you need is doggedness, dedication and tenacity. With these qualities you will succeed in all examinations and all other endeavours. I wish you luck in everything you want to do. God Bless.

देखा, एक वैज्ञानिक का बात करने का तरीका कैसा होता है। जो बात कहने में, मैं आधा घंटा लगाता हूँ, वो बात वो तीन मिनट में कह देते हैं। यही तो विज्ञान की ताकत है और यही तो वैज्ञानिक मन की ताकत है। मैं राव साहब का बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने देश के बच्चों को प्रेरित किया। उन्होंने जो बात कही है-दृढ़ता की, निष्ठा की, तप की, यही बात है-dedication, determination, diligence. डटे रहो, दोस्तो, डटे रहो। अगर आप डटे रहोगे, तो डर भी डरता रहेगा। और अच्छा करने के लिए सुनहरा भविष्य आपका इन्तजार कर रहा है।

अब मेरे App पर एक सन्देश रुचिका डाबस ने अपने exam experience को share किया है। उन्होंने कहा कि उनके परिवार में exam के समय एक positive atmosphere बनाने का लगातार प्रयास होता है और ये चर्चा उनके साथी परिवारों में भी होती थी। सब मिला करके positive वातावरण। ये बात सही है, जैसा सचिन जी ने भी कहा, positive approach, positive frame of mind positive energy को उजागर करता है।

कभी-कभी बहुत सी बातें ऐसी होती हैं कि जो हमें प्रेरणा देती हैं, और ये मत सोचिए कि ये सब विद्यार्थियों को ही प्रेरणा देती हैं। जीवन के किसी भी पड़ाव पर आप क्यों न हों, उत्तम उदाहरण, सत्य घटनाएँ बहुत बड़ी प्रेरणा भी देती हैं, बहुत बड़ी ताकत भी देती हैं और संकट के समय नया रास्ता भी बना देती हैं। हम सब electricity bulb के आविष्कारक थॉमस एलवा एडिसन, हमारे syllabus में उसके विषय में पढ़ते हैं। लेकिन दोस्तो, कभी ये सोचा है, कितने सालों तक उन्होंने इस काम को करने के लिए खपा दिए। कितनी बार विफलताएँ मिली, कितना समय गया, कितने पैसे गए। विफलता मिलने पर कितनी निराशा आयी होगी। लेकिन आज उस electricity, वो bulb हम लोगों की ज़िंदगी को भी तो रोशन करता है। इसी को तो कहते हैं, विफलता में भी सफलता की संभावनाएं निहित होती हैं।

श्रीनिवास रामानुजन को कौन नहीं जानता है। आधुनिक काल के महानतम गणित विचारकों में से एक नाम-Indian Mathematician. आपको पता होगा, उनका formal कोई education mathematics में नहीं हुआ था, कोई विशेष प्रशिक्षण भी नहीं हुआ था, लेकिन उन्होंने Mathematical analysis, number theory जैसे विभिन्न क्षेत्रों में गहन योगदान किया। अत्यंत कष्ट भरा जीवन, दुःख भरा जीवन, उसके बावजूद भी वो दुनिया को बहुत-कुछ दे करके गए।

जे.के. रॉलिंग एक बेहतरीन उदाहरण हैं कि सफलता कभी भी किसी को भी मिल सकती है। हैरी पॉटर series आज दुनिया भर में लोकप्रिय है। लेकिन शुरू से ऐसा नहीं था। कितनी समस्या उनको झेलनी पड़ी थी। कितनी विफलताएँ आई थीं। रॉलिंग ने खुद कहा था कि मुश्किलों में वो सारी ऊर्जा उस काम में लगाती थीं, जो वाकई उनके लिए मायने रखता था।

Exam आजकल सिर्फ विद्यार्थी की नहीं, पूरे परिवार की और पूरे स्कूल की, teacher की सबकी हो जाती है। लेकिन parents और teachers के support system के बिना अकेला विद्यार्थी, स्थिति अच्छी नहीं है। teacher हो, parents हों, even senior students हों, ये सब मिला करके हम एक टीम बनके, unit बनके समान सोच के साथ, योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ें, तो परीक्षा सरल हो जाती है।

श्रीमान केशव वैष्णव ने मुझे App पर लिखा है, उन्होंने शिकायत की है कि parents ने अपने बच्चों पर अधिक marks मांगने के लिए कभी भी दबाव नहीं बनाना चाहिये। सिर्फ तैयारी करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिये। वो relax रहे, इसकी चिंता करनी चाहिये।

विजय जिंदल लिखते हैं, बच्चों पर उनसे अपनी उम्मीदों का बोझ न डालें। जितना हो सके, उनका हौसला बढ़ायें। विश्वास बनाये रखने में सहायता करें। ये बात सही है। मैं आज parents को अधिक कहना नहीं चाहता हूँ। कृपा करके दबाव मत बनाइये। अगर वो अपने किसी दोस्त से बात कर रहा है, तो रोकिये मत। एक हल्का-फुल्का वातावरण बनाइए, सकारात्मक वातावरण बनाइए। देखिये, आपका बेटा हो या बेटी कितना confidence आ जायेगा। आपको भी वो confidence नज़र आयेगा।

दोस्तो, एक बात निश्चित है, ख़ास करके मैं युवा मित्रों से कहना चाहता हूँ। हम लोगों का जीवन, हमारी पुरानी पीढ़ियों से बहुत बदल चुका है। हर पल नया innovation, नई टेक्नोलॉजी, विज्ञान के नित नए रंग-रूप देखने को मिल रहे हैं और हम सिर्फ अभिभूत हो रहे हैं, ऐसा नहीं है। हम उससे जुड़ने का पसंद करते हैं। हम भी विज्ञान की रफ्तार से आगे बढ़ना चाहते हैं।

मैं ये बात इसलिए कर रहा हूँ, दोस्तो कि आज National Science Day है। National Science Day, देश का विज्ञान महोत्सव हर वर्ष 28 फरवरी हम इस रूप में मनाते हैं। 28 फरवरी, 1928 सर सी.वी. रमन ने अपनी खोज 'रमन इफेक्ट' की घोषणा की थी। यही तो खोज थी, जिसमें उनको नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ और इसलिए देश 28 फरवरी को National Science Day के रूप में मनाता है। जिज्ञासा विज्ञान की जननी है। हर मन में वैज्ञानिक सोच हो, विज्ञान के प्रति आकर्षण हो और हर पीढ़ी को innovation पर बल देना होता है और विज्ञान और टेक्नोलॉजी के बिना innovation संभव नहीं होते हैं। आज National Science Day पर देश में innovation पर बल मिले। ज्ञान, विज्ञान, टेक्नोलॉजी ये सारी बातें हमारी विकास यात्रा के सहज हिस्से बनने चाहिए और इस बार National Science Day का theme है 'Make in India Science and Technology Driven innovations'. सर सी.वी. रमन को मैं नमन करता हूँ और आप सबको विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए आग्रह कर रहा हूँ।

दोस्तो, कभी-कभी सफलताएँ बहुत देर से मिलती हैं और सफलता जब मिलती है, तब दुनिया को देखने का नज़रिया भी बदल जाता है। आप exam में शायद बहुत busy रहे होंगे, तो शायद हो सकता है, बहुत सी ख़बरे आपके मन में register न हुई हों। लेकिन मैं देशवासियो को भी इस बात को दोहराना चाहता हूँ। आपने पिछले दिनों में सुना होगा कि विज्ञान के विश्व में एक बहुत बड़ी और महत्वपूर्ण खोज हुई है। विश्व के वैज्ञानिकों ने परिश्रम किया, पीढ़ियाँ आती गईं, कुछ-न-कुछ करती गईं और करीब-करीब 100 साल के बाद एक सफलता हाथ लगी। 'Gravitational Waves' हमारे वैज्ञानिकों के पुरुषार्थ से, उसे उजागर किया गया, detect किया गया। ये विज्ञान की बहुत दूरगामी सफलता है। ये खोज न केवल पिछली सदी के हमारे महान वैज्ञानिक आइन्स्टाइन की theory को प्रमाणित करती है, बल्कि Physics के लिए महान discovery मानी जाती है। ये पूरी मानव-जाति को पूरे विश्व के काम आने वाली बात है, लेकिन एक भारतीय के नाते हम सब को इस बात की खुशी है कि सारी खोज की प्रक्रिया में हमारे देश के सपूत, हमारे देश के होनहार वैज्ञानिक भी उससे जुड़े हुये थे। उनका भी योगदान है। मैं उन सभी वैज्ञानिकों को आज ह्रदय से बधाई देना चाहता हूँ, अभिनन्दन करना चाहता हूँ। भविष्य में भी इस खोज को आगे बढ़ाने में हमारे वैज्ञानिक प्रयासरत रहेंगे। अन्तर्राष्ट्रीय प्रयासों में भारत भी हिस्सेदार बनेगा और मेरे देशवासियो, पिछले दिनों में एक महत्वपूर्ण निर्णय किया है। इसी खोज में और अधिक सफलता पाने के लिए Laser Interferometer Gravitational-Wave Observatory, short में उसको कहते हैं 'LIGO', भारत में खोलने का सरकार ने निर्णय लिया है। दुनिया में दो स्थान पर इस प्रकार की व्यवस्था है, भारत तीसरा है। भारत के जुड़ने से इस प्रक्रिया को और नई ताक़त मिलेगी, और नई गति मिलेगी। भारत जरूर अपने मर्यादित संसाधनों के बीच भी मानव कल्याण की इस महत्तम वैज्ञानिक खोज की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनेगा। मैं फिर एक बार सभी वैज्ञानिकों को बधाई देता हूँ, शुभकामनाएं देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, मैं एक नंबर लिखवाता हूँ आपको, कल से आप missed call करके इस नंबर से मेरी 'मन की बात' सुन सकते हैं, आपकी अपनी मातृभाषा में भी सुन सकते हैं। missed call करने के लिए नंबर है - 81908-81908. मैं दोबारा कहता हूँ 81908-81908.

दोस्तो, आपकी exam शुरू हो रही है। मुझे भी कल exam देनी है। सवा-सौ करोड़ देशवासी मेरी examination लेने वाले हैं। पता है न, अरे भई, कल बजट है! 29 फरवरी, ये Leap Year होता है। लेकिन हाँ, आपने देखा होगा, मुझे सुनते ही लगा होगा, मैं कितना स्वस्थ हूँ, कितना आत्मविश्वास से भरा हुआ हूँ। बस, कल मेरी exam हो जाए, परसों आपकी शुरू हो जाए। और हम सब सफल हों, तो देश भी सफल होगा।

तो दोस्तो, आपको भी बहुत-बहुत शुभकामनाएं, ढेर सारी शुभकामनाएं। सफलता-विफलता के तनाव से मुक्त हो करके, मुक्त मन से आगे बढ़िए, डटे रहिए। धन्यवाद!

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

गाँधी चिन्तन में शिक्षा और महिला सशक्तीकरण

❑ भगवती प्रसाद गौतम

इधर देश विभाजन के सवालों में उलझा हुआ था और उधर नोआखाली (बंगाल) में महात्मा गाँधी कुछ सहयोगियों के साथ सांप्रदायिक दंगों की आग से जूझ रहे थे। वे पैदल ही गाँव-गाँव घर-घर पहुँचकर परिवारों से मिलते-जुलते, दुःख-दर्द बाँटते, शांति-सद्भाव का माहौल रचते और जिस घर के समीप शाम होती, वहीं रात गुजार लेते। एक बार एक परिवार के आग्रह पर उन्होंने उन्हीं के साथ ठहरना स्वीकार कर लिया। अपने नित्य के लिखत-पढ़त जैसे छोटे-मोटे काम निपटाकर वे स्नान करने को हुए कि मनु बहन परेशान-सी सामने आ खड़ी हुई। बोली-'बापू, पूरी व्यवस्था हो गई है, लेकिन मैल उतारने वाला पत्थर नहीं मिल रहा है।'

'पत्थर नहीं मिल रहा है?' बापू कहने लगे-'इसका मतलब है कि वह उसी जुलाहे के घर में छूट गया है जहाँ हमने पिछली रात गुजारी थी। अभी इसी वक्त उस गाँव की दिशा पकड़ो और पत्थर लेकर आओ।'

अंधेरी रात, वृक्षों-झाड़ियों से भरा जंगली रास्ता और सब तरफ सन्नाटा। फिर भी वह गई। संयोग से घर की मालकिन बाहर ही बैठी हुई मिली। उसने तत्परता से घर में खोज-बीन की पर सब व्यर्थ। फिर बाहर वह जगह देखी, जहाँ घर का कूड़ा-करकट डाला जाता था। आखिर कंदील की रोशनी में वह मिल गया। मनु ने राहत की साँस ली और पत्थर उठाकर उलटे पाँव दौड़ पड़ी। हाँफती-हाँफती पहुँची तो बापू मुस्कराए। फिर ढाँढ़स बँधाते हुए बोले-'मनु, सच तो यह है कि ऐसी छोटी-छोटी भूलों से हम कहीं कोई बड़ा नुकसान न उठा बैठें। तुम्हें पता है, यह पत्थर कितना कीमती है। एक बार मेरे जन्म दिन पर मीरा बहन ने भेंट किया था, तभी से मेरा सखा जैसा हो गया है यह।...और हाँ, एक खास बात, मैं हिन्दुस्तान की तुम जैसी सभी लड़कियों और महिलाओं को निडर-निर्भीक देखना चाहता हूँ, कठिन से कठिन परिस्थितियों से लड़ना सिखाना चाहता हूँ। खुद

मजबूत बनो। देश और समाज के लिए यही बड़ी सेवा होगी।' मनु को समझते देर नहीं लगी और तुरंत बापू के आगे हो गई।

मानवीय जीवन मूल्यों के प्रबल पक्षधर महात्मा जी शुरुआत से ही बालक-बालिकाओं में अंतर्निहित शक्तियों के निखार को ही वास्तविक शिक्षा मानते थे। वे देशवासियों में ऐसे व्यक्तित्व-विकास और चरित्र-निर्माण की ज्योति जगाना चाहते थे, जिसके बूते न केवल सशक्त पुरुष, बल्कि वैसी ही सशक्त महिलाएँ भी पूरे स्वाभिमान के साथ खड़ी हो सकें, मान-सम्मान के साथ जीवन जी सकें और सामाजिक व राष्ट्रीय उत्थान में अपनी उचित भूमिका निभा सकें।

अवधारणा महिला सशक्तीकरण की:- विगत दिनों एक लेख (जनसत्ता) के जरिए 'शिक्षा का अधिकार फोरम' के राष्ट्रीय संयोजक अंबरीश राय के विचार पढ़ने को मिले, जिनके मुताबिक शिक्षा का बुनियादी लक्ष्य एक बेहतरीन समाज की संरचना तैयार करने वाले नागरिकों को तैयार करना है। लेकिन व्यवहार में हम देख रहे हैं कि शिक्षा का लक्ष्य सिर्फ अच्छी से अच्छी नौकरी पाना रह गया है। पढ़-लिखकर बच्चा सबसे पहले एक अच्छा इंसान बने...ऐसी इच्छा शायद ही किसी व्यक्ति या समाज में रह गई है। ऐसे में समझना जरूरी है कि 'बेहतरीन समाज की संरचना करने वाले नागरिक' कौन हो सकते हैं? जाहिर है, लोकतन्त्र में केवल पुरुष ही नहीं हो सकते। अच्छे समाज की संरचना में महिलाओं की भूमिका भी किसी भी तरह कमतर नहीं हो सकती। मगर जरूरत है उन्हें अपनी ताकत को समझने की और भीतर छिपी क्षमताओं को अहसास करने और कराए जाने की। हाँ, जरूरत है उनके सशक्तीकरण की। जरूरत है उन्हें योग्य और समर्थ बनाए जाने की। इसका अभिप्राय यह भी हो सकता है कि महिलाओं को स्वयं के जीवन से संबंधित; उनकी शिक्षा-दीक्षा, उनके भविष्य, उनके कार्य-कलापों, उनके पारिवारिक-सामुदायिक हितों से जुड़े मामलों में स्वविवेक से निर्णय लेने की छूट हो। इस अवधारणा के अनुसार वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन के सर्वांगीण विकास में वे अपनी भूमिका स्वयं तय करें और अपनी क्षमताओं और अधिकारों का यथासमय यथोचित उपयोग करें। यही है वास्तविक महिला सशक्तीकरण।

उत्पीड़न की व्यथा-कथा :- सुर्खियों में रही यह खबर कितनी झकझोर देने वाली है कि पिछले मई (2015) में केरल स्थित एक खेल छात्रावास में सीनियर्स द्वारा किए गए उत्पीड़न से परेशान होकर देश की चार युवा बेटियाँ आत्महत्या करने को मजबूर हो गई और उनमें से एक की तत्काल मृत्यु भी हो गई। पर यहाँ ध्यातव्य है कि स्त्री का उत्पीड़न स्त्री के द्वारा? सवाल यह है कि यदि प्रतिभावान खिलाड़ियों को भी ऐसी मजबूरियों से गुजरना पड़े तो दूर-दराज इलाकों की उन बालिकाओं या महिलाओं के साथ क्या बीतती होगी जो खुद ही तन और मन दोनों से टूटी हुई हैं... निःशक्त हैं। आधी आबादी की इस चिंता के बारे में चिंतन करती हुई जगमति सांगवान लिखती हैं-'उत्पीड़न के इन मसलों पर अव्वल तो बात नहीं होती और अगर कोई बोलता भी है तो टीवी चैनलों या समितियों में वही गिने-चुने चेहरे होते हैं जो भाषा वगैरह पर नियंत्रण रखते हैं। असल में महिलाओं के भी अनुभव सुने जाने चाहिए।'

बीते दौर मैं राष्ट्रीय महिला आयोग द्वारा

करवाए गए व्यापक सर्वेक्षण के परिणाम सकते में डाल देने वाले हैं। आज भी यहाँ 40 फीसदी महिलाएँ ऐसी हैं जो सफर के दौरान, अपनी ही गली-बस्ती में, घर के ही आस-पास, कार्य-क्षेत्रों में अथवा अध्ययन-स्थलों पर किसी न किसी तरह से यौन उत्पीड़न झेल चुकी हैं। उन्ही में से 13 फीसदी ने तो आत्महत्या के प्रयास भी किए। और तो और, 90 फीसदी महिलाएँ कार्यस्थलों के पुरुष सहकर्मियों पर भरोसा नहीं कर पातीं, जबकि 77 फीसदी महिलाएँ भद्दी मजाकों और व्यंग्य-भरे कटाक्षों की वजह से जबरदस्त तनाव से गुजरती हैं, जिसका कार्य क्षमता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पडता है।

कहाँ-कैसी जेंडर संवेदनशीलताः- ऐसे अनेक प्रसंग हमारे इर्द-गिर्द बिखरे पड़े हैं जो पुष्टि करते हैं कि दफ्तरों, विद्यालयों, बैंकों, कंपनी-शाखाओं जैसे अन्यान्य स्थलों पर भी महिलाओं को पुरुष सहकर्मियों के कैसे-कैसे आपत्तिजनक कृत्यों का सामना करना पड़ता है। और वह भी केवल नौकरी की 'कोस्ट' पर। और नौकरी भी किस कीमत पर? घर-परिवार या बच्चों की कीमत पर। इसी संदर्भ में अनुभवी लेखिका मधु अरोड़ा कहती हैं-''असल में पैसे की जरूरत पैसे से ही पूरी होती है और इसके लिए मेहनत करना एक जरूरी शर्त है।... बच्चे भी इस यथार्थ को समझ गए हैं।''

एक आश्चर्यजनक तथ्य यह भी है कि अनगिनत महिलाएँ बाहर ही नहीं, घर में भी समय-असमय पति के ही उत्पीड़न की शिकार होती रही हैं। 'सीएनएन' के एक अध्ययन के अनुसार भारत में अनजान लोगों के द्वारा बलात्कार की शिकार होने वाली महिलाओं की तुलना में 40 गुना ज्यादा महिलाएँ 'मैरिटल रेप' (Marital Rape) की शिकार होती हैं। (परिवार) शब्द कोश की भाषा में उस व्यक्ति द्वारा किया जा रहा 'रेप' यानी बलात्कार, जिससे शादी हुई हो (अर्थात पति), 'मैरिटल रेप' कहलाता है। जब इसमें घरेलू हिंसा भी शामिल हो जाती है तो यह अपराध और भी गंभीर व खतरनाक हो जाता है।

वैसे शैक्षिक व सामाजिक मंचों पर लिंग-संवेदनशीलता (Gender Sensitization) और यौन हिंसा से जुड़ी चर्चाएँ होती हैं, जिसमें स्त्री-पुरुष व्यवहार में समता-समानता यानी बराबरी के बोध और सम्मानजनक संवाद की वकालत की जाती है, किन्तु वास्तविक धरातल पर ये सब बातें कोरी साबित होती हैं। वस्तुतः जहाँ लिंग संवेदनशीलता की अवधारणा में व्यक्ति व समाज के अंतर्संबंधों की समझ विद्यमान है, वहीं उसके सरोकार स्त्री-पुरुष की आपसी भूमिका और मनस्थिति से भी जुड़े हैं। ये सरोकार ही सकारात्मक लिए हुए हों तो महिला सशक्तीकरण को संबल प्रदान कर सकते हैं।

आचरण से कितनी दूर, कितनी पास है शिक्षा :- वस्तुतः व्यक्ति व समाज के ये अंतर्संबंध हमारे असली सोच और शैक्षिक स्तर को आइना दिखाते जैसे ही हैं। ये इस हकीकत से भी परिचित कराते हैं कि इस देश के वासी, इस देश के स्त्री-पुरुष एक-दूसरे के प्रति कितने संवेदनशील हैं। कहते है न-'Half educated are more dangerous than the uneducated.' क्योंकि अर्द्धशिक्षित अथवा कम पढ़े-लिखे लोग शिक्षा को सही अर्थों में आचरण में नहीं उतार पाते। शायद वे भूल रहे हैं राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की चर्चित पुस्तक 'भारत भारती' की ये पंक्तियाँ-

'शिक्षा बिना कोई भी बनता नहीं सत्पात्र है।
शिक्षा बिना कल्याण की आशा दुराशा मात्र है।'

ऐसे में महिला सशक्तीकरण का एक ही रास्ता है और वह है शिक्षा...सार्थक शिक्षा यानी अच्छी तालीम, जिसमें केवल अक्षर-ज्ञान और सूचनाओं के भंडार न हों; बल्कि ज्ञान के साथ-साथ ठोस अनुभव हों, श्रम की पूजा हो, मानवीय सम्बन्धों का सम्मान हो, जीवन मूल्य हों, नैतिकता और धर्म का समावेश हो...संक्षेप में कहें तो इंसानियत की मौजूदगी हो और जो भी हो व्यवहार में हो, सरासर आचरण में हो। राष्ट्रपिता बापू ने अपने पत्र 'हरिजन' (30.3.1934) में लिखा भी था-'मानवता के ग्रंथ से अच्छा और कौन सा ग्रंथ हो सकता है। मेरा पंथ (धर्म) कोई संकीर्ण पंथ नहीं है। उसमें अनिवार्यतः मानवीय भ्रातृत्व का अहसास विद्यमान है।'

शिक्षा एवं साक्षरता का परिदृश्य :- आज हम 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' के अद्भुत अभियान से गुजर रहे हैं, जिसका उद्देश्य है समाज में लिंगानुपात को यानी बालक-बालिकाओं में बढ़ते विपरीत अनुपात को संतुलित करना, साथ ही बालिकाओं में समुचित शिक्षा का प्रसार करना और उन्हें सम्मानजनक जीवन जीने के अवसर उपलब्ध करवाना। इस संकल्प के पीछे सच्चाई यह है कि निरक्षरता और रूढ़ियाँ-अंधविश्वासों के चलते अब भी हमारे देहाती भाई-बहन ही नहीं, शहरी तबके के अनेक लोग भी कन्या के जन्म पर घोषित-अघोषित मातम मनाते देखे जा सकते हैं। इसी का परिणाम है कि कन्या-भ्रूण हत्या, असामयिक गर्भपात अथवा अन्य कारणों से प्रगतिशील और फूलते-फलते राज्यों में भी लड़कों-लड़कियों का अनुपात निरंतर संतुलन खोता जा रहा है। वर्तमान आंकड़े बताते हैं कि भारत का सम्पूर्ण लिंगानुपात 1000/940 है जबकि 1000 पुरुषों पर राजस्थान में महिलाओं की संख्या 909, उत्तर प्रदेश में 898, गुजरात में 878, दिल्ली में 821, हरियाणा में 820, पंजाब में 793 और चंडीगढ़ में 763 मानी गई है। यह स्थिति तो उन राज्यों की है जहाँ जनगणना-2011 के अनुसार कुल आबादी की साक्षरता प्रतिशत अच्छा माना गया है।

उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय जनगणना-1901 के दौर में कुल साक्षरता प्रतिशत (5.35) में जहाँ पुरुषों का प्रतिशत 9.83 था वहीं महिलाओं का मात्र 0.60 रहा था। महिला-साक्षरता का यह स्तर गाँधी जी को जीवन भर सालता रहा। काफी चिंतन-मनन और अनुभवों के बाद उन्होंने 'हरिजन' (18.2.1939) में लिखा कि देश की महिलाओं में निरक्षरता का कारण उनके आलस्य, प्रमाद अथवा जड़त्व में नहीं, बल्कि उनके भीतर की हीन भावना में निहित है और इसके जिम्मेदार हैं पुरुष, जिन्होंने महिलाओं को एक घरेलू वस्तु और रंजन-मनोरंजन का साधन बनाकर कैदी की तरह घर में रख छोड़ा है। बापू की चिंता अब जाकर आंशिक रूप से कम हो पाई, जब जनगणना-2011 के अनुसार देश के कुल साक्षरता प्रतिशत (74.09) में पुरुषों के प्रतिशत 82.14 की तुलना में महिलाओं का 65.46 रहा। इसमें संदेह नहीं कि राष्ट्रीय साक्षरता वृद्धि का स्केल काफी ऊपर उठा है किन्तु शतप्रतिशत लक्ष्य छूने में अब तक वांछित सफलता नहीं मिल सकी है।

शैक्षिक स्तर की दृष्टि से देखें तो प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक से जुड़ीं अनेक भारतीय युवतियों के सोच में अवश्य बदलाव आया है और वे आज बड़े–बड़े पदों पर बैठकर अथवा व्यवसायों, कंपनियों, कार्यालयों का संचालन करती हुई बखूबी अपने दायित्वों का निर्वाह कर रही हैं।

सलाम देश की उन बेटियों को :– दरअसल शिक्षा न धर्म देखती है और न जाति; न गाँव देखती है और न नगर। उसका मार्ग तो सभी के लिए खुला है। बस, जरूरत है तो इच्छा-शक्ति, हौसले और मेहनत की। आजमगढ़ के गाँव कम्हरिया में जन्मी अंजुम आरा अभी–अभी देश की दूसरी मुस्लिम महिला आईपीएस बनी है। इससे पूर्व भी मुंबई की सारा रिकवी ने पहली मुस्लिम आईपीएस होने का गौरव प्राप्त किया।

इसी माह (जुलाई 15) के पहले सप्ताह में एक खबर सुर्खियों में रही। वस्तुतः संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित सिविल सेवा परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली 31 वर्षीय आईआरएस. अधिकारी इरा सिंघल ने अपनी शारीरिक निःशक्तता को सपनों की उड़ान में बाधक नहीं बनने दिया और एक इतिहास ही रच डाला। इस असाधारण उपलब्धि पर रीढ़ से संबंधित बीमारी 'स्कोलियोसिस' से पीड़ित इरा ने कहा–"मैं बहुत खुश हूँ। मुझे विश्वास नहीं हो रहा।....मैं आईएएस. अधिकारी बनना चाहती थी। (अब) शारीरिक रूप से निःशक्त लोगों के लिए ही कुछ करना चाहती हूँ।" उल्लेखनीय है कि इस योग्यता सूची में प्रथम चार स्थानों में ही रेणु राज, निधि गुप्ता और वंदना राव ने भी मुकाम हासिल किया है।

इस आलेख की सृजन प्रक्रिया के चलते अचानक राजस्थान प्रशासनिक सेवा (RAS) की वरीयता सूची में पहले स्थान पर राधिका देवी (डीडवाना) और दूसरे स्थान पर मोनिका बलाड़ा (नोहर) जैसी युवतियों के नाम देखकर भी लगता है कि यदि मन में पक्का इरादा और आत्मविश्वास हो तो क्या नहीं हो सकता। हमारी ऐसी परिश्रमी और होनहार बेटियों की इस गौरवमयी सफलता पर बरबस ही सुधी जनों के सिर झुक जाते हैं।

गाँधी–चिंतन में शिक्षा के सरोकार:– महात्मा गाँधी के शिक्षा–चिंतन में जीवन के विविध पक्ष समाविष्ट हैं। जैसे बौद्धिक विकास, चरित्र सृजन, शिक्षकों की भूमिका, श्रम की महत्ता, हस्तकौशल, स्वच्छता व स्वास्थ्य, शिक्षण माध्यम, राष्ट्रभाषा, महिला एवं विशिष्ट वर्गों की शिक्षा आदि। उनके मतानुसार शिक्षक ही असली पाठ्य पुस्तकें होते हैं। वे अपने छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व–विकास के लिए स्वयं आदर्श रूप में सक्रिय रहें, ताकि बच्चे सहज प्रेरणा प्राप्त कर उनके सद्गुणों को आचरण में उतार सकें। मगर ध्यान रहे कि सीधे–सीधे गलतियाँ उजागर कर देने से शिक्षार्थी हताश हो जाता है, उसका मनोबल टूट जाता है। ऐसे में शिक्षा शास्त्री थॉमस आर्नोल्ड के शब्द याद आते हैं–'Teach me not to criticise but to admire.' तीखी आलोचना और ताड़ना–प्रताड़ना व्यक्ति को कायर व कमजोर बनाती है जबकि प्रशंसा भीतरी ताकत के द्वार खोल देती है।

ऐसे ही अनगिनत अनुभवों से गुजरते हुए बापू ने अपने चिंतन को सतत विस्तार दिया और निष्कर्ष निकाला कि सच्ची शिक्षा अक्षर और अंक ज्ञान मात्र नहीं है। सच्ची शिक्षा तो वही है जो दिल व दिमाग की खिड़कियाँ खोलती है, आत्मा का शुद्धीकरण करती है और हाथ को हुनरमंद बनाती है। इसी आधार पर उन्होंने '3 एच' (Head-Heart-Hand) के सूत्र को प्रतिपादित किया था। उनकी अवधारणा के अनुसार तो असली तालीम व्यक्ति को संयमी बनाती है, उसमें स्वावलंबन का भाव भरती है, पर–पीड़ा के प्रति संवेदना जगाती है और आपसी सहयोग व सामंजस्य के साथ जीवन जीना सिखाती है।

गाँधी–चिंतन में यह मान्यता स्पष्ट है कि जिसके केंद्र में मानवीय और वैश्विक कल्याण से जुड़े पवित्र ध्येय विद्यमान होंगे, वही शिक्षा सार्थक होगी; वही तालीम बेहतरीन साबित होगी। महिला सशक्तीकरण के संदर्भ में ऐसी शैक्षिक चेतना से भरी–पूरी बात और क्या हो सकती है। हाँ, अपनी रुचि–अभिरुचि एवं क्षमता के अनुकूल पहल व परिश्रम के जरिए खुद को भी कोई रास्ता तो बनाना ही होगा।

1–त–8 अंजलि, दादाबाड़ी,
कोटा (राज)–324009
मो. 9461182571

घोषणा–पत्र
(फार्म नं. 4)

शिविरा पत्रिका के स्वामित्व और अन्य विवरण, जो केन्द्रीय धारा 1956 के अन्तर्गत समाचार–पत्र के रजिस्ट्रेशन के लिए प्रकाशित करने आवश्यक हैं।

1.	प्रकाशन संस्थान	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
2.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3.	मुद्रक	:	बी.एल. स्वर्णकार
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
4.	प्रकाशक	:	बी.एल. स्वर्णकार
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
5.	प्रधान सम्पादक	:	बी.एल. स्वर्णकार
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

मैं, बी.एल. स्वर्णकार घोषित करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी में एवं विश्वास के साथ सत्य और वास्तविकता पर आधारित है।

(बी.एल. स्वर्णकार)
आइ.ए.एस
निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,
बीकानेर

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

मातृरूपा : नारी

❑ किशनगिरि गोस्वामी

नारी ईश्वर की अनूठी देन है। वह ममता, स्नेह, वात्सल्य, कोमलता, त्याग और सहनशीलता की बेमिसाल उदाहरण है। वहीं बलिदान, मानसिक दृढ़ता, साहस और समन्वय उसकी विशिष्ट पहचान है। नारी धरती सदृश्य है वह सृष्टि रचती है और दुःख सहती है। सृजन की पीड़ा और दुःख को उससे बेहतर कोई नहीं समझ सकता। यह कैसी विडम्बना है कि जिस नारी की नवरात्रा में देवी के रूप में उपासना होती है, उसी नारी को मानव रूप में संकीर्ण सोच और कुप्रथाओं के कारण अपमान द्वितीय श्रेणी नागरिक समझे जाने के भेदभाव झेलने पड़ते हैं। एक राजस्थानी कवि ने मातृरुपा-नारी की विडम्बनाओं का सांगोपांग मर्मस्पर्शी चित्रण किया है-

माँ, थारो मरणो तो जुग रो मरणो है/ जुड़योड़ी कड़ियाँ टूटती देखण ने, आँख तो ही, निजर नी ही माँ/थारो घर, धणी री आँख मांय बसतो हो, अर वो, फेर लेते मूण्डो, जचती जद/थनै तो, ऊभी लाया हा माँ, आडी काढण नै।

एक बच्चे ने जन्म से कुछ क्षण पूर्व भगवान से पूछा-'मैं इतना छोटा हूँ, खुद कुछ भी नहीं कर सकता, भला धरती पर मैं कैसे रहूँगा?' भगवान बोले-'मेरे पास बहुत सारे फरिश्ते हैं, उन्हीं में से एक मैंने तुम्हारे लिए चुन लिया है। वह तुम्हारा हर तरह से खयाल रखेगा, तुम्हारे लिए मुस्करायेगा, गायेगा। तुम उसका प्रेम महसूस करोगे और खुश रहोगे। तुम्हारा फरिश्ता तुमसे मधुर और प्यारे शब्दों में बात करेगा। वह बड़े धैर्य और सावधानी के साथ तुम्हें बोलना सिखायेगा। वह अपनी जान पर खेल कर भी तुम्हें बुरे लोगों से बचायेगा।' बच्चे ने पूछा-'कृपया उस फरिश्ते का नाम तो बताइए?' भगवान बोले-''फरिश्ते के नाम का कोई महत्त्व नहीं। बस इतना जानो कि तुम उसे 'माँ' कहकर पुकारोगे।''

यह माँ सदा हमारे साथ रहती है। जब कभी तुम अस्वस्थ महसूस करोगे, माँ का प्रेम भरा हाथ तुम्हारे माथे पर महसूस होगा। माँ को तुम अपने आँसुओं के कणों में पाओगे। समय, स्थान और मृत्यु भी माँ को अलग नहीं कर सकती। माँ तो एक ही होती हैं। उसका निरपेक्ष स्नेह हमेशा हमारे साथ रहता है। माँ के ऋण से कभी उऋण नहीं हुआ जा सकता। **'माता का**

हृदय एक स्नेह-पूर्ण निर्झर है, जो सृष्टि के आदि से अनवरत झरता हुआ मानवता का सिंचन कर रहा है' -रस्किन

इस पृथ्वी पर देव तत्व का एकमात्र प्रतीक मातृत्व है। उसके प्रति उच्च कोटि की श्रद्धा रखे बिना दैवत्व की पूजा एवं साधना नहीं हो सकती और इसके अभाव में पुरुष को देवत्व से वंचित रहना पड़ेगा। नारी कामधेनु है। जब हम उसे मातृबुद्धि से देखते हैं, तो वह हमें देवत्व प्रदान करती है, पर जब उसे वासना, सम्पति या दासी की नजर से देखते हैं, तो वह हमारे लिए अभिशाप बन जाती है। इसीलिए हम मातृरूपा-नारी को बारम्बार नमन करते हैं। मानव जीवन की समस्त संभावनाओं के मूल में 'माँ' का असीम प्यार, उसका त्याग, उसकी महान सेवाएँ निहित है। हमारा भी फर्ज बनता है कि इस माँ को माँ बनने की आजादी मिले। एक कवि द्वारा ममतामयी माँ की विरुदावली दृष्टव्य, स्मरणीय और मननीय है-

माँ कबीर की साखी जैसी,
तुलसी की चौपाई सी,
माँ मीरा की पदावली सी,
माँ है ललित रुबाई सी!
माँ वेदों की मूल चेतना,
माँ गीता की वाणी सी,
माँ त्रिपिटक के सिद्ध सूक्त सी,
लोकोत्तर कल्याणी सी।
माँ द्वारे की तुलसी जैसी,
माँ बरगद की छाया सी,
माँ कविता की सहज वेदना,
महाकाव्य की काया सी।

जब भी उठे हाथ, दुआ के लिए ही उठे, क्योंकि वह ममता की मूरत है, क्योंकि वह साक्षात ममता है, क्योंकि वह माँ है। माँ की खुशी तो इसमें है कि संतान सदा सुखी रहे। बस संतान की आँखों में पानी होना चाहिए। माँ तो संतान की आँखों में उतरे थोड़े से जल में डुबकी लगा लेती है। दुनिया भले ही बदल जाय, माँ नहीं बदलती। उसकी ममता दस बच्चों में बँट कर भी खण्डित नहीं होती। इस्लाम धर्म के प्रवर्तक पैगम्बर मोहम्मद साहब ने भी कहा है-'माँ वो हस्ती है, जिसके कदमों में जन्नत है।' विश्व विख्यात अंग्रेज लेखक एच.जी. वेल्स को उनके मित्र ने पूछा-'आप स्वयं मकान की तीसरी मंजिल के एक साधारण से कमरे में रहते हैं, जबकि निचली मंजिल पर आलीशान कमरे हैं। उन कमरों में नौकर रहते हैं।' जबकि आम तौर पर नौकरों को सबसे खराब कमरा दिया जाता है? 'मित्र ने पूछा तो वेल्स ने उत्तर दिया'-क्योंकि मेरी माँ लंदन के एक घर में नौकरानी थी। यह किसी भारतीय की नहीं बल्कि एक अंग्रेज की अपनी माँ के प्रति श्रद्धा का अनुपम उदाहरण है।

'बरसों से जन्नत की तलाश में निकला था गालिब, लेकिन थक के आज फिर माँ के कदमों में आ गिरा।'

आज के दौर में नारी निरन्तर प्रगति कर रही है। आत्मविश्वास से लबरेज कदम रखते हुए वह देश-विदेश के परिदृश्य में सफलता के नित नए कीर्तिमान बना रही है। ऐसी विलक्षण नारी शक्ति को हम नमन करते हैं। आइए, संकल्प करें कि प्रत्येक नारी को उसकी क्षमतानुसार आगे बढ़ने में हम भरपूर सहयोग करेंगे ताकि वह अपने साथ अपने देश का नाम भी रोशन कर सके और बना सके अपनी नई पहचान। जरूरत है, हमें अपनी सोच बदलने की-

नजरिए को सुधारें, तो नजारे बदल जायेंगे,
सोच को सुधारें, तो सितारे बदल जायेंगे।
तुम्हें जरूरत नहीं है, कश्ती को बदलने की यारों,
कश्ती के रुख को बदलो, किनारे बदल जायेंगे।

रामगढ़, जैसलमेर (राज.)

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

महिला शिक्षा-समाज की आवश्यकता

❐ अर्चना गौड़

शिक्षा सतत, शाश्वत चलती प्रक्रिया है जो निरक्षर को शिक्षित करती है। इस प्रक्रिया में बालक-बालिका, महिला-पुरुष सभी को शिक्षा ग्रहण करना आज के परिप्रेक्ष्य में आवश्यक है। महिला शिक्षा आधुनिक समय की एक महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य जरूरत है। एक सभ्य और सुसंस्कृत समाज के लिए नारी शिक्षा महत्वपूर्ण आधार होती है। महिला शिक्षा के बारे में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था कि 'एक बालक को शिक्षित करने से एक व्यक्ति शिक्षित होता है जबकि एक बालिका को शिक्षित करने से पूरा परिवार शिक्षित होता है।' हमारा समाज एक पुरुष प्रधान समाज है और कई अवसरों पर पुरुषों को ही महिला सशक्तीकरण की बातें करते हुए देखा जाता है। लेकिन वे यह कैसे भूल जाते हैं कि जो व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को जन्म देने का सामर्थ्य रखता है, उससे ज्यादा शक्तिशाली और कौन हो सकता है? परन्तु यही समाज इन देवी रूपी महिलाओं के बारे में कितना गलत सोचता है, उन पर अत्याचार करता है, उनको कमजोर समझकर उनका शोषण करता है। लेकिन सच्चाई यही है-

कोमल है कमजोर नहीं तू,
शक्ति का नाम ही नारी है।
सबको जीवन देने वाली,
मौत भी तुझसे हारी है।

केन्द्र एवं राज्य सरकार दोनों ही बालिका शिक्षा के प्रति समर्पित है। एक सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज के निर्माण के लक्ष्य को लेकर आज राज्य सरकार बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से लड़कियों को निःशुल्क शिक्षा, निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें, विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियाँ तथा प्रतिभाशाली छात्राओं को साइकिल एवं स्कूटी तथा ऐसी ही अन्य प्रकार की सुविधाएँ दे रही है जिससे बालिका शिक्षा को बढ़ावा मिल सके। लेकिन समाज के कुछ अनपढ़ एवं दकियानूसी माँ-बाप बेटियों को पढ़ाने तथा उनके आगे बढ़ने के प्रति संकीर्ण मानसिकता रखते हैं।

लड़कियों का जन्म अपवाद स्वरूप छोड़कर अपशगुन सा माना जाता है। बेटे के जन्म पर थाली बजाई जाती है, खुशियाँ मनाई जाती हैं। और यदि बेटी का जन्म होता है तब मातम मनाया जाता है। ये लोग कैसे भूल जाते हैं कि इस बेटी को जन्म देने वाली भी तो एक बेटी ही है। बेटे को वंश का वाहक समझा जाता है, लेकिन यदि बेटी ही नहीं होगी तो वंश का विकास वहीं अवरुद्ध हो जाएगा। इंदिरा गाँधी अपने पिता पं. जवाहर लाल नेहरु की इकलौती पुत्री थी। इसी बेटी ने उच्च शिक्षा एवं सद्संस्कारों से हमारे देश का नाम रोशन किया। एक दिन यही बेटी हमारे देश की वर्चस्ववान एवं दबंग प्रधानमंत्री बनी। ऐसे में बेटियाँ आपको-आपके वंश को पहचान दे सकती है और वे ही अपने व्यवहार से आपको समाज के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा सकती है।

महिलाओं का शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ा होना राज्य और समाज के लिए घातक है। नारी शिक्षा का एक लाभ यह है कि जहाँ वह आत्मनिर्भर बनती है, वहीं पारिवारिक, सामाजिक अज्ञानता, अशिक्षा का स्वतः ही विघटन होता है। महिला शिक्षित होने से अनेक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। एक महिला शिक्षित होने पर अपने परिवार और समाज को सुशिक्षित कर सकती है। एक नारी जब बाहरी दुनिया के सम्पर्क में आती है तो घर के आर्थिक ढाँचे को सुदृढ़ करती है। एक प्रकार के आत्मविश्वास के कारण परिवार को नई चेतना, नई ऊर्जा अर्जित होती हे। इस आत्मविश्वास एवं आत्मबल से समाज को भी बल मिलता है। अतः कह सकते हैं कि-

'पढ़ी लिखी लड़की, रोशनी है घर की।'

महिलाओं के अधिकाधिक शिक्षित होने से न केवल जनसंख्या के विस्तार बल्कि गरीबी, स्वास्थ्य से संबंधित समस्या, बाल विवाह, दहेज प्रथा, अंधविश्वासों तथा अनेक कुप्रथाओं का निराकरण महिला शिक्षा के द्वारा दूर किया जा सकता है। अतः इन बातों को समझते हुए हम सभी लोगों को यह संकल्प लेना होगा कि आज के बाद हम सभी बालिकाओं को शिक्षित करेंगे। एक शिक्षित नारी ही एक सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज का निर्माण कर सकती है।

'बालिका शिक्षा का ध्येय है, बालिकाओं का सर्वांगीण विकास। शिक्षा एक ओर जहाँ सामाजिक, आर्थिक और वैयक्तिक शैक्षिक विकास का सतत प्रवाह है। वही मनुष्य को सम्मान से जीने और आत्मनिर्भर होने की प्रेरणा देती है।'-स्वामी विवेकानंद

व्याख्याता, ओम शिव महिला शिक्षक
प्रशिक्षण महाविद्यालय, दौसा (राज.)
मो. 8764006480

स्वच्छता अभियान गीत

❐ राम कुमार वर्मा

गन्दगी दूर भगायेंगे बदलेंगे जमाना।
स्वच्छता को अपनाएंगे बदलेंगे जमाना।।

घर-घर में हम शौचालय बनाये-बनाये
साफ जल पीये और रोज नहाये-नहाये
साबुन से हाथ धुलायेंगे बदलेंगे जमाना
गन्दगी दूर भगायेंगे बदलेंगे जमाना

मानव मल और मृत मवेशी-मवेशी
कूड़ा कचरा माल विदेशी-विदेशी
खड्डा खोद दबाएंगे बदलेंगे जमाना
गन्दगी को दूर भगायेंगे बदलेंगे जमाना।

फल और सब्जी धोकर खाये-खायें
सुबह उठकर हम घूमन जायें
योग से रोग भगायेंगे बदलेंगे जमाना।
गन्दगी दूर भगायेंगे बदलेंगे जमाना।

पर्यावरण प्रदूषण होने नहीं देंगे-देंगे
धरती का श्रृंगार हम खोने नहीं देंगे-देंगे
एक-एक पेड़ लगायेंगे बदलेंगे जमाना

वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. नोसर, बाड़मेर

ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं महिला स्वावलंबन

❐ डॉ. मनीष कुमार सैनी

'भारत की 83.3 करोड़ जनसंख्या गाँवों में रहती है तथा 37.7 करोड़ जनसंख्या शहरों में रहती है। गांवों की जनसंख्या में 40.50 करोड़ महिलाएँ तथा 42.79 करोड़ पुरुष हैं।' ग्रामीण अर्थव्यवस्था हमारे देश की अर्थव्यवस्था की धुरी कही जा सकती है, क्योंकि हमारे देश की अस्सी प्रतिशत आबादी आज भी गाँवों में निवास करती है। यही कारण है कि भारत को गाँवों का देश कहा जाता है और गाँवों में मुख्यतः कृषि और पशुपालन व्यवसाय से ही ग्रामीण लोग आजीविकोपार्जन करते हैं, अतः हमारी अर्थव्यवस्था को कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था के रूप में भी देखा जाता है। इतना सब-कुछ होते हुए भी वर्तमान में वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण यहाँ नगरों में बड़े-बड़े कल कारखाने लगाए जा रहे हैं और वहाँ मानव-श्रम की जगह मशीनों के माध्यम से वस्तुओं का निर्माण किया जाता है और पूंजीवादी अर्थतंत्र विकसित किया जा रहा है, फिर भी यहाँ की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। देश की आधी आबादी मानी जाने वाली महिलाएँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को निरंतर गतिमान बनाए हुए हैं। शहरी आबादी में जहाँ नौकरी-पेशा महिलाएँ दस से पाँच बजे तक ऑफिसों में काम करती हैं और फिर घर की देखभाल करती हैं, उसे कहीं अधिक गाँवों की महिलाएँ मुँह-अंधेरे उठकर घर में झाड़ू-बुहारी, चूल्हा-चाकी आदि का काम निपटाकर खेतों में पहुँचती है और दिन-भर पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर खेत में कार्य करती है और संध्या गोधूलि-वेला में घर पहुँचकर घर के सभी सदस्यों के लिए भोजन बनाती है। सही कहा जाए, तो तथ्य यह सामने आता है कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाएँ अधिक समय तक बैल की तरह जुटी रहकर कार्य करती हैं।

'ग्रामीण अर्थव्यवस्था में वैसे तो महिलाओं का योगदान आदिकाल से ही रहा है, पर आजादी-पूर्व महात्मा गाँधी ने ग्रामीणों के स्वावलम्बन की दृष्टि से लघु एवं कुटीर उद्योगों की स्थापना पर बहुत बल दिया। उन्होंने देश के अर्थतंत्र की रीढ़ के रूप में चरखा आंदोलन की शुरूआत की। गाँधी जी न केवल ग्रामीण स्त्री-पुरुषों को चरखा कातने की प्रेरणा देते थे, अपितु स्वयं भी चरखा कातते थे। कस्तूरबा और आश्रम में रहने वाले सभी लोगों को चरखा कातना होता था।' गाँधीजी के कारण ही देश में खादी-ग्रामोद्योग संस्थाओं की स्थापना हुई और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को एक मजबूत आधार मिला। सूत कातने का काम ग्रामीण महिलाएँ बहुत ही मनोयोगपूर्वक करती थीं। इससे स्वदेशी वस्त्र-निर्माण के क्षेत्र में हम आत्म-निर्भर होने लगे और गाँवों में प्रतिव्यक्ति आय में भी बढ़ोतरी हुई। खास तौर से महिला स्वावलंबन की दृष्टि से चरखा क्रांतिकारी सिद्ध हुआ और तकली एवं चरखे को लोग आशाभरी नजरों से देखने लगे। महिलाओं का समाज में मान-सम्मान होने लगा और उनके चेहरों पर परम संतुष्टि के भाव दिखाई देने लगे।

गाँधीजी कहते थे कि हमारे समाज में अगर कोई सबसे हताश हुआ है, तो वो स्त्रियाँ ही हैं और स्त्रियाँ हताश हुई हैं, इसी वजह से हमारा पतन भी हुआ है। स्त्री-पुरुष के बीच जो फर्क प्रकृति के चलते हैं और जिसे खुली आँखों से देखा जा सकता है, उसके अलावा मैं किसी भी किस्म के फर्क को नहीं मानता। गाँधीजी की सोच सही थी। देश की आधी आबादी की हताशा अधःपतन की ओर नहीं ले जाएगी, तो क्या प्रगति-पथ की ओर अग्रसर करेगी? इस दृष्टि से कामकाजी महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन ने न केवल उन्हें स्वाभिमानपूर्वक जीवन की राह दिखाई, अपितु ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सबल बनाने में भी उनका श्रम सार्थक सिद्ध हुआ।

कताई-बुनाई के कार्य ने हमारे गाँवों को आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान करनी शुरू की थी, पर नेहरु जी की औद्योगिक नीति के कारण यहाँ कपड़ा मिलों का बोलबाला होने लगा और हथकरघा उद्योग हतोत्साहित होने लगा। ग्रामीण महिलाएँ खेती के कार्य के अतिरिक्त कताई-बुनाई करती रही हैं, लेकिन धीरे-धीरे उनका यह उद्यम लगभग मंद ही पड़ गया है।

गाँवों में कुम्हारों की स्त्रियों को खदानों से मिट्टी लाने, घड़े पकाने के लिए ईंधन लाने और फिर चाक चलाने का कार्य करते भी मैंने देखा है। मुख्यतः खेतों में हल जोतने और चाक पर बर्तन बनाने का कार्य पुरुष वर्ग ही करता है, लेकिन जहाँ जरूरत होती है, वहाँ स्त्रियाँ भी उक्त कार्य बड़ी कुशलतापूर्वक करती देखी गई हैं। कहीं तो कुम्हारों की लड़कियाँ और औरतें कच्चे बर्तनों पर हिरमिच से माँडने बनाती हैं और बर्तन पकने के बाद गली-मुहल्लों में बेचने का कार्य करती हैं। गाड़िया लुहारों की औरतें भी फेरी लगाकर लोहे का सामान बेचने का काम करती हैं और अन्य समाज की महिलाएँ भी फेरी लगाकर गली-मुहल्लों में कपड़े-साड़ियाँ आदि बेचने का कार्य करके न केवल स्वयं की आजीविका कमाती हैं, अपितु आर्थिक स्वावलंबन की दृष्टि से प्रेरणा भी देती हैं।

'गाँवों में जहाँ स्त्रियाँ कृषि-कार्यों में हल जोतने से लेकर खलिहानों तक काम करती हैं, वे ही स्त्रियों खेती के कामों से निवृत्त होने के बाद अन्य कार्यों में लग जाती हैं। शहरों और कस्बों की स्त्रियाँ भी इन्हीं स्त्रियों की भाँति अनेक प्रकार के कुटरी उद्योगों से जुड़ जाती हैं। देश के कुछ भागों में बीड़ियाँ बनाकर रोजगार चलाने वाली स्त्रियों की संख्या भी बहुत बड़ी है। बीड़ी बनाने वालों में 90 प्रतिशत स्त्रियाँ हैं। लेकिन औद्योगिकीकरण के चलते अब बीड़ी उद्योग में भी बेरोजगारी पनपने लगी है। महिला कामगारों का स्थान मशीनें ले रही हैं। बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियों में तंबाकू के पत्ते काटने से लेकर उन्हें सुखाने तक की सारी क्रियाएँ अब मशीनें करने लगी हैं जो और बीड़ी उद्योग से जुड़ी महिलाएँ दूसरे विकल्प तलाशने लगी हैं। कहने का मतलब यही है कि देश की आधी आबादी हमारे आर्थिक स्वावलम्बन हेतु हर स्तर पर किसी न किसी रूप में जुड़ी हुई हैं और देश के विकास में भरपूर योगदान दे रही हैं।

हमारे देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिला स्वावलम्बन पर दृष्टिपात करें, तो मशीनीकरण के बढ़ते प्रभाव के कारण ये महिलाएँ बार-बार हताश होती देखी गई हैं, पर इन्होंने हार नहीं मानी है। उदाहरण के लिए जो

महिलाएँ हथकरघा जैसे कुटीर उद्योगों से जुड़ी हुईं थीं, उन्हें कपड़ा मिलों के बढ़ते प्रभाव के कारण अन्य विकल्प तलाशने पड़े और जो महिलाएँ बाँस की टोकरियाँ बुनने और उन्हें बाजार में बेचने का कार्य करती थीं, उन्हें अब आसानी से बाँस उपलब्ध नहीं हो पाता, क्योंकि सरकार ने बाँसों पर आधिपत्य कर कागज मिलों को बेचना शुरू कर दिया है और ऐसी महिलाएँ अपने पारंपरिक रोजगार को लुटते हुए देख रही हैं। इसी प्रकार छींपों की स्त्रियाँ जो छपाई का कार्य करती थीं, स्क्रीन प्रिंटिंग प्रेस लग जाने के कारण अब उनकी ओर कोई नहीं देखता। कल-कारखानों में स्त्रियों के बजाय पुरुषों को ही अधिक महत्त्व दिया जाता है, अतः ऐसी स्त्रियाँ भी स्वावलम्बन के अन्य विकल्प तलाश रही हैं। इसी भाँति एक वनवासी आदिवासी स्त्री जंगल से गोंद, साल के बीज आदि बीन लाती थी, लेकिन अब वन अधिकारी उन्हें जंगलों से खदेड़ रहे हैं। जंगल में उन्हें प्रवेश करने से रोका जा रहा है। ऐसी हताश स्त्रियाँ सरकारी राहत कार्यों की मुखापेक्षी होने लगी हैं और सरकारी राहत कार्यों में मजदूरी करके ही कुछ राहत पा रही हैं।

हमारे देश में संगठित क्षेत्र में मात्र 6 प्रतिशत महिलाएँ ही रोजगार में लगी हुई हैं, शेष 94 प्रतिशत महिलाएँ असंगठित रूप से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गतिमान बनाते हुए स्वावलम्बन के पथ पर अग्रसर हो रही हैं। यद्यपि हमारे अर्थशास्त्रियों ने ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत इन महिला-श्रमिकों को 'असंगठित', 'इन्फार्मल', 'मार्जिनल', 'रेसिड्यूअल', 'पेरीफिसल', 'अनरेग्युलेटेड', आदि नामों से संबोधित करके इनके प्रति लघुता, हेयता एवं क्षुद्रता के भाव व्यक्त किए हैं, पर वास्तव में आधी आबादी का यह विशाल श्रमिक दल हमारे अर्थतंत्र के केन्द्र में है और काफी बड़ा योगदान दे रहा है। वस्तुतः इन्हें 'स्वावलम्बी, स्वाश्रयी, सेल्फ एंप्लाइड' जैसे संबोधन से पुकारा जाना चाहिए।

महिला स्वावलम्बन की दृष्टि से फेरीवालियाँ, टोकरी एवं झाड़ू बेचने, फल, सब्जी, मछली, कपड़े, जूते, चप्पलें एवं अन्य सामान बेचने वाली महिलाएँ और मोमबत्ती, अगरबत्ती आदि बनाकर बेचने वाली महिलाएँ, धोबी, लखारी, कुम्हारी, लुहारी, रंगरेजी आदि के साथ-साथ मकानों की चुनाई और सड़क-निर्माण आदि कार्यों में भी महिला श्रमिकों का श्रम सराहनीय है। वर्तमान में गाँवों में अनेक एन.जी.ओ. किशोरी-बालिकाओं और प्रौढ़ स्त्री-पुरुषों के आर्थिक स्वावलंबन की दृष्टि से अनेक कल्याणकारी योजनाएँ चला रहे हैं। इसके कार्यकर्ता गाँवों में बालिका-शिक्षा, प्रौढ़-शिक्षा आदि के साथ-साथ रोजगार मुहैया कराने की दृष्टि से गाँवों में पापड़-उद्योग हेतु प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर स्त्रियों को बड़ी-पापड़ बनाने हेतु प्रेरित कर रहे हैं। आज गाँवों की महिलाओं द्वारा बनाए गए बड़ी-पापड़ पूरे राज्य एवं राज्य से बाहर भी भेजे जाते हैं। मुंबई जैसे बड़े महानगर में 'लिज्जत पापड़' का उत्पादन करने वाली संस्था भी महिलाओं द्वारा ही गठित की गई थी, जिसका आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नाम है। ठीक वैसे ही गाँवों में 'महिला स्वयं सहायता समितियों' द्वारा महिलाएँ संगठित होकर रोजगार से जुड़ रही हैं और उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती जा रही हैं। सार रूप में कहा जा सकता है कि भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था और महिला स्वावलम्बन में अन्योन्याश्रित संबंध है, जिसे देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहा जा सकता है।

प्राध्यापक वाणिज्य
विवेक नगर, अनाथालय के पीछे, बीकानेर
मो. 9414506551

इस माह का गीत

तमसो मा ज्योतिर्गमय

जगे राष्ट्र नारी का गौरव इस व्रत का ले निर्णय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्माऽमृतं गमय।।ध्रु.।।

भौतिक सुख ललचा पायेंगे क्या अपने इस तन को,
वैभव की क्या क्षुद्र भावना बांध सकेगी मन को,
त्याग तपस्या से आपूरित हों हम सबके आलय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्माऽमृतं गमय ।।1।।

बलिदानों की ओर बढ़ाये पति, पुत्रों, भाई को,
पाट सकें पथ में पुनरागत हर दुर्जय खाई को,
रुकें नहीं ये चरण हमारे बढ़ी चलें हम निर्भय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्माऽमृतं गमय।।2।।

एक लक्ष्य हो एक ध्येय हो एक कदम एक पन्था,
एक कार्य हो एकनिष्ठ हो एक पाठ एक सन्था,
इस अनेक में सभी एक हों अपना हो यह अनुनय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्माऽमृतं गमय।।3।।

जाग उठो दुर्गा कल्याणी सरस्वती श्रुति गीता,
लोक-साधिका लक्ष्मी माया सती साध्वी सीता,
तब यह अपना देश बनेगा अमर पुरी सा निश्चय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योऽमृतं गमय।।4।।

वीर जननी हों माता अपनी वीर वधू हों नारी
वीर भगिनी हों बहिनें कन्या वीर पुत्रियाँ सारी।
वीर प्रसविनी वीर मानिनी भारतमाता की जय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्माऽमृतं गमय।।5।।

संकलनकर्ता-**रामकिशोर**
व्याख्याता रा. सादुल उ.मा.वि., बीकानेर
मो. 9414604631

शैक्षिक चिन्तन

संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ: अर्थपूर्ण सीखने का ताना-बाना

❒ योगेन्द्र भूषण

आमतौर पर यह अनुभव किया गया है कि शैक्षणिक उद्देश्यों की टैक्सॉनमीज् के किसी फ्रेमवर्क को ठीक ढंग से समझने और उसे कक्षा-कक्षीय स्थितियों में काम में लेने के लिए, शिक्षकों के साथ विविध उद्धरणों के साथ पर्याप्त विचार विमर्श करने की आवश्यकता होती है। यही अनुभव ब्लूम् की मूल एवं संशोधित टैक्सॉनमि के संदर्भ में भी सच है। शिक्षक को अपने शैक्षिक उद्देश्यों, शैक्षणिक गतिविधियों और आकलन प्रक्रियाओं को सार्थक रूप से समझने और व्यवहार करने में टैक्सॉनमि फ्रेमवर्क किस प्रकार से उपयोगी है? इस चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए संशोधित ब्लूम्स टैक्सॉनमि (एन्डरसन एवं क्रथवॉल) के कुछ चुने अंशों का भावानुवाद यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

सामान्यत: स्कूली शिक्षण एवं आकलन व्यवस्था में एक ही प्रकार की संज्ञानात्मक प्रक्रिया पर अधिक जोर दिया जाता है और वह प्रक्रिया है याद करना। स्कूलों में संज्ञान-प्रक्रियाओं की अन्य उच्च श्रेणियों पर बहुत कम काम होता है। इस प्रसंग में संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं की संपूर्ण शृंखला एवं शिक्षा में उसके महत्व पर विस्तार से बात करना मददगार होगा।

शिक्षा प्रक्रिया के दो अत्यधिक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य हैं; पहला; ज्ञान-संधारण (Retention) को सुदृढ़ करना और दूसरा; ज्ञान-अन्तरण (Transfer) को बढ़ावा देना। शिक्षण के समय प्रस्तुत की गई सामग्री को भविष्य में लगभग वैसे ही याद रख पाने की योग्यता को स्मृति में संधारण करना कहा जाता है। जबकि सीखे हुए को नई समस्याओं के समाधान, नए प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने या नई विषयवस्तु को सीखने में प्रयोग कर पाने को अंतरण करने की योग्यता कहा जाता है। सीखे हुए ज्ञान/कौशलों का अन्तरण कर पाना अर्थपूर्ण अधिगम (meaningful learning) का संकेत होता है। संधारण में, 'जो सीखा गया है उसे याद रख पाना' निहित होता है। जबकि अन्तरण की क्षमता में, न केवल याद रख पाना अपितु साथ ही उसका अर्थ निर्मित करना और उसका प्रयोग करने की योग्यता निहित होती है। एक तरह से जहाँ पहली प्रक्रिया का फोकस भूतकाल पर रहता है वहीं दूसरी प्रक्रिया का ज़ोर भविष्य में प्रयोग पर होता है।

संधारण के लक्ष्य से शिक्षण-उद्देश्यों को बनाना काफी आसान होता है। इसके विपरीत अंतरण के लक्ष्य के प्रोत्साहन हेतु शिक्षण एवं आकलन उद्देश्यों को निर्मित करना कठिन होता है। अंतरण क्षमता के लक्ष्य को बढ़ाने वाले शैक्षिक उद्देश्य क्या हैं? इसे स्पष्ट करना संशोधित ब्लूम्स टैक्सॉनमि का मुख्य प्रयोजन है। इस टैक्सॉनमि में संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को 6 श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। इनमें से पहली श्रेणी संधारण पर जोर देती है जबकि आगे की पाँच श्रेणियाँ (समझना, प्रयोग करना, विश्लेषण करना, मूल्यांकन करना और सृजन करना) संधारण के साथ-साथ, बढ़ते हुए, अन्तरण करने की क्षमता को दृढ़ करने पर जोर देती हैं। संशोधित टैक्सॉनमि में उक्त 6 श्रेणियों में 19 संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को व्यवस्थित किया गया है। ये 19 विशिष्ट संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ अपने आप में अनन्य (exclusive) हैं। लेकिन ये सब मिलकर छ: श्रेणियों के विस्तार एवं सीमा को बनाती हैं।

अर्थपूर्ण सीखने पर जोर देना लर्निंग को ज्ञान-निर्माण (knowledge construction) के रूप में देखने की दृष्टि से सुसंगत है। इसमें विद्यार्थी अपने अनुभव से अर्थ निर्मित करने का प्रयास करता है। कन्स्ट्रक्टिविस्ट लर्निंग में विद्यार्थी सक्रिय रूप में संज्ञानात्मक क्रियाओं में संलग्न होता है; जैसे कि-i) सुसंगत सूचनाओं पर ध्यान देना, ii) सूचनाओं को दिमागी तौर पर एक सुसंबद्ध निरूपण (Representation) में व्यवस्थित करना तथा iii) आगत-सूचना को मौजूदा-सूचना के साथ संबद्ध करना आदि। इसके विपरीत रोट-लर्निंग (रटना), सीखने को **ज्ञान अर्जन** (Knowledge Acquisition) के रूप में देखने की दृष्टि से सुसंगत होता है। इसमें विद्यार्थी अपनी स्मृति में नई सूचनाएँ बढ़ाता जाता है।

निर्माणात्मक लर्निंग (अर्थपूर्ण सीखना) शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य माना जाता है। इसके लिए आवश्यक होता है कि शिक्षण केवल तथ्यात्मक सूचनाओं की साधारण प्रस्तुति से आगे बढ़े। आकलन टास्क विद्यार्थियों से सिर्फ तथ्यात्मक ज्ञान को पहचानने एवं स्मरण करने से अधिक की माँग करे। आगे दी जा रही संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ वे हैं जो कन्स्ट्रक्टिविस्ट लर्निंग में प्रयुक्त होती हैं। अर्थात् ये प्रक्रियाएँ वे तरीके हैं जिनके द्वारा विद्यार्थी सक्रिय रूप से अर्थ निर्माण की प्रक्रिया में संलग्न हो सकते हैं। आइए आगे इन संज्ञानात्मक-प्रक्रियाओं और उनकी श्रेणियों पर अधिक विस्तार से बात करें।

संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ

(वैकल्पिक टर्मस् के साथ)

याद रखना Remember

1. पहचानना-Recognizing (शिनाख्त करना-Identying)
2. अनुस्मरण करना- Recalling (पुनः प्राप्त करना-Retrieving)

जब शिक्षण-उद्देश्य, प्रस्तुत की गई सामग्री को लगभग वैसे ही रूप में (जैसी वह सिखाई गई है) स्मृति में धारण करने को प्रोत्साहित करना होता है तब संबंधित प्रक्रिया श्रेणी है- **याद रखना**। याद रखने में सम्बन्धित ज्ञान को दीर्घ-स्मृति (longterm memory) से ढूँढ़ निकालना (retriving) निहित होता है। इसमें दो संज्ञान-प्रक्रियाएँ सम्मिलित होती हैं- **पहचानना** (Recognising) एवं **अनुस्मरण करना** (Recalling)। यहाँ सम्बन्धित ज्ञान तथ्यात्मक, अवधारणात्मक, क्रियाविधिक अथवा अभिसंज्ञानात्मक या इनका कोई योग रूप हो सकता है। ज्ञान को याद कर पाना अर्थपूर्ण सीखने एवं समस्या समाधान के लिए

आवश्यक है। क्योंकि याद ज्ञान ही आगे के जटिल टास्क में प्रयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ- कक्षा स्तर के अंग्रेजी शब्दों की स्पैलिंग याद होना कक्षा स्तर के अंग्रेजी लेखन की निपुणता प्राप्त करने के लिए जरूरी होगा। जहाँ शिक्षक केवल रटने पर केन्द्रित करते हैं वहाँ शिक्षण एवं आकलन का जोर ज्ञान के तत्वों, टुकड़ों को याद करने पर ही होता है। जब शिक्षक अर्थपूर्ण सीखने का लक्ष्य लेकर चलते हैं तब ज्ञान को याद रखना, 'नए ज्ञान' के निर्माण एवं नई समस्याओं के समाधान के उच्चतर कार्य से जोड़ा जाता है। **'याद रखने'** की श्रेणी में 2 प्रक्रियाओं को रखा जाता है; पहचानना एवं अनुस्मरण करना।

इस सरलतम संज्ञान प्रक्रिया में लर्निंग का आकलन करने के लिए विद्यार्थियों को सामग्री की (सीखने के समय जैसी समान परिस्थितियों में) पहचान करने या उसका अनुस्मरण करने के टास्क दिए जाते हैं।

जैसे; किसी विद्यार्थी ने 20 अंग्रेजी शब्द सीखे हैं, तब याद रखने से सम्बन्धित जाँच में विद्यार्थी को अंग्रेजी शब्दों की एक सूची के शब्दों को हिन्दी के शब्दों की दूसरी सूची से मिलान करने का कार्य दिया जा सकता है (पहचानना) अथवा हिन्दी शब्दों की एक सूची के प्रत्येक शब्द के आगे उसके लिए अंग्रेजी शब्द लिखने (अनुस्मरण करने) का कार्य दिया जा सकता है।

(अ) पहचानना (Recognizing) : पहचानने में, प्रस्तुत सूचना से तुलना करने के लिए संबद्ध ज्ञान को अपनी दीर्घकालीन स्मृति में से निकालना निहित है। पहचानने की प्रक्रिया में विद्यार्थी सूचना के एक टुकड़े को अपनी स्मृति में ढूँढ़ता है, जो प्रस्तुत सूचना के समान हो। पहचानने के लिए वैकल्पिक टर्म है; शिनाख्त करना (Identifying)।

- **शैक्षिक उद्देश्य एवं सम्बद्ध आकलन के नमूने**

सामाजिक अध्ययन विषय में एक शैक्षिक उद्देश्य यह हो सकता है कि विद्यार्थी भारत के इतिहास की मुख्य घटनाओं की तिथियों को पहचान सकते हैं। यहाँ संबद्ध जाँच आइटम होगा **सत्य या असत्य**। यथा; भारत 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ। हाँ या ना? साहित्य अध्ययन में भारतीय साहित्य के मुख्य लेखकों को पहचानना एक उद्देश्य हो सकता है। इससे संबद्ध आकलन एक **मिलान टैस्ट** हो सकता है। जिसमें दस लेखकों और दस साहित्यिक कृतियों के नाम दिए गए हैं और उनका परस्पर मिलान करना है। गणित विषय में बेसिक ज्यामितीय आकृतियों में भुजाओं की संख्या पहचानना एक उद्देश्य हो सकता है। वहाँ सम्बन्धित आकलन **बहुविकल्पी चयन जाँच** (Multiple choice Test) के आइटम से किया जा सकता है। जैसे, एक पंचभुज में कितनी भुजाएँ होती हैं ? : (अ) चार (ब) पाँच (स) छ: (द) सात।

आकलन प्रारूप

उपरोक्त उदाहरणों में यह स्पष्ट है कि पहचानने के आकलन के तीन मुख्य तरीके हैं; सत्यापन, मिलान तथा विकल्पों में से चयन। 'सत्यापन/पुष्टि टास्क' में विद्यार्थी को कोई सूचना दी जाती है और उसे यह चुनना होता है कि वह सही है अथवा गलत। 'मिलान कार्य' में दो सूचियाँ प्रस्तुत की जाती हैं और विद्यार्थी को चुनना होता है कि एक सूची का कोई आइटम दूसरी सूची के किस आइटम से संबद्ध है। 'बहुविकल्पी चयन' में विद्यार्थी को एक प्रश्न के साथ कुछ संभव उत्तर दिए जाते हैं। उसे उनमें से एक सही उत्तर का चयन करना होता है।

(ब) अनुस्मरण करना (Recalling) : अनुस्मरण करने में दीर्घकालीन स्मृति से संबद्ध ज्ञान को ढूँढ़ना निहित होता है, जब उससे जुड़ा कोई संकेत/सुझाव (Prompt) दिया गया हो। Prompt सामान्यत: एक प्रश्न होता है। अनुस्मरण करने में विद्यार्थी दीर्घकालीन स्मृति से सूचना के एक अंश को तलाश करके कार्यकारी स्मृति (Working memory) में लाता है। अनुस्मरण के लिए वैकल्पिक टर्म है- 'पुन: प्राप्त करना' (Retreiving)।

- **शैक्षिक उद्देश्य एवं संबद्ध आकलन के नमूने:**

अनुस्मरण करने में विद्यार्थी पूर्व में सीखी गई सूचना को एक Prompt दिए जाने पर याद करता है। जैसे - सामाजिक अध्ययन में एक शैक्षिक उद्देश्य यह हो सकता है कि विद्यार्थी भारत के मुख्य निर्यात उत्पादों को स्मरण कर सकें। इसमें नमूने का सम्बन्धित जाँच आइटम एक प्रश्न होगा- 'भारत के मुख्य निर्यात उत्पाद कौन से हैं'। साहित्य में उद्देश्य हो सकता है, मुख्य साहित्यकारों की रचनाओं को याद रखना। यहाँ नमूने का जाँच प्रश्न होगा 'मधुशाला का लेखक कौन है ?'। गणित में 'पूर्णांक गुणन तथ्यों' को याद रखना एक उद्देश्य हो सकता है। इससे जुड़ा जाँच आइटम होगा; विद्यार्थी से 7 गुना 8 का उत्तर पूछना या '7 :× 8 = ... ?'

समझना

संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ

1. व्याख्या करना
2. उदाहरण प्रस्तुत करना
3. वर्गीकरण करना
4. सारांश निकालना
5. आशय निकालना
6. तुलना करना
7. कारण बताना/स्पष्ट करना

जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया गया है; जब शिक्षण का प्राथमिक लक्ष्य ज्ञान-संधारण को बढ़ावा देना होता है तब फोकस उन उद्देश्यों पर होता है जो याद करने पर बल देते हैं। इसके विपरीत जब शिक्षण का लक्ष्य अन्तरित करने को प्रोत्साहित करना होता है तब फोकस बाकी पाँच संज्ञान-प्रक्रियाओं की ओर खिसक जाता है (समझना से लेकर सृजन करने तक)।

'अन्तरण' पर आधारित शिक्षा उद्देश्यों में (जिन पर स्कूलों में जोर दिया जाता है) सबसे बड़ी श्रेणी- समझना है। विद्यार्थी जब शिक्षण-संदेश से अर्थ निर्माण कर पा रहे होते हैं तब कहा जाता है कि वे समझ रहे हैं। ऐसे 'संदेश' मौखिक, लिखित या ग्राफिक हो सकते हैं। साथ ही विद्यार्थियों के सम्मुख किसी भी तरह प्रस्तुत किए जा सकते हैं:- लैक्चर के दौरान, किताबों में या कम्प्यूटर मॉनिटर पर।

विद्यार्थी तब समझते हैं जब वे ग्रहण किए जाने वाले 'नये ज्ञान' का अपने 'पूर्वज्ञान' से सम्बन्ध बनाते हैं। विशेषत: समझने में आगमी ज्ञान (incoming knowledge) को मौजूदा संज्ञान-ढाँचों/ रूपरेखाओं (existing schemas and frameworks) से एकीकृत किया जाता है। चूँकि अवधारणाएँ (concepts) इन ढाँचों की घटक इकाई होती हैं, अत: अवधारणात्मक ज्ञान, समझ के लिए एक आधार

प्रदान करता है। समझ की श्रेणी में सात संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ सम्मिलित होती हैं - व्याख्या करना, उदाहरण/दृष्टान्त देना, वर्गीकरण करना, सारांश निकालना, आशय/निष्कर्ष निकालना, तुलना करना एवं स्पष्ट करना।

(अ) व्याख्या करना (Interpreting) : व्याख्या करना तब घटित होती है जब विद्यार्थी सूचना के एक निरूपण- स्वरूप (representational form) को दूसरे निरूपण स्वरूप में बदल सकता है। व्याख्या करने में; दिए गए शब्दों को दूसरे शब्दों में बदलना (भावानुवाद - Paraphrasing), चित्र को शब्दों में बदलना, शब्दों को चित्र में बदलना, संख्याओं को शब्दों में, शब्दों को संख्याओं में, संगीत में स्वरों (notes) को धुन (tones) में बदलना आदि सम्मिलित होता है। व्याख्या करने के लिए वैकल्पिक शब्द हैं; भावानुवाद करना (Paraphrasing), प्रतिरूपित करना (Representing), स्पष्टीकरण करना (Clarifying)।

- **शैक्षिक उद्देश्य एवं सम्बद्ध आकलन के नमूने**

व्याख्या करने में, एक निरूपण-प्रारूप में सूचना प्रदत्त होने पर विद्यार्थी उसे दूसरे प्रारूप में बदलने में योग्य होता है। जैसे- सामाजिक अध्ययन में स्वतंत्रता आन्दोलन के कुछ प्रमुख भाषणों अथवा दस्तावेजों का भावानुवाद करना सीखना। इससे संबद्ध आकलन कार्य में विद्यार्थी से जवाहर लाल नेहरू के 15 अगस्त 1947 के भाषण का भावानुवाद करने के लिए कहा जा सकता है। विज्ञान में विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं (natural phenomenon) का चित्रात्मक निरूपण (pictorial representation) करना सीखना एक शैक्षिक उद्देश्य हो सकता है। इससे संबद्ध आकलन एकक (assessment-item) होगा; विद्यार्थी को प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया को चित्रांकन द्वारा प्रदर्शित करने को कहना। गणित में एक नमूने का उद्देश्य विद्यार्थी द्वारा शब्दों में व्यक्त एक संख्या-वाक्य को संकेतों में व्यक्त बीजगणितीय-समीकरण के रूप में परिवर्तित करना सीखना हो सकता है।

आकलन प्रारूप

इससे सम्बद्ध आकलन एकक प्रारूपों में ''निर्मित प्रत्युत्तर'' (constructed response) अर्थात् स्वयं उत्तर प्रदान करना या चयनित प्रत्युत्तर (selected response) अर्थात् एक उत्तर चुनना हो सकते हैं। इनके द्वारा विद्यार्थी के समक्ष सूचना को एक प्रारूप में प्रस्तुत करके उनसे उस सूचना को दूसरे प्रारूप में निर्मित करने अथवा दिए गए विकल्पों में से चुनने के लिए कहा जाता है।

इस संभावना को बढ़ाने के लिए कि याद करने का नहीं अपितु व्याख्या करने का आकलन हो सके, आकलन कार्य में प्रदत्त सूचना 'नई' होनी चाहिए। नई से यहाँ आशय है कि शिक्षण के समय विद्यार्थी का उस सूचना से सीधा परिचय नहीं हुआ हो। जब तक इस नियम का पालन नहीं किया जाता, हम यह सुनिश्चित नहीं कर सकते हैं कि व्याख्या करने की योग्यता का आकलन हुआ है, ना कि याद रखने की क्षमता का। यदि आकलन कार्य और शिक्षण में प्रयुक्त कार्य व उदाहरण एक समान हैं तो संभवत: हम याददाश्त का ही आकलन कर रहे होंगे।

उक्त बात 'याद रखने' से सम्बन्धित उच्चतर सभी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के बारे में लागू होती है। यदि आकलन कार्यो से उच्चतर संज्ञान प्रक्रियाओं को आँकना है तो उन्हें ऐसा होना चाहिए कि विद्यार्थी केवल याददाश्त के आधार पर उन्हें हल नहीं कर सकें।

(ब) उदाहरण/दृष्टान्त देना (Exemplifying) उदाहरण देना' तब घटित होता है जब एक विद्यार्थी एक सामान्य अवधारणा (concept) या सिद्धान्त (principle) का विशिष्ट उदाहरण या दृष्टान्त प्रस्तुत करता है। 'उदाहरण देने' में सामान्य सिद्धान्त या संप्रत्यय की लाक्षणिक विशेषताओं (Defining Features) को पहचानना (जैसे- एक समद्विबाहु त्रिभुज में दो भुजाएँ समान होना आवश्यक है) और इन लक्षणों को एक विशेष उदाहरण/दृष्टान्त चुनने या निर्मित करने में उपयोग करना निहित होता है (प्रस्तुत त्रिभुजों में से समद्विबाहु त्रिभुज चुन पाना)। 'उदाहरण देने' के लिए वैकल्पिक रूप में : 'उदाहरण देकर समझाना- मुख्यत: चित्र द्वारा' (Illustrating) तथा 'उदाहरण देकर समझना- मुख्यत: ठोस वस्तु द्वारा' (Instantiating) पदों का प्रयोग होता है।

(स) वर्गीकरण करना (Classifying) : वर्गीकरण करना तब घटित होता है जब एक विद्यार्थी यह पहचान सकता है कि कोई चीज़ एक निश्चित श्रेणी (संकल्पना या सिद्धान्त) से संबद्ध है। वर्गीकरण करने में उन संगत पैटर्न्स को ढूँढ लेना निहित है, जो 'उदाहरण विशेष' तथा 'सामान्य अवधारणा' दोनों में ही फिट बैठते हैं अथवा मौजूद हैं। एक तरह से वर्गीकरण करना 'उदाहरण देने' की ही एक अनुपूरक प्रक्रिया है। उदाहरण देना एक सामान्य संप्रत्यय/सिद्धान्त से आरंभ होता है और विद्यार्थी से उसका विशिष्टल उदाहरण ढूँढने की माँग करता है। जबकि वर्गीकरण करना एक विशेष दृष्टान्त से आरंभ होता है और विद्यार्थी से उससे संबद्ध एक सामान्य संप्रत्यय/सिद्धान्त तलाशने की माँग करता है। वर्गीकरण करने के लिए वैकल्पिक रूप में 'श्रेणीकरण करने' (Categorization) तथा 'सम्मिलित करने' (Subsuming) का प्रयोग होता है।

(द) सारांश निकालना (Summarizing) : 'सारांश निकालना' तब घटित होता है जब एक विद्यार्थी प्रदत्त-सूचना के लिए एक ऐसा कथन प्रस्तुत कर सकता है, जो प्रदत्त सूचना का प्रतिनिधित्व करता हो। अथवा प्रदत्त सूचना में से मूल विषय/प्रकरण (general theme) को निकाल (Abstract) सकता है। सारांश निकालने में दी गई सूचना का प्रतिनिधि रूप निर्मित किया जाता है, जैसे- नाटक के एक दृश्य का अर्थ निकालना। उसमें से सारांश निकालना, जैसे - उसमें मुख्य बिन्दुओं या प्रकरण को तय करना आदि। सारांश निकालने के लिए अन्य वैकल्पिक शब्द हैं; 'सामान्यीकरण करना' (Generalizing) एवं 'अमूर्तीकरण करना' (Abstracting)।

(इ) आशय निकालना (Inferring) आशय निकालने का अर्थ है; उदाहरणों/दृष्टान्तों की एक श्रृंखला में निहित पैटर्न को खोजना। आशय निकालना तब घटित होता है जब एक विद्यार्थी उस संकल्पना/सिद्धान्त का अमूर्तन कर पाता है, जो प्रदत्त दृष्टान्तों के एक समूह को स्पष्ट करता है। ऐसा अवधारणा अमूर्तन प्रत्येक दृष्टान्त के संगत लक्षण के कूटकरण (Encoding) करने और

लक्षणों के मध्य संबंध पर ध्यान देने से घटित होता है।

(फ) तुलना करना (Comparing) : तुलना करने में दो या अधिक वस्तुओं, घटनाओं, विचारों, समस्याओं या स्थितियों के बीच समानताओं को खोजना निहित होता है। इसमें एक वस्तु, घटना के साथ दूसरी वस्तु, घटना के तत्वों एवं पैटर्न के बीच एकैक समरूपता (one to one correspondence) को पहचानना सम्मिलित होता है। जब तुलना करने को 'आशय निकालने' (पहले एक परिचित स्थिति से एक नियम का अमूर्तन करने) तथा उसके बाद उसे 'लागू करने' (इस नियम को कम परिचित स्थिति पर लागू करने) के साथ प्रयोग किया जाता है तब यह सादृश्य (analogy) के द्वारा विवेचन (reasoning) में सहयोग करता है। इसके लिए प्रयुक्त वैकल्पिक शब्दावली है; 'वैषम्य दिखाना' (contrasting) 'मिलान करना' (Matching) एवं 'समरूप जोड़ना' (mapping) तुलना करने में विद्यार्थी नई सूचना दिए जाने पर उसमें परिचित सूचना के साथ समरूपता (correspondence) खोजता है।

(ज) कारण बताना/स्पष्ट करना (Expaining) : स्पष्ट करना तब घटित होता है जब एक विद्यार्थी एक व्यवस्था/परिघटना का कारण- कार्य मॉडल निर्मित कर उसका उपयोग कर पाता है। यह मॉडल एक औपचारिक सिद्धान्त से लिया जाता है (सामान्यत: प्रद्धति विज्ञानों में) अथवा शोध या अनुभव पर आधारित होता है (प्राय: सामाजिक विज्ञानों एवं कला विषयों में)। एक संपूर्ण स्पष्टीकरण में 'कारण- कार्य मॉडल' निर्मित करना (सिस्टम के हर एक मुख्य भाग अथवा श्रृंखला की हर मुख्य घटना को सम्मिलित करते हुए)। तथा मॉडल का यह जानने के लिए प्रयोग करना कि सिस्टम के एक भाग अथवा श्रँखला की एक कड़ी में परिवर्तन किस तरह दूसरे भाग में बदलाव लाता है।

निदेशक, बोध शिक्षा समिति
एसपी-41, रीको इण्डस्ट्रियल एरिया,
कूकस, जयपुर

शैक्षिक चिन्तन

स्टेट इनशिएटिव फॉर क्वालिटी एजुकेशन (SIQE) कार्यक्रम में कक्षा प्रक्रिया

❐ प्रेमनारायण

स्टेट इनिशियटिव फॉर क्वालिटी एजुकेशन कार्यक्रम समस्त समन्वित राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने का सार्थक प्रयास है। इस कार्यक्रम के पीछे राज्य सरकार का सपना है कि प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर कक्षा 1 से 12 तक के बच्चों के अधिगम स्तर का उन्नयन। इस प्रयास के पीछे राज्य सरकार का विश्वास है कि ''सभी बच्चे सीख सकते हैं और सभी शिक्षक पढ़ा सकते हैं।'' इस कार्यक्रम के कुछ स्पष्ट उद्देश्य निम्नांकित हैं-

- राज्य के समन्वित विद्यालयों (कक्षा 1 से 10 एवं 1 से 12) में प्राथमिक स्तर से ही विद्यार्थी के समग्र विकास हेतु बाल केन्द्रित शिक्षण विधा (सी.सी.पी) तथा सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई) की समन्वित एप्रोच द्वारा सिखाने के तरीकों में सतत् सुधार करते हुए शैक्षिक प्रगति सुनिश्चित करना।
- सभी बच्चों का नामांकन और ठहराव सुनिश्चित करना-आदर्श विद्यालय के कैचमेन्ट में स्थित सभी बच्चों का नामांकन हो, हर नामांकित बच्चेके लिए विद्यालय की उच्चतम कक्षा तक की शिक्षा सुनिश्चित करना।
- राज्य के समन्वित विद्यालयों के प्रधानाचार्यों, शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता एवं शैक्षणिक क्षमता को सुदृढ़ करते हुए समन्वित शैक्षिक विकास को सुनिश्चित करना।
- जिले के अन्य विद्यालयों के सपोर्ट एवं सम्बलन हेतु इन विद्यालयों को 'संदर्भ विद्यालय'(Resource School) के रूप में विकसित करना। प्रत्येक विद्यालय में सशक्त नेतृत्व क्षमता को उभार कर 'सेन्टर फॉर एक्सिलेन्स' की स्थापना करना।

बालकेन्द्रित शिक्षण विधा

बाल केन्द्रित गतिविधि आधारित शिक्षण पद्धति और सतत् एवं व्यापक आकलन इस कार्यक्रम के प्रमुख आधार हैं। ये दोनों पक्ष परस्पर रूप से जुड़े हुए भी हैं और एक दूसरे के बिना पूर्ण रूप से साकार भी नहीं किये जा सकते हैं। अगर इसे सरलतम रूप में देखें तो हर बच्चे को जाने बिना उसकी आवश्यकता के अनुरूप शिक्षण कार्य कराना संभव नहीं होगा। ये बालकेन्द्रित शिक्षण के लिए आवश्यक शर्त है। अगर ये पक्ष नहीं हों तो हम स्कूलों में अन्य कितने भी परिवर्तन कर लें, सही मायने में कक्षा कक्षों को बाल केन्द्रित नहीं बना सकेंगे।

बालकेन्द्रित शिक्षण से क्या अभिप्राय है-

बच्चे स्वाभाविक रूप से सीखते हैं। वे अपने आस-पास की दुनिया से बहुत ही सक्रिय रूप से जुड़े होते हैं। वे खोज-बीन करते हैं, प्रतिक्रिया करते हैं, चीज़ों के साथ कार्य करते हैं, चीज़ें बनाते हैं व अर्थ गढ़ते हैं। समाज के साथ अन्त:क्रिया करके अपना ज्ञान निर्माण करते हैं। संस्था के रूप में विद्यालय को भी विद्यार्थियों को स्वयं के बारे में सीखने और दूसरों व समाज के बारे में जानने के नए अवसर प्रदान करना चाहिए, ताकि वे सामाजिक ज्ञान/विरासत के साथ जुड़ पाएँ (चाहे उन्होंने किसी भी परिवार या समुदाय में जन्म लिया हो)। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 ने सार्थक अनुभव देने, विद्यालय ज्ञान को परिवेश से जोड़ने तथा समाहित करने वाली शिक्षा प्रदान करने पर ज़ोर दिया है। इसमें बाल-केन्दित शिक्षण पद्धति को सिखाने के मुख्य तरीके के रूप में देखा गया है।

बाल-केन्द्रित शिक्षा शास्त्र का अर्थ है बच्चों के अनुभवों, उनके स्वरों, उनकी रूचि, इच्छा, अभिव्यक्ति और उनकी सक्रिय सहभागिता को प्राथमिकता देना। इस प्रकार के शिक्षा शास्त्र में बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास व

अभिरुचियों के मद्‌देनज़र शिक्षा को नियोजित करने की आवश्यकता होती है। वर्तमान में विद्यालय के शैक्षिक वातावरण, अभ्यास, पाठ्यपुस्तकें बच्चों के सीखने में ग्रहणशीलता के गुण पर केन्द्रित न होकर सभी बच्चों के लिए एक ही समान व एक ही तरीके से निर्मित होते रहे हैं। ऐसी स्थिति में कक्षा के सभी बच्चों की भागीदारी को सुनिश्चित करना संभव नहीं है। बालकेन्द्रित शिक्षण शिक्षकों को विद्यार्थियों की सक्रियता व रचनात्मक समर्थन को पोषित और संवर्द्धित करने का प्रयास है। उनकी दुनिया से, वास्तविक तरीकों से संबंध स्थापित करने, दूसरों से जुड़ने की मूल अभिरुचि या अर्थ ढूंढ़ने की जन्मजात रुचि को पोषित करना चाहिए। बालकेन्द्रित शिक्षण को हम निम्न संदर्भों में समझ सकते हैं–

विद्यार्थियों के संदर्भ में

इसमें शिक्षकों के द्वारा यह मानना सबसे महत्त्वपूर्ण है कि सभी बच्चों में सीखने की नैसर्गिक क्षमता होती हैं व सभी बच्चों को सीखने में मदद करना हमारा दायित्व हैं। अभी विद्यालयों व कक्षा में सभी बच्चों की अपनी बात कहने व अनुभवों को कक्षा में अभिव्यक्त करने के अवसर उपलब्ध नहीं होते हैं। शिक्षक बोलते हैं व बच्चे प्रश्नों के उत्तर देते या दोहरान करते पाए जाते हैं। बच्चों को खुद कर के सीखने व उन्हें पहल करने के अवसर नहीं के बराबर मिलते हैं। विद्यालय का शैक्षिक वातावरण ऐसा हो जिसमें बच्चे स्वयं की आवाज ढूँढें, अपनी उत्सुकता का पोषण करें, सवाल पूछें, जाँचें परखें और अपने अनुभवों को विद्यालय में प्राप्त विशिष्टताओं को ज्ञान के साथ जोड़कर देख सके और स्वयं ज्ञान निर्माण करें। इसके लिए पाठ्यक्रमणीय उद्‌देश्यों, पढ़ाने के तरीकों, पाठ्यपुस्तकों, शैक्षणिक सामग्री व योजना तथा मूल्यांकन की प्रक्रिया में बदलाव लाने की आवश्यकता है।

सीखने–सिखाने के तरीके

बच्चे उसी वातावरण में सीख सकते हैं जहाँ उन्हें लगे कि उन्हें महत्त्वपूर्ण माना जा रहा है। बच्चे अनुभव से सीखते हैं व सीखना जीवंत प्रक्रिया के रूप में शिक्षक के मार्गदर्शन व मदद से होता है। बालकेन्द्रित कक्षाओं में बच्चों के करके व मिलकर सीखने पर आधारित शिक्षण योजना बच्चों की रुचियों को ध्यान में रख कर बनाई जाती है। ऐसे में बच्चों की कार्य में संलग्नता बहुत अधिक होती है व सीखने में वे सक्रिय भूमिका निभा रहे होते हैं। कक्षाएँ व विद्यालय सीखने के लिए उपयुक्त व समग्र होते हैं, जिसमें बच्चों की अभिरुचियों को सीखने–सिखाने व पूरे कार्य के मध्य में रखा जाता है। बच्चों को प्रश्न पूछने, अपने सीखने पर चिन्तन करने, सहपाठियों से चर्चा करने, सीखे हुए को वास्तविक जीवन में प्रयोग करने व नये अनुभव लेने हेतु भरपूर अवसर मिलते रहने चाहिए।

शिक्षक–विद्यार्थी के बीच अन्त: संबंध

बालकेन्द्रित शिक्षण विधा से कार्य करने हेतु यह आवश्यक है कि शिक्षक इन बालगोपालों के सीखने की प्रक्रिया के बारे में पर्याप्त समझ रखते हों। इसमें शिक्षक बच्चों के सीखने के ऐसे अवसर प्रदान करे जिससे वे नए अनुभव व अवधारणाओं को अपने पहले के अनुभवों व ज्ञान से जोड़कर देख पाएँ, नया जानने के बारे में जिज्ञासु रहें व शिक्षक के साथ मिलकर नया सीखें तथा अपनी जिज्ञासाओं को सशक्त कर पाएं। शिक्षक व विद्यार्थी के मध्य प्यार, सम्मान व सहकार का सम्बन्ध हो।

वस्तुनिष्ठ आकलन

बाल केन्द्रित शिक्षण का एक मुख्य अंग सतत व समग्र आकलन प्रक्रिया है। इसमें आकलन सीखने सिखाने की प्रक्रिया के अभिन्न अंग है व आकलन का प्रयोग बच्चों की

आवश्यकताओं को जानने व उसके अनुरूप मदद सुनिश्चित करने को माना गया है। वस्तुनिष्ठता हेतु अलग–अलग उपकरणों का प्रयोग व बच्चों द्वारा स्वयं का आकलन कर शिक्षक को फीडबैक देने जैसे पक्ष भी सम्मिलित हैं। इसमें आकलन को शिक्षक व बच्चों, दोनों के लिए फीडबैक के रूप में देखा गया है।

शिक्षक की तैयारी

सीखना एक सामाजिक वातावरण में घटने वाली प्रक्रिया है। बालकेन्द्रित शिक्षण की विधियाँ व तरीकों के माध्यम से बच्चों को मिलकर सीखने का अवसर मिलना चाहिए। बालकेन्द्रितशिक्षण विधियों को प्रयोग में लेने हेतु यह आवश्यक है कि शिक्षक पूर्व तैयारी, शिक्षण सामग्री व योजना सहित कक्षा में प्रवेश करे। योजना शिक्षक को काम करने का मार्ग दर्शन देती है व बच्चों को क्या व कैसे सिखाया जाये, इसके चिन्तन को प्रेरित करती है। आवश्यकता के अनुसार शैक्षिक तैयारी से बच्चे अधिक रुचि से सीखते हैं। योजना का यह पक्ष भी महत्त्वपूर्ण है कि प्रत्येक बच्चे के सीखने की समीक्षा की जाये और उसके अनुसार आगे की तैयारी करे। बिना समीक्षा के बच्चों के सीखने का पता न चलने की संभावना बनी रहती है।

ज्ञान निर्माण के संदर्भ में

ज्ञान का अर्थ है कर्म व भाषा के माध्यम से स्वयं व दुनिया को समझना। सार्थक अधिगम से अभिप्राय है ठोस चीजों व मानसिक द्योतकों को प्रस्तुत करने व उनमें बदलाव लाने की उत्पादक प्रक्रिया, न कि जानकारी इकट्‌ठा कर उसे रटना। अत: भाषा व विचार का प्रगाढ़ संबंध है। बच्चे शुरुआत में कब, कहाँ, व कैसे के बारे में जानने में इच्छुक होते हैं तथा ठोस अनुभवों पर तर्क और कार्य करते हैं। जैसे–जैसे उनकी भाषायी क्षमता और दूसरों के साथ काम करने की सामर्थ्य बढ़ता है उनके कार्यो में जटिल विवेचना की सम्भावनाएं खुलती जाती हैं जिनमें अमूर्तीकरण, नियोजन व वे उद्‌देश्य समाहित होते हैं जो तत्काल दिखाई नहीं देते।

अत: काल्पनिक विचारों के साथ काम करने व संभावनाओं की दुनिया में विवेचना की क्षमता बढ़ती जाती है। बच्चों के सीखने के विषय में कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दु:–

1. सभी बच्चे स्वभाव से ही सीखने के लिए

प्रेरित होते हैं व उनमें सीखने की प्राकृतिक क्षमता होती है।अर्थ निकालना, अमूर्त सोच की क्षमता विकसित करना, विवेचना व कार्य, अधिगम की प्रक्रिया के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पहलू हैं।

2. सभी बच्चे व्यक्तिगत स्तर पर एवं दूसरों से भिन्न तरीकों से सीखते हैं-जैसे- अनुभव के माध्यम से स्वयं चीज़ें करने व बनाने से, प्रयोग करने, पढ़ने व विमर्श करने, पूछने, सुनने उस पर मनन करने से तथा गतिविधि या लेखन के ज़रिए अभिव्यक्त करने से।
3. यह आवश्यक है कि बच्चे सिर्फ रटें नहीं बल्कि अर्जित किए हुए ज्ञान को अपने जीवन व आस-पास के वातावरण से जोड़ कर देखें।
4. यदि बच्चों के परिवार, समाज व विद्यालय के बीच समन्वय रहे तो सीखने की प्रक्रिया पुष्ट होती है।
5. बच्चे रट कर याद किये तथ्यों को भूल जाते हैं, इसलिए सीखने की एक उचित गति होनी चाहिए ताकि विद्यार्थी समझते हुए आत्मसात कर सके। सीखने में विविधता व चुनौती होनी चाहिए ताकि बच्चे उसमें रुचि लें व व्यस्त रहें।
6. सीखने में नीरसता आना व अरुचि पैदा होना इस बात का संकेत है कि कार्य अब यांत्रिक रूप से किया जा रहा है और उसका ज्ञान निर्माण से कोई संबंध नहीं है। ऐसे में उस सीखने का संज्ञानात्मक मूल्य खत्म हो जाता है।
7. सीखने में बच्चे की शिक्षक/अधिक सक्षम लोगों के साथ संवाद व अन्त:क्रिया बहुत महत्त्वपूर्ण है।

पूछताछ, अन्वेषण, प्रश्न पूछना, वाद-विवाद, व्यावहारिक प्रयोग व ऐसा चिंतन जिससे सिद्धांत बन सकें और विचार/स्थितियों की रचना हो सके, ये सभी बच्चों की सक्रिय व्यस्तता को सुनिश्चित करते हैं। विद्यालयों द्वारा ऐसा अवसर प्रदान किया जाना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

गतिविधि आधारित शिक्षण

कक्षा में चल रही सीखने सिखाने की प्रक्रिया काफी हद तक विद्यालय, सामाजिक परिवेश और उसकी संस्कृति पर निर्भर करती है। एक सुरक्षित, चिन्तामुक्त, सुविधाजनक और खुशनुमा विद्यालयी परिवेश बच्चों को बेहतर तरीके से सीखने और कुछ अधिक हासिल करने में मदद करता है। प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के सीखने को खेल विधियों और बालकेन्द्रित पद्धतियों द्वारा उन्नत किया जा सकता है। आजकल बालकेन्द्रित शब्दावली बहुत अधिक प्रचलन में है। इसमें किस प्रकार की कक्षा प्रक्रिया होनी चाहिए। इसके लिए शिक्षक केन्द्रित व बालकेन्द्रित कक्षाओं की इन दो तस्वीरों के माध्यम से समझा जा सकता है।

सलाहकार, SIQE
निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर

अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।

प्रेरक प्रसंग

महर्षि दयानंद सरस्वती

❑ डॉ. श्याम मनोहर व्यास

आर्य समाज के प्रवर्तक एवं समाज सुधारक महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती अपनी ओजस्वी वाणी एवं तर्कसम्मत विचारों से लोगों को दो टूक उत्तर देते थे, प्रस्तुत हैं कतिपय उनके जीवन से संबंधित प्रेरक प्रसंग

गाली के बदले फलः- एक बार महर्षि दयानंद सरस्वती फर्रूखाबाद में गंगा तट पर ठहरे हुए थे। उनसे थोड़ी ही दूर एक ओर झोपड़ी में एक दूसरा साधु भी ठहरा हुआ था। प्रतिदिन वह दयानंद की कुटिया के पास आकर उन्हें गालियाँ देता रहा। दयानंद सुनते और मुस्कुरा देते। कोई भी उत्तर नहीं देते थे।

एक दिन किसी सज्जन ने फलों का एक बहुत बड़ा टोकरा महर्षि के पास भेजा। महर्षि ने टोकरे से बहुत अच्छे-अच्छे फल निकाले, उन्हें एक वस्त्र में बाँधा और अपने शिष्य से बोले- ''ये फल उस साधु को दे आओ जो उस सामने की कुटिया में रहता है।'' शिष्य फल लेकर उस साधु के पास पहुँचा और बोला- ''बाबा, ये फल स्वामी दयानंद ने आपके लिए भेजे है।'' साधु ने दयानंद का नाम सुनते ही कहा-''अरे यह प्रातःकाल किसका नाम ले लिया, तुम्हे पता नहीं, आज भोजन भी मिलेगा या नहीं। चला जा यहाँ से, मेरे लिए नहीं, किसी दूसरे के लिए भेजे होंगे। मैं तो प्रतिदिन उन्हें गालियाँ देता हूँ।''

उस शिष्य ने महर्षि के पास आकर यही बात कही। महर्षि दयानंद बोले- ''नहीं, तुम फिर उसके पास जाओ। उसे कहो कि आप प्रतिदिन जो अमृत वर्षा करते हो, उसमें आपकी पर्याप्त शक्ति लगती है। ये फल इसलिए भेजे है कि इन्हें खाइये, इनका रस पीजिए आपकी शक्ति बनी रहे और आपकी अमृत वर्षा में कमी न आ जाये।''

यह सन्देश सुन कर साधु बहुत लज्जित हुआ और आकर महर्षि के चरणों में गिर पड़ा तथा उनसे क्षमा मांगने लगा।

संन्यासी और बालः- एक दिन स्वामी दयानंद बैठे हुए क्षौर करा रहे थे। उसी समय एक पंडित जी वहाँ आये ओर कहने लगेः- ''स्वामीजी आप तो साधु हैं आपको तो बाल बढ़वाना चाहिये। जटा रखनी चाहिए। इस पर दयानंद बोले- ''यदि बाल बढ़ाने से ही साधु की पहचान है तो रीछ सबसे बड़ा त्यागी साधु होना चाहिए। त्याग मन व कर्म से होना चाहिए। देह ईश्वर प्रदत्त है, अतः देह की रक्षा के लिए उसे सँवारना, सुधारना, धर्मानुकूल ही है। जैसे विलासी पुरुष, पुष्ट शरीर से अधिक पापाचरण करते हैं। वैसे ही परमेश्वरी जन परिपुष्ट और बलिष्ठ काया से अधिक धर्म-कर्म करते हैं। शरीर भी आत्मा का पूरक है।'' पंडितजी दयानंद का तर्कसंगत उत्तर सुन कर अवाक् रह गए।

स्वार्थमय अन्न का त्यागः- भागलपुर (बिहार) में एक वैश्य स्वामीजी के लिए भोजन सामग्री भेजा करता था। परन्तु स्वामीजी को पता लगा कि उसकी भावना यह है कि इस आतिथ्य सेवा से उसे सन्तान प्राप्ति हो। स्वामीजी उसी दिन से उसका स्वार्थमय अन्न ग्रहण करना छोड़ दिया।

भेंट अस्वीकारः- अलवर राज्य के दीवान ने एक दिन स्वामीजी को भोजनार्थ अपने घर पर निमंत्रित किया। जब स्वामीजी ने भोजन ग्रहण कर लौटने लगे, तो दीवान ने एक हजार रुपये भेंट करने चाहे। स्वामीजी ने इन्हें लेने से इन्कार कर दिया और कहा- ''मैं कुरीतियों का खंडन करता हूँ। यदि ये रुपये ले लूँगा, तो गोसाइयों को अपनी आजीविका के लिए एक उदाहरण और मिल जाएगा।''

आदर्श क्षमाशीलताः- स्वामीजी के एक नौकर ने उनकी घड़ी चुरा ली। कर्मचारियों ने खोजबीन करके अपराधी को पकड़ लिया और लाकर स्वामीजी के सामने उपस्थित किया। नौकर रोता हुआ उनके चरणों में गिर पड़ा। कर्मचारी तो चाहते थे कि उसे पुलिस के हवाले करके दण्ड दिलवाया जाये।

परन्तु महर्षि दयानंद ने कहा-'' हमारा कार्य साँप को मारना है, न कि बांबी को कूटना, अपराध से घृणा करना है, न कि अपराधी से।'' उन्होंने नौकर को चोरी के दोष व परिणाम के बारे में समझाया। नौकर ने प्रतिज्ञा की कि वह भविष्य में कभी चोरी नहीं करेगा।

शिष्य की सेवाः- एक बार स्वामीजी के शिष्य पं. गोविन्दराम को ज्वर आ गया। वह एक कोठरी में जाकर सो गया। जब स्वामीजी को पता लगा तो वे उसके पास जाकर उसका सिर दबाने लगे। शिष्यों को यह अजीब लगा तो स्वामी जी ने कहा- इसमें कोई दोष नहीं है। एक-दूसरे की सहायता और सेवा करना मानव मात्र का धर्म है। यदि बड़ी आयु के लोग अपने से छोटों की सेवा न करें, तो छोटों में सेवा का भाव आयेगा कैसे?''

गेहूँ की रोटीः- एक बार स्वामी दयानंद सरस्वती अनूप शहर में ठहरे थे। भागमल नाई महर्षि का बड़ा भक्त था। एक दिन वह श्रद्धा-भाव से थाल में भोजन परोस कर स्वामीजी की सेवा में लाया। स्वामीजी ने प्रेमपूर्वक उस भोजन को लेकर खाना आरंभ किया। उस समय वहाँ कोई 20-25 ब्राह्मण विद्यमान थे। वे कह उठे- ''छि-छि। स्वामीजी आप ब्राह्मण होकर यह क्या कर रहे है? यह रोटी तो नाई की है। आपका धर्म नष्ट हो जाएगा।'' स्वामीजी ने हँस कर कहा- ''महानुभावों! यह रोटी तो नाई की नहीं, गेहूँ की है। रोटी को चाहे ब्राह्मण बनावे या नाई, उसके स्वाद में कोई अन्तर नहीं पड़ता।'' बैठे हुए व्यक्ति यह तर्क संगत उत्तर सुनर निरुत्तर हो गए।

ऊँचा आसनः- एक दिन एक शास्त्रीजी स्वामीजी से शास्त्रार्थ करने आये। वे ऊँचे आसन पर बैठे थे और स्वामीजी नीचे। शास्त्रीजी ने बहस के दौरान हँसते हुए कहा- ''स्वामीजी, मेरा आसन आपसे ऊँचा है। अतः मैं आपसे अधिक विद्वान हूँ।'' पास ही पेड़ के शिखर पर एक काला कौआ बैठा काँव-काँव कर रहा था। स्वामीजी ने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा- '' शास्त्रीजी, उस कौवे का आसन आपसे भी ऊँचा है तो क्या वह आपसे अधिक बुद्धिमान है।'' स्वामी दयानंद की बात सुन कर शास्त्री जी झेंप गए।

पूर्व शिक्षा उपनिदेशक
15 पंचवटी, उदयपुर-313004 राज.
मो. 9352103162

आदेश-परिपत्र : मार्च, 2016

1. स्टाफिंग पैटर्न अन्तर्गत विद्यालयों के स्वीकृत पदों में कमी/वृद्धि
2. कक्षा 1 से 8 के लिए विद्यालय प्रबन्धन समिति (SMC) एवं कक्षा 9 से 10/कक्षा 9 से 12 के लिए विद्यालय विकास कोष एवं प्रबन्धन समिति (SDMC) के गठन एवं आय-व्यय पर नियन्त्रण रखने, लेखे संधारित करने के संबंध में।
3. गैर शैक्षिक कार्यों में कार्य व्यवस्थार्थ/ प्रतिनियुक्ति पर पदस्थापित शिक्षकों को अपने मूल पदस्थापित स्थान पर कार्यग्रहण कराने के संबंध में।
4. हैड टीचर को शैक्षिक उप समिति में सदस्य के रूप में सम्मिलित किए जाने की स्वीकृति।

1. स्टाफिंग पैटर्न अन्तर्गत विद्यालयों के स्वीकृत पदों में कमी/वृद्धि

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● परिपत्र ● स्टाफिंग पैटर्न अन्तर्गत विद्यालयों के स्वीकृत पदों में कमी/वृद्धि होने के उपरान्त विभाग के ध्यान में आया है कि अनेक विद्यालयों से अभी भी संबंधित बजटमदों के अन्तर्गत स्वीकृत पदों के अनुसार वेतन एवं अन्य भत्तों में सही मांग पत्र प्राप्त नहीं हो रहे है। साथ ही मांग पत्र समय पर एवं उचित माध्यम से भी प्राप्त नहीं हो रहे है, इस कारण विद्यालयों को समय पर एवं पर्याप्त राशि आवंटित करने में कठिनाई आ रही है। अतः इनके समाधान हेतु कार्यालय/विद्यालय प्रधान निम्नलिखित बिन्दुओं की पालना सुनिश्चित करावे :-

1. इस परिपत्र के संलग्न नवीन निर्धारित मांग पत्र में भविष्य में राशि की मांग की जावे। मांग पत्र में सभी कॉलम्स की पूर्ति कर मांग पत्र सीधे इस कार्यालय को डाक से भिजवाया जावे। चूँकि फैक्स मशीन अन्य महत्वपूर्ण सूचनाओं हेतु व्यस्त रहती है, अतः केवल आपातस्थिति में ही मांग पत्र फैक्स से भिजवाया जावे। अन्य किसी माध्यम से मांग पत्र प्रेषित नहीं किया जावे। यात्रा एवं सामान्य चिकित्सा राशि के आवंटन हेतु फैक्स के माध्यम से मांग पत्र प्रेषित नहीं किया जावे। ऐसे मांग पत्रों पर विचार नहीं किया जायेगा।
2. यह भी देखा गया है कि विद्यालय प्रधान द्वारा वेतन एवं अन्य भत्तों में संभावित व्यय राशि की सही गणना नहीं कर अत्यधिक राशि की मांग की जाती है। राशि के आवंटन के बाद आधिक्य राशि का या तो समर्पण ही नहीं किया जाता अथवा समय पर समर्पण नहीं किया जाता है, जिससे अत्यधिक राशि लैप्स हो जाती है, जिसे राज्य सरकार ने गम्भीरता से लिया है। भविष्य में भी यदि ऐसी स्थिति पाई जाती है तो संबंधित विद्यालय प्रधान के विरुद्ध नियमानुसार कार्यवाही की जायेगी। राशि की सही गणना कर मांग की जावे, यदि अधिक राशि आवंटित हो भी गई हो तो तत्काल समर्पण की सूचना प्रेषित की जावे। यह भी ध्यान में आया है कि कई शाला प्रधानों के द्वारा वेतन के अलावा अन्य मदों में आवंटित राशि का व्यय वित्तीय वर्ष के अन्तिम तिमाही में ही अत्यधिक रूप से किया जाता है, इसे भी राज्य सरकार ने गंभीरता से लिया है। राशि का उपयोग नियमित रूप से किया जावे अन्यथा आवश्यक कार्यवाही की जायेगी।
3. इस कार्यालय से आवंटित बजट राशि/पदों की समस्त प्रतियां इस विभाग की विभागीय वेबसाइट www.rajshiksha.gov.in पर अपलोड की जाती है, अतः विद्यालय प्रधान प्रतिदिन वेबसाइट का अवलोकन कर अपनी शाला से संबंधित आवंटन पत्रों एवं अन्य पत्रों को डाउनलोड कर अपनी शाला में प्रतियां सुरक्षित रखें। शाला में बजट मदवार स्वीकृत पदों एवं आवंटित राशि का एक बजट कन्ट्रोल रजिस्टर संधारित किया जावे। प्रत्येक बिल का इन्द्राज इस बजट कन्ट्रोल रजिस्टर में किया जावे। राशि कम होने पर पर्याप्त समय पूर्व ही मांग पत्र तैयार कर निदेशालय को भिजवाया जावे। शाला में अंकेक्षण दल एवं उच्चाधिकारियों के आगमन पर इस रजिस्टर का अवलोकन किया जायेगा। आंवटित राशि का उपयोग इस कार्यालय द्वारा जारी आवंटन पत्रों के आधार पर उसके निर्देशानुसार ही किया जावे। बिना आवंटन पत्र के राशि का उपयोग नहीं किया जावे। आवंटन पत्रों की प्रतियां अंकेक्षण दल हेतु शाला रिकॉर्ड में सुरक्षित रखें।
4. जिन कार्मिकों ने निजी चिकित्सालयों में ईलाज कराया है, उनको राशि के आवंटन हेतु उनका मांग पत्र अलग से तैयार कर उनके साथ सभी संबंधित वाउचरों की फोटोप्रतियां संलग्न कर प्रकरण अपने जिशिअ कार्यालय को ही भिजवाये जावे। सीधे इस कार्यालय को नहीं भिजवाया जावे। ऐसे प्रकरणों को जिशिअ कार्यालय के लेखाधिकारी/सहायक लेखाधिकारी नियमानुसार देय राशि की जाँच निर्धारित प्रपत्र में कर प्रकरण जिशिअ कार्यालय के माध्यम से इस कार्यालय को भिजवायेंगे। राजकीय चिकित्सालयों में ईलाज के प्रकरणों में राशि आंवटन हेतु सभी कार्मिकों के नाम एवं उनकी बकाया राशि की सूची संलग्न करते हुए एक ही मांग पत्र तैयार कर वे विद्यालय स्तर से सीधे निदेशालय को भिजवाये जावे।
5. विद्यालय को Online राशि/पदों की जानकारी हेतु IFMS Site पर बजट मोड्यूल में LOGIN-guest एवं पासवर्ड Guest@321 द्वारा शाला प्रधान नियमित रूप से जांच करें। Online आवंटित राशि का अवलोकन कर तदनुसार आवश्यकतानुसार राशि की ही मांग की जावे। संवेतन में राशि की मांग करते समय वेतन बिल की सकल राशि के अनुसार मांग की जावे।
6. सेवानिवृति पर देय बकाया उपार्जित अवकाशों के नकद भुगतान हेतु राशि की मांग वेतन आवंटन हेतु नहीं की जावे। इस हेतु राशि के आवंटन की आवश्यकता नहीं होती है। यह राशि 2071 बजट मद अन्तर्गत चार्ज होती है।
7. जिन विद्यालयों को एक से अधिक बजटमदों के अन्तर्गत पद स्वीकृत है, उन विद्यालयों के संबंधित पदों के कार्मिकों के वेतन एवं अन्य भत्ते संबंधित बजटमद अन्तर्गत ही आहरित किए जावे। यदि किसी अन्य बजटमद अन्तर्गत उनका वेतन आहरण किया जाना पाया जाता है तो संबंधित आहरण वितरण अधिकारी स्वयं उत्तरदायी होंगे एवं उनके विरुद्ध नियमानुसार कार्यवाही की जायेगी।
8. कुछ शाला प्रधानों के द्वारा वेतन माहः मार्च के वेतन आवंटन हेतु भी चालू वित्तीय वर्ष में मांग की जाती हे, जो उचित नहीं है। चूँकि माह

मार्च का वेतन आहरण आगामी वित्तीय वर्ष में अप्रैल माह में आवंटित राशि में से अप्रैल माह में होता है, अतः चालू वित्तीय वर्ष में मार्च माह के वेतन हेतु बजट की मांग नहीं की जावे।

संलग्न : उपरोक्तानुसार

● वित्तीय सलाहकार माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/बजट/बी-4/25577/2015-16/ दिनांक : 02.02.2016

अतिरिक्त राशि आवंटन हेतु आवेदन पत्र

कार्यालय/विद्यालय का नाम ....

वित्तीय वर्ष : ....

OFFICE I.D.	D.D.O. No.	बजट मद (मोहर अंकित करें)	NONPLAN/ PLAN (चिह्नित कर नीचे अंकित भी करें)	विस्तृत मद जिसमें राशि चाहिए:-
....	....	....	....	....

1. मूल आवंटित राशिः ....
2. अतिरिक्त आवंटित राशि (यदि कोई हो तो): ....
3. अब तक कुल आवंटित राशि (1+2):..........................
4. अब तक कुल व्यय राशिः ....
5. वर्तमान में शेष उपलब्ध राशि (3-4): ....
6. वित्तीय वर्ष की समाप्ति तक होने वाला कुल संभावित व्ययः ....
7. अतिरिक्त राशि की मांग (6-3): ....
8. अतिरिक्त मांग का औचित्य....................................
   ....
9. जिस बजटमद अन्तर्गत राशि की मांग की जा रही है, उसमें कुल स्वीकृत, कार्यरत एवं रिक्त पदों की स्थिति :-

बजट मद मोहर	केवल उक्त बजट मद अन्तर्गत पदों की वर्तमान स्थिति			
	कुल स्वीकृत पद	कार्यरत	रिक्त पद	विवि.

10. यदि वेतन में अतिरिक्त मांग की जा रही है तो बकाया वेतन माह के नाम एवं माहवार सकल वेतन राशि का विवरणः-

क्र.सं.	बकाया वेतन माह का नाम	माह बिल का सकल वेतन
1		
2		
3		
4		
	कुल सकल वेतन	

11. शाला प्रधान के मोबाइल नं. ....
    विद्यालय/कार्यालय का फोन नं.................................

संलग्न : पेंडिग बिलों की सूची

आहरण वितरण अधिकारी

दिनांकः के हस्ताक्षर मय मोहर

2. कक्षा 1 से 8 के लिए विद्यालय प्रबन्धन समिति (SMC) एवं कक्षा 9 से 10/कक्षा 9 से 12 के लिए विद्यालय विकास कोष एवं प्रबन्धन समिति (SDMC) के गठन एवं आय-व्यय पर नियन्त्रण रखने, लेखे संधारित करने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा/स/22423/2015-16 दिनांक : 03.02.2016 ●परिपत्र

विभाग द्वारा जारी आदेश क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा/स/ 22423/2001-02, दिनांक : 21 जनवरी 2015 एवं समसंख्यक आदेश दिनांक : 27.02.2015 के द्वारा कक्षा 1 से 8 के लिए विद्यालय प्रबन्धन समिति (SMC) एवं कक्षा 9 से 10/कक्षा 9 से 12 के लिए विद्यालय विकास कोष एवं प्रबन्धन समिति (SDMC) के गठन एवं आय-व्यय पर नियन्त्रण रखने, लेखे संधारित करने बाबत विवरण अंकित किया गया है, ताकि वर्णित समितियों द्वारा प्रभावी तरीके से कार्यों का निष्पादन किया जा सके।

विभाग के अन्तर्गत कक्षा 1 से 12 तक के समन्वित विद्यालयों के संचालन हेतु विभागीय परिपत्र क्रमांक शिविरा-मा/माध्य/अ-1/आदर्श वि./21312/वो-2/2014, दिनांक : 12 फरवरी, 2015 जारी किया गया, ताकि विद्यालयों में स्वच्छ शैक्षिक वातावरण में विद्यार्थियों को गुणात्मक शिक्षा प्रदान की जा सके। प्रायः देखने में आया है कि राजकीय विद्यालयों में छात्र कोष (परिवर्तित नाम 'विद्यार्थी कोष') एवं विद्यालय विकास कोष में राशि उपलब्ध होने के बावजूद भी संस्था प्रधान राशि का उपयोग नहीं करते हैं अथवा विकास समिति शिक्षक अभिभावक संघ, विद्यालय स्टाफ एवं स्थानीय समुदाय का आपस में समुचित समन्वय नहीं होने के कारण विद्यार्थियों को प्रभावी स्वच्छ शैक्षिक वातावरण हेतु वांछित सुविधाओं से वंचित रहना पड़ता है। यह भी देखने में आया है कि विद्यार्थी कोष एवं विद्यालय विकास कोष में पर्याप्त राशि उपलब्ध होने के बावजूद भी विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए आवश्यक सुविधाओं का अभाव रहता है, जो अत्यन्त शोचनीय विषय है।

विद्यार्थी कोष/विकास कोष के सामयिक, समुचित एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर में गुणवत्ता अभिवृद्धि की उद्देश्य पूर्ति हेतु उपयोग बाबत पूर्व प्रसारित समसंख्यक विभागीय परिपत्र दिनांक : 28 फरवरी 2015 के अनुवर्तन में विद्यार्थी कोष/विकास कोष के समयबद्ध उपयोग एवं पूर्व प्रदत्त निर्देशों की क्रियान्विति सुनिश्चित किये जाने हेतु निम्नानुसार समय सारणी एवं निर्देश जारी किये जाते हैं-

1. **कार्य योजना** : वर्तमान शैक्षिक सत्र की समाप्ति दिनांक : 30.04.2016 को होने जा रही है। संस्था प्रधान द्वारा

दिनांक : 25.04.2016 से 30.04.2016 की अवधि में परीक्षा परिणाम की तैयारी के दौरान विद्यालय के आगामी सत्र की आवश्यकताओं का आकलन कर विद्यालय प्रबन्धन समिति/विद्यालय विकास कोष एवं प्रबन्धन समिति, शिक्षक-अभिभावक संघ, विद्यालय स्टाफ, प्रतिभावान विद्यार्थियों एवं गठित समिति सदस्यों से विचार विमर्श कर कार्य योजना का निर्धारण किया जावे। सामयिक समीक्षा के दौरान कार्ययोजना में शैक्षिक गुणात्मक सुधार से संबंधित बिन्दुओं पर अपेक्षित संशोधन हेतु संस्था प्रधान को पूर्ण स्वायतता होगी। कार्ययोजना में विद्यार्थियों के प्रभावी शिक्षण हेतु शिक्षण-अधिगम सामग्री, खेलकूद सामग्री व बैठक व्यवस्था हेतु फर्नीचर, दरी-पट्टी आदि के क्रय के साथ-साथ पीने के पानी की व्यवस्था, बालक-बालिकाओं के लिए पृथक-पृथक शौचालय का निर्माण, मरम्मत, रख-रखाव एवं विद्यालय परिसर सहित उनकी सफाई व्यवस्था को प्राथमिकता दी जावे। दिनांक : 30.04.2015 को परीक्षा परिणाम की घोषणा के साथ ही विद्यालय विकास कोष एवं प्रबन्धन समिति (SDMC) की साधारण सभा एवं शिक्षक-अभिभावक संघ की विद्यालय स्टाफ एवं छात्र प्रतिनिधियों के साथ संयुक्त बैठक आयोजित कर विद्यार्थी कोष/विकास कोष के उपयोग हेतु आगामी सत्र में किये जाने वाले कार्यों/सामग्री खरीद पर विस्तृत विमर्श उपरान्त कार्य योजना निर्माण हेतु प्रस्ताव विद्यालय विकास कोष एवं प्रबन्ध समिति (SDMC) की कार्यकारिणी समिति को प्रेषित किये जाने की कार्यवाही सम्पादित की जानी सुनिश्चित करें।

2. **राशि का उपयोग :** विद्यार्थी कोष/विकास कोष के समुचित उपयोग की दृष्टि से प्रत्येक विद्यालय स्तर पर गठित विद्यालय प्रबन्धन समिति अथवा विद्यालय विकास कोष एवं प्रबन्धन समिति उत्तरदायी होगी। यह समिति विद्यार्थी कोष शुल्क/विकास कोष शुल्क के उपयोग हेतु प्रतिवर्ष आवश्यकताओं के परिप्रेक्ष्य में प्राथमिकता तय करेगी, जिससे विद्यालय का प्रभावी संचालन सुनिश्चित किया जा सके। यथा संभव संस्था प्रधान इस कोष से स्वयं के कार्यालय (Office Chamber) पर व्यय नहीं कर सकेंगे। छात्रहित से संबंधित कार्यों को प्रथम प्राथमिकता प्रदान कर आदर्श वित्तीय मानकों/नियमों के अनुरूप पारदर्शी तरीके से राशि व्यय कर सकेंगे। कार्य योजना के अनुरूप व्यय की जाने वाली राशि के प्रस्ताव को विद्यालय विकास कोष एवं प्रबन्धन समिति (SDMC) की कार्यकारिणी समिति से स्वीकृति लिया जाना अनिवार्य होगा। अपरिहार्य स्थिति में छात्र हित में उक्त समिति की स्वीकृति के बिना व्यय किये जाने पर कार्योत्तर स्वीकृति के पश्चात ही किया हुआ व्यय नियमित माना जायेगा। दिनांक : 30.04.2016 को SDMC की साधारण सभा में करणीय कार्यों/सामग्री खरीद के संबंध में पारित प्रस्तावों में से ग्रीष्मावकाश के तुरंत पश्चात् दिनांक : 21.06.2016 को SDMC की कार्यकारिणी समिति में कार्यों की प्राथमिकता एवं अनुमानित/उपलब्ध धनराशि के आधार पर सत्रपर्यन्त कार्य योजना अनुमोदन की कार्यवाही की जानी सुनिश्चित करावें।

2.1 समय सारणी:- उपर्युक्तानुसार निर्देशित कार्यवाही निम्न समय सारणी के अनुसार सम्पादित की जानी सुनिश्चित की जावेः-

क्र.सं.	सम्पादित की जाने वाली कार्यवाही का विवरण	निर्धारित तिथि
I	SDMC की साधारण सभा का आयोजन एवं करणीय कार्यो के संबंध में प्रस्ताव पारित करना	30.04.2016
II	SDMC की कार्यकारिणी समिति में सत्रपर्यन्त कार्य योजना का अनुमोदन करवाना	21.06.2016
III	कार्य योजना को अंतिम रूप दिया जाना	30.06.2016
IV	आवश्यक लेखांकन प्रक्रिया पूरी किया जाना	15.07.2016
V	आवश्यक निविदा कार्यवाही सम्पन्न किया जाना	15.08.2016
VI	क्रयादेश/कार्यादेश जारी करना	31.08.2016
VII	आवश्यक क्रय कार्यवाही/कार्य पूर्ण करना	30.09.2016

3. **विद्यार्थी कोष/विकास कोष से किये जाने योग्य कार्य-** विद्यालय प्रबन्धन समिति अथवा विद्यालय विकास कोष एवं प्रबन्धन समिति से अनुमोदन पश्चात शैक्षिक गुणवत्ता सुधार, विद्यार्थियों हेतु बैठक व्यवस्था, पीने के पानी व बालक-बालिकाओं के लिए अलग-अलग स्वच्छ टॉयलेट्स की उपलब्धता हेतु नियत किये गये समस्त कार्य विद्यार्थी कोष/विकास कोष से कराये जा सकेंगे। विद्यार्थियों का अध्ययन सुचारू रूप से चलाने तथा व्यय की जाने वाली राशि की सार्थकता के परिप्रेक्ष्य में संस्था प्रधान की सुविधा हेतु प्रस्तावित कार्यों की सूची निम्नानुसार है :-

3.1 विद्यार्थी कोष के अन्तर्गत किये जाने वाले कार्य-

3.1.1 विद्यार्थियों के लिए पर्याप्त संख्या में दरी पट्टी, डेस्क एवं टेबल कुर्सी की कक्षा स्तर अनुसार व्यवस्था।

3.1.2 कक्षा कक्ष संचालन हेतु चॉक, डस्टर, सहायक शिक्षण सामग्री व पोस्टर्स आदि की व्यवस्था।

3.1.3 उच्च गुणवत्ता वाले फाइबर बोर्ड/श्याम पट्ट।

3.1.4 बच्चों के प्रवेश उत्सव पर नव प्रवेशित विद्यार्थियों का स्वागत, विद्यालय पहचान पत्र बनवाना व अच्छा कार्य करने वाले लोक सेवक/एन.जी.ओ. का सम्मान।

3.1.5 परिसर एवं कक्षा-कक्षों में रंग-रोगन/वॉल पैंटिग, कक्षा 1 से 5 के लिए लहर कार्यक्रम की भांति, कक्षा 6 से 8 के लिए सामान्य ज्ञान एवं जानकारी एवं कक्षा 9 से 12 के लिए महापुरुषों के चित्र, विभागीय योजनाएँ, भामाशाह एवं प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का विवरण, महापुरुषों के नाम, छात्रवृत्ति व अन्य योजनाओं का विवरण विद्यालयों में उपयुक्त स्थानों पर अंकित कराया जाना।

3.1.6 खेलकूद प्रवृत्तियों के लिए खेल सामग्री यथा-फुटबॉल, वॉलीबाल, बास्केटबॉल, नेट आदि।

3.1.7 खेलकूद प्रतियोगिताएँ, छात्र प्रवृत्तियाँ, सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ, सामाजिक प्रवृत्तियाँ, मनोरंजन उत्सव, समारोह, पुरस्कार, शाला पत्रिका, अतिथि सत्कार, निमंत्रण पत्र आदि।

3.1.8 समान/गृह परीक्षा संचालन व्यय।

3.1.9 शारदे बालिका छात्रावासों की बालिकाओं हेतु शैक्षिक गतिविधियाँ।

3.1.10 समाजोपयोगी उत्पादक कार्य (S.U.P.W.) एवं कार्यानुभव गतिविधियाँ।

3.1.11 पुस्तकालय-वाचनालय हेतु प्रत्येक विद्यालय में समाचार पत्र (हिन्दी/अंग्रेजी), पाक्षिक पत्र-पत्रिकाएँ, छोटे बच्चों की पत्रिकाएँ/महापुरुषों की जीवनियाँ व अन्य पुस्तकों की व्यवस्था।

3.1.12 विद्यालय प्रार्थना सभा एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए माईक, हारमोनियम, तबला, ढोलक, रंगोली निर्माण सामग्री, रंगोली बनाने की पुस्तकें आदि।

3.1.13 विद्यार्थियों के प्रगति रिपोर्ट कार्ड की व्यवस्था।

3.1.14 कक्षा में उच्चतम अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को प्रमाण पत्र व पुरस्कार।

3.1.15 प्रत्येक परख व परीक्षा समाप्ति के 7 दिवस की अवधि में अभिभावकों के साथ संवाद (पी.टी.ए. बैठक) व फोटोग्राफी।

3.1.16 कक्षा 8 से 12 के प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण विद्यार्थियों के साथ अभिभावकों की ग्राम/कस्बे के मुख्य मार्ग से रैली निकालना एवं फोटोग्राफी।

3.1.17 विधवा/परित्यक्ता/विशेष योग्यजन अभिभावकों के बच्चों को निःशुल्क विद्यालय पोशाक-कपड़े, जूते व मोजे (दो जोड़ी) तथा स्कूल बैग-कक्षा 1 से 5 के लिए।

3.1.18 कमरों में पंखे, वाटर कूलर, वाटर प्यूरीफायर एवं ठण्डे पानी के हेतु फ्रीज की व्यवस्था एवं विद्युत बिल/पानी का बिल/टेलीफोन बिल का भुगतान।

3.1.19 विद्यार्थियों को स्वास्थ्य, खेलकूद, शिक्षा उन्नयन, शोधकार्य आदि को प्रोत्साहित किये जाने की दशा में तीन माह में एक वाक्पीठ।

3.1.20 विद्यालय सूचना पट्ट एवं साईन-बोर्ड आकर्षक तरीके से बनवाने व 'ज्ञानार्थ-प्रवेश, सेवार्थ-प्रस्थान' संबंधी पेंटिग आदि।

3.2 विद्यालय विकास कोष संबंधी कार्य –

3.2.1 स्कूल परिसर (बाहर-अन्दर) में पेड़ कटाई-छंटाई।

3.2.2 कक्षा कक्षों की माईनर रिपेयर यथा-किवाड़, खिड़की, बिजली फिटिंग, टूट-फूट, पानी लाईन, माईनर सिविल वर्क।

3.2.3 बालिकाओं हेतु संचालित शारदे बालिका छात्रावासों का विकास।

3.2.4 विद्यालय परिसर में माँ सरस्वती की प्रतिमा (स्टेच्यू) का निर्माण।

3.2.5 पूर्व से संचालित विकास योजनाओं से डवटेल कर विद्यालय में विकास कार्य।

3.2.6 विद्यालय परिसर में पेयजल, हैण्डपम्प आदि का निर्माण (जन सहयोग व विकास योजनाओं से)

3.2.7 निर्माण कार्यों में खेलकूद मैदान चारदीवारी, वॉलीबॉल, बास्केटबॉल कोर्ट व ऑडिटोरियम आदि का निर्माण।

4. पर्यवेक्षण

4.1 संस्था प्रधान प्रत्येक माह के अन्त में विद्यार्थी कोष में उपलब्ध राशि की समीक्षा के लिए उत्तरदायी होंगे। विद्यालय पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण से संबंधित अधिकारी भी अपने निरीक्षण प्रतिवेदन में विद्यार्थी कोष की राशि के संबंध में टिप्पणी अंकित करेंगे तथा विद्यालय का प्रभावी संचालन/विद्यार्थियों के हित को दृष्टिगत रखते हुए विद्यार्थी कोष/विकास कोष के उपयोग हेतु आवश्यक होने पर संस्था प्रधान को निर्देश देने के लिए अधिकृत होंगे।

4.2 जिला शिक्षा अधिकारी-माध्यमिक/उप निदेशक (माध्यमिक) एवं निदेशालय के अधिकारी निरीक्षण के दौरान विद्यार्थी कोष/विकास कोष की राशि के उपयोग की स्थिति की समीक्षा करेंगे तथा निरीक्षण प्रतिवेदन में इसका उल्लेख करेंगे, जिससे इस राशि का विद्यालय/विद्यार्थियों के लिए प्रभावी उपयोग सुनिश्चित हो सके।

4.3 जिला शिक्षा अधिकारी संबंधित शाला प्रधानों से प्रत्येक माह के अन्त में निम्नांकित प्रारूप में सूचना प्राप्त कर विद्यालयवार अवशेष राशि व विद्यालय योजना के अनुसार प्रस्तावित कार्यों की प्रगति की समीक्षा करेंगे तथा समीक्षा पश्चात आवश्यक निर्देश संस्था प्रधानों को जारी करेंगे, जिससे विद्यालय स्तर पर विद्यालयों का प्रभावी संचालन सुनिश्चित हो सके।

क्र. स.	विद्यालय का नाम	बैंक का नाम	खाता संख्या	माह के प्रारम्भ में उपलब्ध राशि	माह में व्यय राशि	माह के अन्त में शेष राशि
1	2	3	4	5	6	7

उक्त परिप्रेक्ष्य में यह भी उल्लेखनीय है कि निर्देशों के पश्चात विद्यालयों में विद्यार्थी कोष/विकास कोष का प्रभावी उपयोग नहीं करने पर संस्था प्रधानों के विरुद्ध कार्यवाही की जावेगी।

● (सुवालाल) निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

3. गैर शैक्षिक कार्यों में कार्य व्यवस्थार्थ/ प्रतिनियुक्ति पर पदस्थापित शिक्षकों को अपने मूल पदस्थापित स्थान पर कार्यग्रहण कराने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक :शिविरा/प्रारं/शिक्षक-संस्था/एफ.2/निर्देश/प्र.नि./2016 दिनांक 23.1.16 ● समस्त उपनिदेशक, प्रारंभिक शिक्षा ● गैर शैक्षिक कार्यों में कार्य व्यवस्थार्थ/प्रतिनियुक्ति पर पदस्थापित शिक्षकों को अपने मूल पदस्थापित स्थान पर कार्यग्रहण कराने के संबंध में। ● राज्य सरकार का पत्रांकः प.13(26)शिक्षा-2/14वीं/सत्र-4/2015 दि. 14.01.2016

उपर्युक्त विषय एवं प्रासंगिक पत्र के क्रम में लेख है कि विभाग में कार्यरत शिक्षक अपने मूल पदस्थापित स्थान से अन्य विभाग जिला कलक्टर, उपखण्ड, तहसील, निर्वाचन, जिला परिषद व पंचायत समिति कार्यालय अथवा विभाग के कार्यालयों में निशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 की धारा 27 की अवहेलना कर प्रतिनियुक्ति पर चल रहे हैं। इस अधिनियम की धारा 27 में यह प्रावधान है कि किसी भी शिक्षक को दस वर्षीय जनसंख्या जनगणना, विभीषिकी राहत कर्त्तव्यों या यथास्थिति, स्थानीय प्राधिकारी या राज्य विधान मंडलों या संसद के निर्वाचनों से संबंधित कर्त्तव्यों से भिन्न किसी गैर-शैक्षिक प्रयोजनों के लिए अभिनियोजित नहीं किया जायेगा।

शिक्षकों को उक्त वर्णित कार्यों से इतर गैर-शैक्षिक कार्यों में लगाया जाता है, चुनाव संबंधी कार्य संपादित हो जाने के उपरांत भी लंबे समय तक प्रतिनियुक्ति पर रहते है। जिससे शाला में शिक्षण कार्य बाधित होता है। इस संबंध में इस कार्यालय स्तर व राज्य सरकार स्तर से भी अनेक बार निर्देशित किये जाने के उपरांत भी बहुत से शिक्षक आज भी गैर शैक्षिक कार्यों में कार्य व्यवस्थार्थ/प्रतिनियुक्ति पर है।

वर्तमान में प्रतिनियुक्ति पर कार्यरत शिक्षकों की सूची आप द्वारा ही विधानसभा प्रश्न सं. 2468 श्री हीरालाल नागर के प्रश्नोत्तर के संबंध में दी गई हैं। इस पत्र के साथ संलग्न कर एतद् द्वारा निर्देश प्रदान किये जाते हैं कि इन्हें तुरंत विभाग में मूल पदस्थापित स्थान हेतु कार्यग्रहण करने हेतु नोटिस जारी करने की कार्यवाही करें तथा कार्यग्रहण करने पर संलग्न सूचीनुसार पालना रिपोर्ट भिजवाना सुनिश्चित करें। इसके उपरांत भी कोई भी शिक्षक अपने मूल पदस्थापित स्थान पर कार्यग्रहण नहीं करता है तो आगामी माह का वेतन जब तक हम मूल पद पर कार्यग्रहण नहीं कर लेता है तब तक नहीं बनाया जाये। इसकी पालना सख्ती से नहीं होने पर वेतन आहरण अधिकारी व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार होगा।

इसके अतिरिक्त भविष्य में इसकी रोकथाम के लिए यदि विभाग में कार्यरत शिक्षक की अपने मूल पदस्थापित स्थान से अन्य विभाग जिला कलक्टर, उपखण्ड, तहसील, निर्वाचन, जिला परिषद व पंचायत समिति कार्यालय अथवा विभाग के कार्यालयों में प्रतिनियुक्ति होती है तो ऐसे शिक्षकों को उपनिदेशक, जिला शिक्षा अधिकारी व ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी सीधे ही कार्यमुक्त न करके अधोहस्ताक्षरकर्ता से अनुमति प्राप्त करेंगे।

निशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 की धारा 27 के अन्तर्गत किसी भी शिक्षक को दस वर्षीय जनसंख्या जनगणना, विभीषिकी राहत कर्त्तव्यों या यथास्थिति, स्थानीय प्राधिकारी या राज्य विधानमण्डलों या संसद के निर्वाचनों से संबंधित कर्त्तव्यों से भिन्न किसी गैर-शैक्षिक प्रयोजनों के लिये अभिनियोजित नहीं किया जायेगा। ● निदेशक प्रारंभिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

4. हैड टीचर को शैक्षिक उप समिति में सदस्य के रूप में सम्मिलित किए जाने की स्वीकृति।

आदेश

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

● क्रमांकः शिविरा-माध्य/मा/स/22423/2015-16 दिनांक 19.02.2016

इस कार्यालय के समसंख्यक आदेश दिनांक 27.02.2015 द्वारा "विद्यालय विकास एवं प्रबन्ध समिति (SDMC) एवं सम्बन्धित उप समितियों की संरचना एवं दायित्व सम्बन्धी विस्तृत निर्देश प्रदान किये गये हैं। उक्तानुसार विद्यालय प्रधानाचार्य/प्रधानाध्यापक की अध्यक्षता में "शैक्षिक उप समिति (School Academic Commitee) निर्मित की गई है। उक्त क्रम में समन्वित विद्यालयों में "हैड टीचर" को निर्देशानुसार "शैक्षिक उप समिति (School Academic Commitee)" में सदस्य के रूप में सम्मिलित किए जाने की स्वीकृति एतद् द्वारा प्रदान की जाती है।

● निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

माह : मार्च, 2016 | **विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम** | प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	विषय
1.3.2016	मंगलवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम
2.3.2016	बुधवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम
3.3.2016	गुरुवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम
4.3.2016	शुक्रवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती
5.3.2016	शनिवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम
8.3.2016	मंगलवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम
9.3.2016	बुधवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम
10.3.2016	गुरुवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम
11.3.2016	शुक्रवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम
12.3.2016	शनिवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम
14.3.2016	सोमवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम
15.3.2016	मंगलवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम, विश्व उपभोक्ता दिवस
16.3.2016	बुधवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम
17.3.2016	गुरुवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम
18.3.2016	शुक्रवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम
19.3.2016	शनिवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम
21.3.2016	सोमवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम
22.3.2016	मंगलवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम
26.3.2016	शनिवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम
28.3.2016	सोमवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम
29.3.2016	मंगलवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम
30.3.2016	बुधवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम, राजस्थान दिवस
31.3.2016	गुरुवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम
1.4.2016	शुक्रवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम
2.4.2016	शनिवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम
4.4.2016	सोमवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम
5.4.2016	मंगलवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम
6.4.2016	बुधवार	जयपुर	विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम पुनरावलोकन सत्र 2015-16
11 अप्रैल से 25 अप्रैल, 2016 तक वार्षिक परीक्षा स्थानीय कक्षाएं			
● निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर।			

जानें अपने संस्थानों को

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (I.A.S.E.)

❒ गीता बलवदा

1. पृष्ठभूमि : शौर्य,स्वाभिमान, त्याग की स्वर्णिम ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि समेटे, सिंधु घाटी जैसी पुरातन सभ्यता के अवशेष लिए पुराने राजपूताना क्षेत्र की विभिन्न रियासतों के विलय के साथ राजस्थान राज्य का उदय हुआ। सर्व प्रथम अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली के विलय से 'मत्स्य संघ' अस्तित्व में आया, फिर डूँगरपुर, किशनगढ़, बांसवाड़ा, बूँदी, झालावाड़, कोटा, प्रतापगढ़, शाहपुरा व टोंक, इन 9 रियासतों को मिलाकर 'राजस्थान संघ' बना। इसमें उदयपुर रियासत का विलय हुआ और संयुक्त राजस्थान अस्तित्व में आया। बीकानेर, जयपुर, जोधपुर व जैसलमेर रियासतें और 'मत्स्य संघ' के विलय से राजस्थान राज्य का गठन हुआ।

राजस्थान में पृथक-पृथक रियासतों में अपनी अपनी शिक्षा व्यवस्था थी। बीकानेर रियासत में शिक्षा व्यवस्था अजमेर की मिशनरी शिक्षा के सम्पर्क तथा स्वयं की अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा जैसी विशेषताओं के कारण आधुनिकता लिए हुए थी। विलय के पश्चात् राजस्थान राज्य का प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर में स्थापित किया गया।

बीकानेर के इस प्रशिक्षण संस्थान को पहले बी.एड., फिर एम.एड. तथा पत्राचार ग्रीष्मकालीन सेवारत बी.एड. स्तर की मान्यता रही और राज्य में 'नई शिक्षा नीति-1986' की क्रियान्विति पर इसे 1988 से राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान का स्वरूप दिया गया। यह यात्रा इस संस्थान की शैक्षिक गतिविधियों के उत्तरोत्तर विकास को परिलक्षित करती है। संस्थान के प्राचार्य को नोडल अधिकारी के रूप में राज्य के अन्य उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थानों एवं शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों को निर्देशन देकर इनकी गतिविधियों के संचालन में भागीदार बनाना संस्थान की शैक्षिक कार्यकुशलता का एक उदाहरण है। राजकीय व्यवस्थाओं में भी मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली की मार्गदर्शिका के अनुसार सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षण (बी.एड. व एम.एड.) तथा सेवाधीन विषय एवं शैक्षिक प्रशासन में प्रशिक्षण कार्य सम्पादित कर इस संस्थान ने निरन्तर अपनी शैक्षिक क्षमता को प्रदर्शित किया है।

2. इतिहास : राजस्थान की मरूभूमि नाम से प्रसिद्ध बीकानेर जिले का गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। शिक्षक प्रशिक्षण को सर्व सुलभ बनाने के लिए यहाँ सर्व प्रथम इसकी स्थापना 1940 में की गई। प्रारम्भ में इसे शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय स्तर की मान्यता रही। इसे 1946 में शिक्षण प्रमाण पत्र परीक्षा (सी.टी.) स्तर मिला। शिक्षण प्रशिक्षण के अन्तर्गत 1956 में इसे बी.एड. स्तर की मान्यता देते हुए महाविद्यालय में क्रमोन्नत किया गया। इस महाविद्यालय को 1970 से एम.एड. स्तर की मान्यता प्राप्त हुई। इस मान्यता से इसे राजस्थान में प्रथम स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय होने का गौरव प्राप्त हुआ। सन् 1974 में इसे ग्रीष्मकालीन सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण का केन्द्र बनाया गया तथा 1988 में राज्य में प्रथम राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान में स्तरोन्नत किया गया।

3. स्थापना : 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986' में शिक्षा को बहुउद्देश्य स्वरूप दिया गया। संसाधनों की दृष्टि से मानव संसाधन को प्रमुख माना गया और शिक्षा क्षेत्र में सेवारत शिक्षकों के व्यावसायिक संवर्धन हेतु सेवाधीन शिक्षक प्रशिक्षण पर बल दिया गया। इसी अनुपालना में सम्पूर्ण भारत की भाँति राजस्थान में भी उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान एवं शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय स्थापित किये गये। बीकानेर का यह राजकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय इस कड़ी में राज्य का प्रथम उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान स्वीकृत हुआ और सन् 1988 में इसकी स्थापना हुई। वर्तमान में राज्य में 2 उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (I.A.S.E.) एवं 8 शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय (C.T.E.) संचालित हैं।

4. मान्यता एवं स्तर : संस्थान को राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग एवं राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (N.C.T.E.) द्वारा शिक्षा सत्र 2015-16 से निम्नानुसार सेवा पूर्व प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की मान्यता एवं सीटें स्वीकृत हैं-

क्र. सं.	कक्षा	अवधि	सीटें	स्तर
1.	बी.एड.	द्विवर्षीय	150	शिक्षा स्नातक
2.	एम.एड.	द्विवर्षीय	50	शिक्षा अधिस्नातक

5. संगठन और संचालन : 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986' के अनुसार स्थापित उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान का शैक्षिक स्टाफ शिक्षा में पीएच.डी. अथवा अधिस्नातक

योग्यताधारी होता है तथा संस्थान की शैक्षिक गतिविधियों का संचालन मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा जारी गाईड लाईन के अनुसार किया जाता है।

यह संस्थान राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान-Govt. Institute of Advanced Study In Education (I.A.S.E.) है। यहाँ दो वर्षीय सेवापूर्व नियमित बी.एड और एम.एड. पाठ्यक्रम के साथ ही माध्यमिक शिक्षा में कार्यरत वरिष्ठ अध्यापक, व्याख्याता, प्रधानाध्यापक, प्रधानाचार्य और समकक्ष पदधारित शिक्षकों/शिक्षाधिकारियों के 'सेवारत प्रशिक्षण शिविर कार्यक्रम' माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर द्वारा निर्धारित केलेण्डर अनुसार वर्ष पर्यन्त चलते हैं। आई.ए.एस.ई. बनने के साथ ही सी.एस.एस. (केन्द्र प्रवर्तित योजना) बजट मद में प्रोफेसर, रीडर व अनुदेशक के पद स्वीकृत हैं। इन पदों पर कार्यरत शिक्षा सेवा अधिकारियों के लिये शैक्षिक योग्यता विषय विशेष में पोस्ट ग्रेज्युएट व प्रशैक्षिक योग्यता शिक्षा में अधिस्नातक होती है। मूलत: ये सेवारत प्रशिक्षण शिविर के लिये पद स्वीकृत हैं। इनकी गणना बी.एड. और एम.एड. के लिये निर्धारित स्टाफ में नहीं मानी जाती है। संस्थान में अंग्रेजी प्रशिक्षण केन्द्र भी संचालित है। इसमें चयनित शिक्षा अधिकारी कार्यरत हैं।

संस्थान में छात्रों के लिये हॉस्टल संचालित हैं, परन्तु वार्डन का पद स्वीकृत नहीं है। शैक्षिक स्टाफ में से ही किसी एक को हॉस्टल प्रभारी बनाया जाता है।

संस्थान में वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा द्वारा बी.एड. व एम.ए. (शिक्षा) का अध्ययन केन्द्र संचालित है। उक्त अध्ययन केन्द्र में संस्थान में कार्यरत योग्य शैक्षिक स्टाफ द्वारा शिक्षण करवाया जाता है और शैक्षिक स्टाफ में से किसी एक को इसका प्रभारी बनाया जाता है।

संस्थान में कम्प्यूटर प्रशिक्षित व्याख्याता भी कार्यरत हैं, जो बी.एड. कक्षाओं को कम्प्यूटर शिक्षा विषय में प्रायोगिक व सैद्धान्तिक कार्य के साथ ही सेवारत शिक्षकों के लिये कम्प्यूटर शिक्षा के शिविर संचालित करते हैं।

संस्थान में प्राचार्य-संयुक्त निदेशक (शिक्षा) पद के समकक्ष, एक उपाचार्य-उप निदेशक (शिक्षा) पद के समकक्ष, दो प्रोफेसर-जिला शिक्षा अधिकारी पद के समकक्ष और अनेक रीडर-प्रधानाचार्य उच्च माध्यमिक विद्यालय पद के समकक्ष तथा व्याख्याता स्तर के शिक्षा अधिकारी कार्यरत हैं।

6. उद्देश्य : उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान की स्थापना के पीछे मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली एवं राजस्थान सरकार द्वारा निम्नलिखित उद्देश्य निरूपित किये गये –

1. बी.एड. तथा एम.एड. जैसे सेवा पूर्व पाठ्यक्रम आयोजित करके माध्यमिक स्तर की शिक्षा के लिए प्रशिक्षित शिक्षक तैयार करना।
2. माध्यमिक कक्षाओं में शिक्षण करवाने वाले शिक्षकों के लिए सेवारत रहते हुए विषय एवं विषय विशेष के शिविर आयोजित करवा कर प्रशिक्षण देना ताकि उत्तम परिणाम प्राप्त हो सके।
3. माध्यमिक विद्यालय, शाला संगम तथा शिक्षकों को शैक्षिक नवाचार से अवगत करवाना।
4. माध्यमिक स्तर पर प्रयोग एवं शैक्षिक अनुसंधान सम्पन्न करवाना।
5. शैक्षिक मूल्यों, कार्यानुभव शिक्षा, पर्यावरण, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, जनसंख्या शिक्षा, कम्प्यूटर शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा तथा दैनिक जीवन में विज्ञान शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषयों में सेवारत शिक्षकों को प्रशिक्षण तथा मानव संसाधन उपलब्ध करवाना।
6. रोजगार उन्नयन के लिए कार्यक्रम बनाना।
7. समाज को उत्तम शिक्षक प्रशिक्षण के लिए प्रेरित करना, ताकि समाज में उत्कृष्ट व्यक्ति शिक्षक बनने के लिए प्रेरित हों।
8. कक्षा 1 से 8 तक शिक्षण करवाने वाले प्रारम्भिक शिक्षा के शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए दक्ष प्रशिक्षक तैयार करना।
9. एम.एड., एम.फिल., पीएच.डी. के लिए संसाधन उपलब्ध करवाना।

7. संस्थान के प्रभाग : मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली की गाईड लाईन के अनुसार संस्थान में निम्नानुसार प्रभाग गठित किये हुए हैं। प्रत्येक प्रभाग का प्रभारी एक-एक शिक्षा अधिकारी है तथा इसके सहयोग के लिए संस्थान में शैक्षिक स्टाफ पद स्थापित है।

1. **शैक्षिक आधार प्रभाग-** इस प्रभाग द्वारा सेवा पूर्व प्रशिक्षण बी.एड. तथा एम.एड. की गतिविधियों का संचालन किया जाता है। साथ ही संस्थान की प्रतिदिन की शैक्षिक व्यवस्था का संचालन भी यह प्रभाग करता है।
2. **प्राथमिक शिक्षा प्रभाग-** यह प्रभाग जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाईट) के शिक्षक प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण एवं व्यवसायोन्नयन, प्रारम्भिक शिक्षा में अनुसंधान, प्रयोग एवं प्रायोजनाएँ, शिक्षक संदर्शिका, प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वजनीकरण आदि के कार्य सम्पादित करवाता है।
3. **सेवारत शिक्षा एवं प्रस्तार सेवा प्रभाग-** इस प्रभाग का मुख्य कार्य सभी प्रभागों से समन्वय करके अभिनवन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की रूप रेखा तैयार करना है। इसके अतिरिक्त यह प्रभाग सेवाधीन शिक्षक प्रशिक्षण के लिये नये क्षेत्रों की तलाश करना, सेवारत प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षणार्थियों की शिविर में उपस्थिति सुनिश्चित करना और प्रशिक्षणों का संस्थापन संधारण करने जैसे अन्य संबंधित कार्य भी सम्पादित करता है।
4. **शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग-** इस प्रभाग के मुख्य कार्य शिक्षण में उपयोगी आवश्यक दृश्य-श्रव्य सामग्री का विकास एवं निर्माण करना, कम लागत की शिक्षण सामग्री तैयार करना, विभिन्न विषयों में सॉफ्टवेयर तैयार करना, कम्प्यूटर आधारित अधिगम का विकास, प्रशिक्षण एवं मानव संसाधन की व्यवस्था करना है। कम्प्यूटर शिक्षा भी इसी प्रभाग के अन्तर्गत आती है।

कम्प्यूटर शिक्षा प्रशिक्षण : बी.एड. एवं एम.एड. कक्षाओं में विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम के अनुसार कम्प्यूटर शिक्षण

संस्थान में सम्पन्न करवाये जाते हैं तथा माध्यमिक शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षा अधिकारियों को प्रशिक्षण शिविर लगाकर कम्प्यूटर शिक्षा उपलब्ध करवाई जा रही है ताकि वे अपने विद्यालयों में माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को कम्प्यूटर ज्ञान उपलब्ध करा सके।

5. **योजना प्रभाग-** इस प्रभाग के अन्तर्गत विभिन्न संस्थाओं, शैक्षिक नियोजकों, प्रशासनिक अधिकारियों, जिला शैक्षिक अनुसंधान मंच (डर्फ) को शैक्षिक नियोजन तथा नीतिगत राय देना, विस्तृत शैक्षिक उन्नयन योजनाएँ व प्रायोजनाएं बनाना, माध्यमिक शिक्षा के प्रधानाध्यापकों एवं प्रधानाचार्यो को शैक्षिक प्रशासन, नियोजन, लेखा सम्बन्धी उन्नयन के लिए प्रशिक्षण देने जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य हैं। यह प्रभाग नोडल अधिकारी के निर्देशन में राज्य के सभी आई.ए.एस.ई. व सी.टी.ई. से त्रैमासिक रिपोर्ट मँगवाकर इनकी गतिविधियों की प्रगति का संधारण करता है।

6. **शोध प्रभाग-** यह प्रभाग माध्यमिक विद्यालयों के संस्था प्रधानों के लिए शिविर आयोजित कर इनके माध्यम से विद्यालय की शैक्षिक समस्याओं की पहचान, इनको प्रभावित करने वाले कारक एवं इनके निवारण के लिए क्रियात्मक अनुसंधान के शिविर आयोजित करता है, जिससे शैक्षिक समस्याओं का विद्यालय स्तर पर निराकरण होकर सफल विद्यालय संचालन में सहयोग मिलता है। यह प्रभाग संस्थान के शैक्षिक स्टाफ को आवश्यक निर्देशन प्रदान कर शोध कार्य सम्पन्न करवाता है।

7. **विशिष्ट शिक्षा प्रभाग-**इस प्रभाग द्वारा व्यावसायिक शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, मूल्य शिक्षा, मूल्यांकन प्रणालियों के विकास से संबंधित कार्य सम्पन्न किया जाता है।

लेखिका राज्यस्तरीय सम्मानित शिक्षक है
रीडर, राजकीय उच्च अध्ययन
शिक्षा संस्थान, बीकानेर

बुद्ध की नैतिक शिक्षा

❒ भारत दोसी

बुद्ध ने अपने जीवन को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया जो उपदेशात्मक नहीं व्यावहारिक था। उन्होंने मोक्ष, निर्वाण को नयी परिभाषा दी उन्होंने कहा शान्ति व शुभ अवस्था की प्राप्ति जो दुख, इच्छा, पतन व रोग से मुक्त होती है वही मोक्ष, निर्वाण है।

बुद्ध की नैतिक शिक्षायें अत्यन्त सीधी-सादी थी। उन्होंने कहा की प्रत्येक व्यक्ति अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है मोक्ष अर्थात् शान्ति व शुभ की प्राप्ति के लिए, उच्च जीवन की प्राप्ति के लिए सत्कर्म जरूरी है बुरे कर्म इस मार्ग में बाधक होते हैं शेष जीवन को सुखी बनाने के लिए अच्छे कार्य करने चाहिए। बुद्ध पूर्वजन्म पुनर्जन्म जैसी बातों को नहीं मानते थे वे इसी जीवन में अच्छे कार्य करने की प्रेरणा देते थे। और अच्छे कार्य करने की जरूरत इसलिए भी बताते थे कि आने वाली पीढ़ी भी अच्छे कार्य करें।

बुद्ध ने कहा कि मनुष्य को ऐश्वर्य का जीवन व आध्यात्मिक जीवन दोनों की चरम सीमा से बचना चाहिए। ज्यादा सुख सुविधा के साधन भी दुख का कारण है वही ज्यादा धार्मिकता के लिए किए जाने वाले तप, उपवास, संकल्प भी दुख देते हैं इसलिए मध्य मार्ग को अपनाना चाहिए। उनका मध्यम मार्ग से तात्पर्य संयम का जीवन रहा है। उन्होंने उदारता, शुद्धता, सत्य, इच्छाओं को नियंत्रण में रखने पर बल दिया। उन्होंने कहा प्रत्येक मानव को प्रेम, करूणा, दूसरों की सफलता पर प्रसन्नता व सभी के प्रति समानभाव का प्रयोग करना चाहिए। बुद्ध का सबसे ज्यादा जोर समानता पर रहा है वे मनुष्य में ऊँच-नीच, वर्ण या जाति के आधार पर श्रेष्ठ आदि को गलत मानते थे।

बुद्ध ने व्यक्ति को बुरी आदतों से बचने के लिए कहा वे बुरी भावना, क्रोध, ईर्ष्या, गर्व, कपट, हठधर्मिता आदि को बुरी आदतें बताते है। इसके लिए वे कहते कि किसी को न मारें, चोरी न करें, झूठ न बोलें, शराब न पीयें, विवाह के पश्चात पत्नी के अतिरिक्त किसी स्त्री से शारीरिक सम्बन्ध न रखें। उनकी शिक्षाओं का केन्द्रीय विचार पवित्र जीवनयापन था। उनके दिए अष्ठांग मार्ग निर्वाण की ओर ले जाते है सम्यक वचन, सम्यक आचरण, सम्यक जीवन, सम्यक प्रयत्न, सम्यक स्मृति, सम्यक समाधि, सम्यक संकल्प व सम्यक दृष्टि रखनी चाहिए। यहाँ सम्यक से तात्पर्य अच्छा है। अर्थात अच्छे वचन बोलना चाहिए जो दूसरों को दुख ना दे अच्छा आचरण करना चाहिए अर्थात् चोरी नहीं करना, झूठ ना बोलना, सेवा करना आदि। अच्छा जीवन से उनका अर्थ समानता, भाईचारे, बराबरी से रहा है अच्छा प्रयत्न से तात्पर्य किए जा रहे कार्यों में ईमानदारी होनी चाहिए। अच्छी स्मृति का अर्थ है कि जीवन में अच्छी बातों को याद रखें, गलत करने वालों को माफ करें, अच्छी समाधि से उनका अर्थ सोच को वैज्ञानिक बनाए रखने से है जिसमें बदलाव की सम्भावना होनी चाहिए। अच्छा संकल्प अर्थात् जो भी निश्चित करें वह मानव के हित के लिए हो और अच्छी दृष्टि का अर्थ है कि विचारों की शुद्धता हो प्रत्येक विचार को जानने के बाद ही माने। किसी ने कहा इसलिए मान लेना, कहीं पढ़ा या देखा इस लिए मान लेना गलत है प्रत्येक विचार को कसौटी पर कसें फिर ही माने।

उन्होंने अपने संघ के भिक्षु-भिक्षुणियों के लिए भी कुछ बातें अनिवार्य की थीं। पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन, पीले वस्त्र, चावल हेतु बर्तन, उस्तरा, सुई और रंगने का सामान के अतिरिक्त अपने पास और कुछ नहीं रखने का नियम बनाया यह उस समय के अनुरूप था। इसी तरह से उन्होंने नैतिक संहिता बनाई जिससे नैतिकता जाग्रत हुई। एक बार उनकी माताजी उनके लिए सर्दी से बचने का वस्त्र बना कर लाई तो बुद्ध ने लेने से इंकार कर दिया उन्होंने कहा कि मठ के सभी भिक्षुओं के लिए हो तो ही वे लेंगे। ऐसा आदर्शवादी व्यक्तित्व था उनका। उनकी प्रेरणा से ही शिक्षा के लिए जातक कथाएँ बनाई गई जो कि मानव को श्रेष्ठ बनने के लिए आज भी शिक्षा देती है। बुद्ध ने जो समझा और प्रचार किया उसके अनुरूप अपने जीवन में आचरण भी किया प्रेम सरलता, त्याग उनके जीवन के आदर्श ही नहीं थे बल्कि उन्होंने उसे अपना भी लिया था। उनकी शिक्षा का केन्द्र पवित्र जीवनयापन था और स्वयं भी पवित्र जीवन बिताया। इससे न सिर्फ राजा, शासक, समाज के उच्च वर्ग वरन आम आदमी भी प्रभावित हुए।

58/5, मोहन कॉलोनी, बांसवाड़ा राज.
मो. 9799467007

परीक्षा विशेष

बोर्ड परीक्षा में केन्द्राधीक्षक की भूमिका

❑ अरुण कुमार शर्मा

आगामी 3 मार्च से सत्र 2015-2016 की माध्यमिक व उच्च माध्यमिक परीक्षाएँ संचालित होने जा रही है उक्त परीक्षाएँ सफलतापूर्वक संचालित हो इसकी समस्त जिम्मेदारी माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर एवं शिक्षा विभाग की है इन परीक्षाओं के सफलतापूर्वक संचालन से राज्य की प्रतिष्ठा एवं छात्र/छात्राओं का भविष्य जुड़ा होता है। अत: शिक्षा विभाग के समस्त अधिकारीगण, प्रधानाचार्य, व्याख्याता, अध्यापक व कार्मिक एक दलीय भावना से काम करते हुए शिक्षा बोर्ड के साथ एक उचित सामंजस्य बैठाये, यह अति आवश्यक है। इन परीक्षाओं के संचालन का केन्द्र बिन्दु एक केन्द्राधीक्षक होता है। वर्तमान परिदृश्य में कई विद्यालयों को आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय में क्रमोन्नत कर लगभग छ: हजार नए प्रधानाचार्य को उक्त विद्यालयों में पदौन्नत किया गया है अत: इन प्रधानाचार्य को केन्द्राधीक्षक के रूप में विभाग एवं बोर्ड के नियन्त्रण व दिशा निर्देशन में अपने कर्तव्यों का निर्वहन उचित सतर्कता के साथ करना है। इन प्रधानाचार्यों में से अधिकांश ऐसे हैं जिनका उक्त परीक्षाओं को संचालित करवाने का पहला अनुभव है अत: उनके लिए निम्नांकित बातों को जानना व समझना अति आवश्यक है। केन्द्राधीक्षक यह सुनिश्चित कर लें कि प्रश्न-पत्रों के साथ प्राप्त सामग्री में केन्द्र कोड सील, रबड़ सील, पीतल सील, वर्ण अक्षर सील, परीक्षार्थियों के उपस्थिति-पत्रक, परीक्षा कार्यक्रम, केन्द्राधीक्षक, वीक्षक व परीक्षार्थियों हेतु निर्देश प्रपत्र (गोपनीय प्रपत्र 21, 22 व 23), अन्दर के बण्डलों पर चिपकाने हेतु प्रपत्र (25बी, 25ए व 25 सी), अनुपस्थिति विवरण पत्र (26) केन्द्र व्यय बिल इत्यादि प्राप्त हो गये हैं। प्रश्नों-पत्रों को जिस अलमारी में सुरक्षित किया जाता है उसके एक ताले की चाबी केन्द्राधीक्षक तथा दूसरे ताले की चाबी अतिरिक्त केन्द्राधीक्षक द्वारा रखा जाना अनिवार्य है।

प्रश्न-पत्रों के लिफाफे को आलमारी से निकाले जाने पर लिफाफे पर परीक्षा, विषय, दिनांक, वार की जांच सही के चिह्न के साथ केन्द्राधीक्षक व अतिरिक्त केन्द्राधीक्षक को ही करनी होगी। परीक्षा प्रारम्भ से 15 मिनिट पूर्व ही प्रश्न-पत्र लिफाफा पूर्ण जाँच के साथ खोला जाना होगा। प्रश्न-पत्रों को परीक्षा कक्षा-कक्ष तक पहुंचाने की जिम्मेदारी पर्यवेक्षकों को सौपी जाये। यदि प्रश्न पत्र कम प्राप्त होते हैं तथा अपरिहार्य स्थिति बनती है तो केन्द्राधीक्षक जिन परीक्षार्थियों को प्रश्न प्राप्त नहीं हुए हैं उन्हें एक अलग कक्ष में बैठा दें व प्रश्न पत्र को लिखवा दे। जितना समय प्रश्न पत्रों को लिखवाने में लगे उतना ही अतिरिक्त समय परीक्षार्थियों को दिया जाना होगा । शेष बचे प्रश्न-पत्रों को परीक्षा समाप्ति पश्चात अलग पैकेट बना संग्रहण केन्द्र पर लौटाया जाना होगा। साथ ही परीक्षावार शेष बचे प्रश्न-पत्रों का लेखा बोर्ड को दिया जाना होता है।

परीक्षार्थियों को दी जाने वाली उत्तर पुस्तिकाओं को वितरण से पूर्व जाँच लें कि वे क्षतिग्रस्त तो नहीं हैं। उच्च माध्यमिक की उत्तर पुस्तिका 32 पृष्ठ तथा माध्यमिक की उत्तर पुस्तिका 24 पृष्ठ की होती हैं क्षतिग्रस्त व बिना क्रम संख्या की उत्तर पुस्तिका को एक स्टाक रजिस्टर से घटाकर उन्हें बोर्ड को लौटाया जाना होता है, यदि गलती से क्षतिग्रस्त उत्तर पुस्तिका परीक्षार्थी को आवंटित हो जावें तथा परीक्षार्थी उस पुस्तिका में प्रश्न पत्र हल कर चुका हो तो उस उत्तर पुस्तिका पर क्षतिग्रस्त की टिप्पणी करें तथा बोर्ड की मोहर लगा देवें लेकिन हस्ताक्षर नहीं करें तथा परीक्षार्थी को नई उत्तर पुस्तिका हल करने को आवंटित करें, अब दोनों उत्तर पुस्तिका को एक साथ बांधा जाना आवश्यक है।

यदि छात्र द्वारा पूरक उत्तर पुस्तिका मांगी जाती है तो उसे वह अवश्य दें लेकिन केन्द्राधीक्षक यह सुनिश्चित कर लें कि छात्र की पूर्व उत्तर पुस्तिका भर चुकी हैं । केन्द्र पर उत्तर पुस्तिकाओं का स्टाक रजिस्टर में इन्द्राज किया जाना अनिवार्य हैं तथा परीक्षा समाप्ति पर गोपनीय प्रपत्र 29 में सूचना बोर्ड को दी जानी होती है। छात्रों को उत्तर पुस्तिकाओं पर आवंटन से पूर्व अंग्रेजी वर्गमाला की 5 सीलों में से एक सील लगाई जानी होती है साथ ही बोर्ड की सील भी लगी हो यह सुनिश्चित कर लें। यदि परीक्षार्थी अनुपस्थित हो तो उत्तर पुस्तिका की सील को निरस्त कर अगले परीक्षा के दिन उपयोग मे लें उत्तर पुस्तिका को उपयोग में लिए जाने वाले दिन हेतु नियत वर्ण की सील लगा दे साथ ही केन्द्राधीक्षक व परीक्षा प्रभारी लघु हस्ताक्षर करें। उक्त वर्ण की सीलों को उत्तर पुस्तिका पर लगाये जाने का इन्द्राज आवश्यक रूप से करना होगा । साथ ही जितनी उत्तर पुस्तिकाऐं किसी वीक्षक को परीक्षार्थियों को आंवटन हेतु दी गई हैं उसका इन्द्राज भी अवश्य करें उत्तर पुस्तिका का बंडल बांधते समय केन्द्राधीक्षक, अतिरिक्त केन्द्राधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं परीक्षा प्रभारी द्वारा प्रमाणीकरण करवाया जाना अनिवार्य है इस हेतु बोर्ड कार्यालय से प्राप्त प्रपत्र 27 भरा जाना होता है। परीक्षक को भेजे जाने वाले बंडल में आवंटित उत्तर पुस्तिकाओं के साथ-साथ अनुपस्थिति विवरण पत्र (गोपनीय प्रपत्र 26) तथा परीक्षक प्रति (क्रोस प्रश्न पत्र) रखी जानी है। बंडल पर गोपनीय प्रपत्र 28 चस्पा किया जाना हैं । परीक्षा कक्ष में वीक्षक ड्यूटी लगाते समय 25 परीक्षार्थियों पर एक ही वीक्षक लगाना है तथा परीक्षार्थियों की संख्या 25 से 50 होने पर दो वीक्षक नियुक्त किये जाने है । दो वीक्षक नियुक्त किये जाने पर उस परीक्षा कक्ष में पर्यवेक्षक नहीं लगाना है । दो से चार कक्षों पर एक पर्यवेक्षक लगाया जाना हैं एक कक्ष में कोई पर्यवेक्षक नहीं लगेगा । वीक्षकों से इस आशय का प्रमाण पत्र लेना होता है कि उक्त केन्द्र पर उनके निकट संबंधी परीक्षार्थी परीक्षा नहीं दे रहे हैं। केन्द्राधीक्षक परीक्षा के दिन वीक्षक की ड्यूटी लगाते समय उसका विषय अवश्य ध्यान रखेगा ताकि परीक्षा विषय से संबंधित विषय अध्यापक की वीक्षक में ड्यूटी नहीं लगाई जावे इस प्रकार उक्त निर्देशों व नियमों की पालना करने पर बोर्ड परीक्षा संचालित करने में केन्द्राधीक्षक को निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होगी ।

व्याख्याता, रा.उ.प्रा.वि. देवली टोंक
मो. 7023537431

विद्यालय योजना

विद्यालय और प्रबंधन समिति

❒ रामनिवास शर्मा

हर कोई व्यक्ति अपने जीवन में सफल होना चाहता है। अपने लक्ष्य निर्धारित कर योजना बनाता है। किसी कार्य को अच्छी तरह नियमितता के साथ पूरे मनोयोग से कर व्यवस्थित ढंग के साथ अंजाम देना चाहता है। बिना योजना बेहतर ढंग से काम करने पर तो यदा-कदा बिल्ली के भाग का छींका ही टूट पाता है। ऐसे लोगों में से अधिकांश लक्ष्य छू लेने से पहले ही चारों कोने चित होकर धराशायी हो जाते हैं। लक्ष्य प्राप्ति की निश्चितता तो योजना बनाकर अंजाम देने से ही संभव है। पर अफसोस कुछ लोग योजना बनाते नहीं और कुछ योजना के मुताबिक काम करते नहीं। कभी-कभी तो हमारे लक्ष्य ही स्पष्ट नहीं होते। या तो वे विशिष्टता के अभाव में दृष्टिगोचर नहीं होते या ऐसे लक्ष्यों का निर्धारण करने की गलती कर बैठते हैं जिन्हे प्राप्त करना ही मुमकिन नहीं होता, या वे व्यावहारिक नहीं होते, जिनकी प्रगति को समयबद्धता के साथ मापा नहीं जा सकता। कभी-कभी तो यही तय नहीं कर पाते कि अमुक लक्ष्य कब तक प्राप्त कर लेंगे, ऐसे में लक्ष्य प्राप्त करने में शंका ही बनी रहती है।

सफलता का मूल मंत्र है-'योजना बनाकर सटीक तरीके से काम को अंजाम देना।' राजस्थान के शैक्षिक जगत् में भी 1968 में कोठारी आयोग की सिफारिश पर विद्यालय योजना की रूपरेखा बनाई गयी। विद्यालय की आवश्यकताओं को मध्यनजर रखते हुए 1972-73 से वार्षिक तथा दीर्घकालिक योजनाएँ बनाई जाने लगी हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में माइक्रोप्लानिंग व सत्ता के विकेन्द्रीकरण का समावेश कर नया कलेवर प्रस्तुत किया। गरीबो-वंचितों, पिछड़ों और निःशक्तजन का विशेष खयाल रखा गया है। शत प्रतिशत नामांकन ठहराव और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ 0% ड्राप-आउट का लक्ष्य रखा गया है।

परन्तु सुविधाओं की कमी से जूझते स्कूल और जन जुड़ाव की कमी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा न होना लक्ष्य प्राप्त करने में बाधक बन रही हैं। समय-समय पर बदलती शैक्षिक चुनौतियों के कारण विद्यालय योजना में भी परिवर्तन-परिवर्द्धन किए जाते रहे हैं। निःशुल्क शिक्षा अधिनियम की धाराओं में बालमन के उफनते सवालों का जवाब मिलता है। मुर्गा बनाकर क्या इंसान बना पाओगे? चलो मैं पढ़ने में कमजोर रहा पर तू तो क्या तेरा बाप भी पास नहीं हो पायेगा, ऐसा सुन घर बैठे बाप का अपमान क्यों? डण्डे से हाथ टूटे या सिर फूटे परवाह ही नहीं तो कैसी गुरु की चोट विद्या की पोट? गलत उत्तर पर शून्य अंक दिए पर माथे पर चार सलवट क्यों? जब पढ़ाया कक्षा को जाता है फिर अपेक्षा व्यक्तिगत क्यों? शारीरिक व मानसिक प्रताड़ना का शिक्षा की गुणवत्ता से क्या वास्ता? इन सब सवालों का समाधान इस अधिनियम में निहित हैं, इतना ही नहीं हम पीने के स्वच्छ पानी को मोहताज क्यों? हमारे बैठने को हवादार कक्षा-कक्ष उपलब्ध क्यों नहीं? शिक्षा के सार्वजनीकरण में भवन की कमी से जूझ रहे विद्यालयों को भवन, उनकी सुरक्षा को चहारदीवारी, जहाँ आवश्यक हों अतिरिक्त कक्षा-कक्ष बालक-बालिकाओं के लिए अलग-अलग शौचालय, निशक्त विद्यार्थियों के लिए रेम्प की व्यवस्था, कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट की सुविधा आदि की व्यवस्था के लिए एस.एस.ए. व रमसा प्रतिबद्ध हैं। इसके बावजूद भी सरकारी असरकारी नहीं हो पा रहे हैं। लोग राज के स्कूल को अपना नहीं मानते। राज का विद्यालय आपका अपना विद्यालय की अवधारणा को मूर्त रूप देने के लिए स्कूल प्रबंधन समिति का गठन किया गया है। इस समिति में विद्यार्थियों के माता-पिता में से अध्यक्ष, गरीबों-वंचितों के नुमाइन्दे, जनप्रतिनिधि व शिक्षाविद शामिल हैं। अपने बच्चों के बारे में चिंता और चिंतन माँ-बाप से ज्यादा कर भी कौन सकता है? अब प्रतिमाह विद्यालय प्रबंधन समिति की बैठक में मिलजुलकर समस्याओं का समाधान करेंगे। समस्याओं से निजात पाने की दिशा में सोचेंगे कि विद्यालय की तात्कालिक व दूरगामी आवश्यकताएँ क्या हैं? उनकी पूर्ति कब व कैसे होगी? इन्हें विद्यालय योजना में सम्मलित कर क्रियान्विति के चरणों में दायित्वों का निर्धारण करेंगे कि कौन क्या काम करेंगे? इसका तरीका क्या होगा? कार्य कब शुरू होगा और कब पूरा? इसकी पूर्ति में कितने जन, धन की आवश्यकता होगी? आय-व्यय पर कमेटी का नियंत्रण रहेगा। अब अध्यापक समय पर आकर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देंगे। अभिभावक आते नहीं या स्कूल वाले बुलाते नहीं की आँख मिचौनी नहीं होगी। अपनों की बात का अपनों के बीच खुलापन होगा। न होगा लुकाव-छुपाव, वास्तविक स्वरूप सबके समान होगा। गाँव का विद्यालय-गाँव के कर्ता-धर्ता फिर समुदाय और स्कूल के बीच फासला कहाँ रह पायेगा? अब न होगी धन की कमी और न होगी मन की कमी। अब न जूझेंगे अभावों से स्कूल और न होगा शिक्षा की गुणवत्ता से समझौता, न होगा बालमन पर अन्याय। तो फिर देर किस बात की, आज का काम कल पर क्यों छोड़े?

कई कल आये और कई कल गये, पर आज तो सिर्फ आज है। विद्यालय की ओर कदम बढ़ाकर आपके अपने विद्यालय को सँवारने का संकल्प करें। अब जल्द ही योजना में प्रबंधन समिति का दिखेगा असर तो विद्यालयों की मिटेगी कसर।

प्रधानाचार्य
रा.जो.मो. ब.उ.मा.वि.,
लक्ष्मणगढ़ (सीकर)

जब तक जीना, तब तक सीखना यानि अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।

व्यर्थ बोलने की अपेक्षा मौन रहना ही अच्छा है

-स्वामी विवेकानन्द

सफलता का सूत्र

सकारात्मक सोच

❒ डॉ. गिरीश दत्त शर्मा

अर्थवाद के इस भौतिक युग में अनेक व्यक्ति विभिन्न प्रकार के मानसिक तनावों, कुण्ठाओं एवं अवसाद से घिरे मिलते हैं। निराशा हताशा उनके जीवन में इतनी गहरी पैठ कर चुकी होती है कि सुख के क्षणों में भी उन्हें अघटित अनहोनी आशंकित छाया नजर आती है जो सुख के माधुर्य को कषाय बना देती है। इसका एक कारण जहाँ तीव्र गति से बदलती सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप सामंजस्य करने की क्षमता एवं साधनों का अभाव है वहाँ दूसरी ओर उनकी मानसिक सोच भी एक बड़ा कारण है। जीवन में आने वाली बाधाओं, विपत्तियों एवं विफलताओं से वे इतने व्यथित एवं आहत हो जाते हैं कि उन्हें प्रत्येक कार्य की सफलता में संदिग्धता नजर आने लगती है। उनका आत्मविश्वास, संकल्पशक्ति और निर्णय लेने की क्षमता चूक जाती है, उनकी सोच नकारात्मक हो जाती है। परिणामतः न तो उनका व्यक्तित्व ही निखर पाता है और न आगे बढ़ने की क्षमता शेष रह जाती है उनकी विवशता और खीज जो न केवल स्वयं के लिए अपितु परिवार के लिए भी कष्टप्रद होती है। इससे सम्पूर्ण पारिवारिक वातावरण बोझिल बन जाता है।

इन सब बातों के निराकरण और मुक्ति का एक ही उपाय है, व्यक्ति को अपनी सोच में बदलाव लाना। नकारात्मक के स्थान पर सकारात्मक सोच बनाना। उदाहरण के लिए पानी से आधे भरे हर गिलास को दो प्रकार से सोचा और व्यक्त किया जा सकता है। एक गिलास आधा खाली है। दूसरा-गिलास भले ही पूरा नहीं भरा है वरन् आधा तो भरा है। उपर्युक्त दोनों में स्थिति तो एक ही है परन्तु सोचने का दृष्टिकोण अलग-अलग है। प्रथम वाक्य में नकारात्मक सोच की झलक मिलती है, जबकि दूसरे में सकारात्मक एवं आशावादी दृष्टिकोण दिखायी देता है। ठीक यही स्थिति जीवन में देखने को मिलती है। संसार में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति रहा हो जिसके जीवन में कभी कष्ट अथवा दुःख नहीं आये हों। परन्तु जिन्होंने जीवन को संघर्ष मानकर दुःखों को चुनौती के रूप में स्वीकार किया, उनका सामना किया और बिना किसी अवसाद विषाद के उनसे-जूझते रहे वे निरन्तर आगे बढ़ते रहे और महापुरुष कहलाये। इसके पीछे एक ही कारण था-उनकी जीवन के प्रति सकारात्मक सोच। जो व्यक्ति दुःख के क्षणों में भी सुख के कतिपय पल खोजने की चेष्टा कर उन्हें आनन्दपूर्वक भोगने की चेष्टा करते हैं उन्हें निराशा और अवसाद नहीं घेरते। रात्रि के गहन अन्धकार में तारों के नगण्य प्रकाश के सहारे आगे बढ़ने की इच्छाशक्ति रखने वाले व्यक्ति उन व्यक्तियों की अपेक्षा अपने गंतव्य पर शीघ्र पहुँच जाते हैं जो भोर के प्रकाश की प्रतीक्षा में एक स्थान पर बैठकर रात्रि व्यतीत होने की प्रतीक्षा करते हैं। निराशा व्यक्ति में उत्साह एवं प्रेरणा को समाप्त कर देती है परन्तु सकारात्मक सोच विपत्ति में धीर गम्भीर बनाये रखती है, व्यक्ति में उत्प्रेरणा और आत्म संबल उत्पन्न करती है। संसार में ऐसे कितने ही व्यक्ति मिल जायेंगे जो शारीरिक रूप से अक्षम और विकलांग होते हुए भी विविध प्रकार के क्षेत्रों में अपनी संकल्प शक्ति एवं सकारात्मक सोच के कारण कीर्तिमान पर कीर्तिमान अर्जित करते रहे हैं।

नकारात्मक सोच से व्यक्ति में मानसिक तनाव एवं कुण्ठाएं तो जन्म लेती हैं उनमें हीनता की भावना भी घर कर जाती है। व्यक्ति सामाजिक जीवन से विमुख होकर एकान्त की ओर दौड़ता है। उसके अन्दर निष्क्रियता आ जाती हे। वह अपने को भाग्य के भरोसे छोड़कर भाग्यवादी बन जाता है, जीवन को निरर्थक मानकर वह अपने अस्तित्व को ही धिक्कारने लगता है। जबकि सकारात्मक सोच व्यक्ति को निरन्तर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हुई उसे उद्यमी बनाती है। सफलताएँ भी उद्यमी पुरुष का ही वरण करती हैं। कहा भी है-

उद्योगिनं पुरुर्षसिंह मुपैति लक्ष्मीः
दैवेन देयमिति का पुरुषाः वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्म शक्त्या,
यत्ने कृते यदि न सिद्धति कोडत्र दोषः।।

सकारात्मक सोच वाले व्यक्ति कर्म को अपना मूल मन्त्र मानते हैं। वे अनवरत रूप से कर्मशील बने रहते हैं। उनके अनुसार-

कर्मभूमि है निखिल महीतल,
जब तक उनकी काया।
तब तक है जीवन के अणु अणु
में कर्तव्य समाया।।

यही नहीं एक सकारात्मक सोच विघटन के स्थान पर रचनात्मक कार्य को प्रोत्साहन देती है। रचनात्मक कार्य करते रहने से व्यक्ति को आत्म संतोष मिलता है, सुख की अनुभूति होती है, समाज को योगदान मिलता है, जीवन की सार्थकता का अनुभव करता है। कार्य की संलग्नता में व्यक्ति को दुःखों और अभावों को सोचने का अवकाश ही नहीं मिलता फिर दुःख निराशा, कुण्ठा स्थान इत्यादि उसके जीवन में कैसे पा सकती है? यह एक वास्तविक तथ्य है कि यदि हम निरन्तर नीचे की ओर देखते हुए ऊँचाई की ओर बढ़ने का प्रयत्न करें तो ऊँचा उठना असम्भव है। परन्तु जो व्यक्ति अपना रचनात्मक लक्ष्य रखते हुए आगे बढ़ना चाहते हैं उन्हें निश्चित रूप से लक्ष्य की प्राप्ति होगी इसमें कोई सन्देह नहीं। अतः यदि आप अपने व्यक्तित्व को सार्थक और अपने जीवन को प्रगतिशील बनाना चाहते है तो सकारात्मक सोचिए और रचनात्मक कार्य कीजिए क्योंकि-

जीवन का उद्देश्य नहीं हैं
श्रान्त भवन में टिक जाना।
किन्तु पहुँचना उस सीमा तक,
जिसके आगे शह नहीं है।।

फिर देखिए मंजिलें स्वयं आपके कदम चूमेंगी।

4/82, चौटाला रोड, वार्ड 23,
संगारिया (राज.) 335063
मो. 8561069369

> **स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन व मस्तिष्क का निवास होता है।**
> -अरस्तु

बाल मनोविज्ञान

क्लिप्टोमेनिया: आवश्यक है निदान

❑ पूर्णिमा मित्रा

शिक्षण कार्य करते समय अक्सर अध्यापकों के सामने अनेक चुनौतियां आती हैं। इनमें विशिष्ट बालकों जैसे मंदबुद्धि, अतिचंचल, संकोची, उद्दंड, बालकों के दोषों का निदान और निराकरण करना है, ताकि ऐसे बच्चों की अधिगम क्षमता और समझ बढ़ सके। पिछले कुछ समय से स्कूली छात्रों में क्लिप्टोमेनिया से ग्रसित छात्रों की संख्या में इजाफा हो रहा है। पहले भारत में जहाँ यह रोग, अभावग्रस्त परिवारों के बच्चों में देखने में आता था। वहीं यह रोग मध्यवर्गीय परिवार के बच्चों को भी अपनी जकड़ में ले रहा है।

बाल मनोवैज्ञानिकों के अनुसार अपनी संतान के प्रति उपेक्षा, क्रूरता, महत्वाकांक्षा, संवादहीनता, ज्यादा संतान होना, वगैरह कई ऐसे कारण है, जिसकी वजह से बच्चों में यह रोग पनप जाता है।

एक बार इस रोग की चपेट में आने से बालक की मनःस्थिति बड़ी विचित्र हो जाती है। ऐसे बालकों के अंदर किसी भी चीज को उठाने की तीव्र इच्छा उत्पन्न होने लगती है। जब तक वह वस्तु प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक उसमें एंजाइटी बनी रहती है। इस दौरान उसका किसी काम में मन ही नहीं लगता। अभिभावकों या शिक्षकों की समझाइश का उस पर कोई असर नहीं होता। इसका परिणाम यह होता है कि बालक सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़ जाता है। चोरी करने वाले बालकों और क्लिपटोमेनिक बालकों को प्रायः एक ही जैसा समझा जाता है, सो कोई बालक जब विद्यालय या अन्य स्थान में कोई चीज उठाकर अपने पास रख लेता है, तो बड़े-बुजुर्ग अक्सर उसे चोरी करना पाप है, आगे से चोरी मत करना जैसे कोरे उपदेश देते है या मारपीट करते है। समस्या की तह तक नहीं जाते। समाजसेवी संगठनों और निजी विद्यालयों में कार्य करने के दौरान मैंने पाया कि चोरी करने वाला व्यक्ति चाहे वह बालक या वयस्क संज्ञान (होशोहवास) में चोरी करता है, जबकि क्लिप्टोमैनिक बालक या वयस्क अन्यमनस्क (बेखुदी) में अभीष्ट वस्तु को उठाता है, बाद में जब उसे इस कृत्य के बारे में बताया जाता है तो वह स्वयं शर्मिंदगी महसूस करता है। जबकि चोरी करने वाला, चोरी करने के नाना कारण बताता है। इसके अलावा कई ऐसी मानसिक और शारीरिक चेष्टाएं होती है, जिससे क्लिप्टोमैनिक बच्चे को हम पहचान सकते है। लेकिन ऐसे बच्चों के अभिभावकों को यह समझाना बहुत कठिन होता है कि उनके बच्चे को यह रोग है और मनोचिकित्सकों के पास इसका इलाज है। हमारा बच्चा चोरी कर ही नहीं सकता, हमारे बच्चे को किसी चीज की कमी है, तो किसी की चीज चुराएगा या किसी का टिफिन खायेगा," जैसे दलीलों के चलते ऐसे बच्चे का इलाज नहीं हो पाता। जिससे आगे चलकर ऐसे बच्चे, शैक्षणिक और सामाजिक उपलब्धि प्राप्त करने में पिछड़ जाते है। हालांकि कई प्रसिद्ध विभूतियाँ भी क्लिप्टोमैनिक रही है। लेकिन बतौर अभिभावक और शिक्षक हमें पूर्व शाला शिक्षण से बच्चों के मानसिक विकास हेतु ध्यान देना चाहिए। सरकारी और निजी विद्यालयों में कम से कम साल में दो बार सुयोग्य बाल मनोचिकित्सकों के शिविर लगने चाहिए, जिससे मानसिक रूप से विशिष्ट बालकों की समस्या का निराकरण हो सके।

हिस्टीरिया की तरह यह भी लर्निंग फिनोमिना है। ऐसे में बाल मनोचिकित्सा की महत्वपूर्ण भूमिका है। बाल मनोचिकित्सकों के अनुसार बच्चों में भी यह रोग पाया जाता है। यह एक प्रकार ऑबसेसिब कम्पलसिव न्यूरोसिस है। इसमें मरीज के अंदर किसी भी चीज को उठाने की तीव्र इच्छा उत्पन्न होती है। जब तक वह वस्तु प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक वह वह बैचेन रहता है। वह अपनी बैचेनी दबाने में असमर्थ होता है। उसे लगता है कि उसके अंदर उठने वाली इच्छा उसकी स्वयं की नहीं है। सामान्य होशोहवास में ऐसे रोगी, अपनी इस प्रवृत्ति पर खेद भी प्रकट करते है। मौजूदा दौर में एण्टी ऑबसेसिव ड्रग की निश्चित मात्रा में सेवन कराने के साथ-साथ रोगी को अपनी कलाई में रबड़ बैण्ड बांधने की सलाह दी जाती है। ताकि जब उसके मन में कोई वस्तु उठाने की इच्छा जगे तो वह रबरबैण्ड को खींचकर छोड़ दें, जिससे उसके अंदर अनियंत्रित विचार शृंखला को झटका लगे। जिससे उसका ध्यान धीरे-धीरे वस्तु उठाने की तरफ से हट जाए।

ऐसे बच्चे को चित्रकला, अभिनय, खेलकूद, गायन-वादन, वगैरह क्रियाकलापों में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि बच्चे में सकारात्मक भाव उत्पन्न हो सके।

ऐसे बच्चों को अपने हाल में छोड़ने या दुत्कारने की बजाय, इनकी समुचित चिकित्सा की व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे यह समस्या बच्चे की शैक्षणिक और सामाजिक प्रगति में बाधक न हो। अन्यथा ऐसे बच्चे बड़े होकर असामाजिक तत्व के रूप में उभर कर आते है। हमारे पढ़ाये गये बालक मानसिक रूप से बाधित न हो, वे सुयोग्य नागरिक बने, इसके लिए हम सभी शिक्षकों को प्रयास करना होगा ही।

ए-59, करणी नगर, नागानेची रोड
बीकानेर-334003

शोध- आलेख

विशिष्ट बालक

❐ डॉ. रामरतन लटियाल

विशिष्ट बालक वे होते है जो औसत व सामान्य बालकों से काफी भिन्न और अलग होते है तथा जिनके लिए विशिष्ट शिक्षा, समायोजन, निर्देशन व परामर्श की आवश्यकता होती है। शिक्षा मनोविज्ञान के बढ़ते प्रभाव ने शिक्षा मनोवैज्ञानिकों और शिक्षाशास्त्रियों का ध्यान विशिष्ट बालकों की ओर सदैव आकृष्ट किया है जिसके फलस्वरूप विशेष शिक्षा, विशेष विद्यालय और विशेष कक्षाओं का सम्प्रत्यय हमारे सामने आया है।

क्रिक के अनुसार–"वैसे बालक जो औसत या सामान्य बालक से 1. मानसिक गुणों में, 2. ज्ञानात्मक क्षमताओं में, 3. शारीरिक गुणों में, 4. सामाजिक व्यवहार में, 5. संचार क्षमताओं में या 6. बहुविकलांगता में विचलित होते है, विशिष्ट बालक कहलाते है।"

इस प्रकार विशिष्ट बालक अन्य बालकों से शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक विकास की दृष्टि से अपनी आयु के अनुरूप अपनी योग्यताओं, क्षमताओं आदि में पिछड़ जाते है। अतः इनके लिए सामान्य शिक्षा की जगह विशिष्ट शिक्षा का प्रबन्ध करना होता है।

विशिष्ट बालकों के प्रकार– हेवार्ड एवं ओरलेन्सकी, रिली एवं लेविस, क्रुकशैंक के वर्गीकरणों का अध्ययन करने पर भारतीय परिवेश को दृष्टिगत रखते हुए मेरे मतानुसार वर्गीकरण के प्रमुख तीन आधार इस प्रकार है–

शारीरिक आधार पर

1. दृष्टिदोष युक्त बालक
2. श्रवणदोष युक्त बालक
3. मासंपेशीय व अस्थिदोष युक्त बालक
4. वाक् (भाषा) दोष युक्त बालक

मानसिक/बौद्धिक आधार पर

1. प्रतिभाशाली बालक
2. पिछड़े बालक
3. मंदितमना बालक

सामाजिक/संवेगात्मक आधार पर

1. वंचित व आलाभान्वित बालक
2. अपराधी बालक
3. समस्यात्मक बालक

वंचित व अलाभान्वित बालक

अलाभान्वित पद एक विस्तृत पद है किन्तु शिक्षा के क्षेत्र में यह उन वर्गों को इंगित करता है जो शिक्षा से वंचित और अलाभान्वित वर्ग माने जाते है। यह सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से वंचना का शिकार हो जाते है जिससे यह शैक्षिक क्षेत्र में भी पिछड़ जाते है। भारत में उच्च वर्गों के अधिकतर परिवार तथा कुछेक निम्न वर्ग के परिवारों के अलावा अधिकतर अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, दलित और वनवासी समुदाय वंचित वर्ग की श्रेणी में आते है, हालांकि कुछ सामान्य वर्ग के परिवार भी वंचित वर्ग में आते है। वंचित वर्ग का शिक्षा से जुड़ाव न के बराबर है तथा जो जुड़ाव भी है तो निरन्तरता के अभाव से युक्त है। आज के इस आधुनिक युग की मुख्यधारा में इन्हें जोड़ना एक चुनौतीपूर्ण काम है परन्तु चहुँमुखी विकास का बिगुल बजाने के लिए हमें सर्वजन विकास की सार्थक पहल को पौंखना होगा।

अलाभान्वित बालकों की विशेषताएं

1. इनकी पृष्ठभूमि निम्न आर्थिक स्तर तथा गरीबीयुक्त होती है।

2. ऐसे बालकों का आत्मसम्प्रत्यय निम्न कोटि का होता है जो नकारात्मकता युक्त होता है अर्थात् यह तुलनात्मक रूप से हीन, कमजोर और निम्न उपलब्धि स्तर वाले होते है।
3. इनमें स्वप्रेरणा व स्वअधिगम की कमी पायी जाती है।
4. इनमें दूरदर्शिता का अभाव पाया जाता है। यह वर्तमान में खोये रहते है तथा साथ ही रुढ़िवादिता के शिकार होते है।
5. इनका भाषागत विकास अस्पष्ट व अधूरा होता है। विचार भी अस्पष्ट होते है।
6. इनका बौद्धिक निष्पादन स्तर सीमित और अपर्याप्त होता है।
7. इनकी उपलब्धि आवश्यकता भी निम्न स्तरीय होती है तथा अमूर्त व प्रत्यक्षात्मक चिंतन की कमी पायी जाती है।
8. यह आजीविकोपार्जन को अपना ध्येय मानते है तथा शिक्षा का गौण।

अलाभान्वित बालकों की शिक्षा और समायोजन

वंचित वर्ग का सम्बन्ध किसी वर्ग विशेष तक सीमित नहीं है परन्तु अधिकांश वंचित वर्ग निम्न आर्थिक स्तर के होते है। जहाँ उनकी प्रथम या जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वह अपना जीवन समर्पित कर देते हैं। जिससे वह शिक्षा से वंचित रह जाते है। यहाँ 'भूखे भजन न होय गोपाला' वाली कहावत चरितार्थ होती है। यह पूर्ण सत्य है कि मानव की शारीरिक/जैविक आवश्यकताएँ जिन्हें प्राथमिक व अनिवार्य आवश्यकता भी कहते है, की पूर्ति के बिना वंचित वर्ग को मुख्य धारा में लाना अर्थात् उनका शैक्षिक स्तर का उन्नयन करने का प्रयास सफल नहीं हो सकेगा।

भारत में वंचित व अलाभान्वित बालकों का शैक्षिक स्तर ऊँचा उठाने हेतु केन्द्र व राज्य सरकारों ने सराहनीय प्रयास किये है जो इस प्रकार है–

1. निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार 2009 जो 1 अप्रैल 2010 से सम्पूर्ण भारत (जम्मू-कश्मीर को छोड़कर) में लागू हुआ। इसके अंतर्गत निजी शैक्षणिक संस्थानों में भी वंचित वर्ग को 25 प्रतिशत प्रवेश देना तय किया जिसका खर्चा सरकार द्वारा वहन किया जाता है।
2. मध्याह्न भोजन योजना।
3. SC/ST छात्रवृत्ति हेतु अंक निर्धारण की शर्त समाप्त।
4. राजस्थान सरकार द्वारा वंचित बालिका वर्ग के प्रोत्साहन हेतु समस्त वर्ग कह बालिकाएँ जो कक्षा 9वीं में नवीन प्रवेश लेती हो, के लिए निःशुल्क साइकिल वितरण करना।

अलाभान्वित बालकों के उन्नयन हेतु विशेष प्रयास

1. जनजाग्रति द्वारा इनमें जागरूकता का संचार करना।
2. अलाभान्वित क्षेत्रों को चिह्नित करके विशेष शिक्षा अभियान चलाया जाये।
3. संचार के साधनों से जागरूकता का प्रचार-प्रसार करना।
4. शिक्षकों को विशेष रूप से प्रोत्साहित करना ताकि अनुकूल मनोवृत्ति द्वारा उन्हें मुख्यधारा से जोड़ा जा सके।
5. स्वयंसेवी संस्थाओं का अपेक्षित सहयोग लिया जाये।
6. प्रमुख औद्योगिक घरानों से आर्थिक सहयोग लिया जाये।
7. गुरुकुल शिक्षा पद्धति यानि शिक्षा के साथ जीविकोपार्जन की व्यवस्था की जाये।
8. सम्बन्धित योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन व संचालन किया जावे।
9. अलाभान्वित बालकों के जुड़ाव के पश्चात मनोवैज्ञानिक विधियों द्वारा व्यवहारजन्य परिमार्जन के विशेष प्रयास किया जाये।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आज भी तमाम प्रयासों के बावजूद अलाभान्वित वर्ग का शैक्षिक स्तर निम्न है जो दृढ़ संकल्पशक्ति, जनजागरूकता, सामाजिक सरोकारों तथा सरकार के समन्वित प्रयासों से सफलता प्राप्त की जा सकती है।

प्राध्यापक (राजस्थानी)
रा.उ.मा.वि. बालवा (नागौर)
मो. 9783603087

होली विशेष

होली के गीत

(1)

हाँ, रे होळी आई रे, फागण री मस्ती छाई भाई रे,
के होळी आई रे।।

रंग बिरंगी होळी आई, रंग बसन्ती छायो रे।
संतां ने वीरां ने चोळो, बसन्ती रंगवायो रे।
रंगी खून सूं धरा के होळी असी मनाई रे,
के होळी आई रे।।

स्नेह प्रेम रो रास रचावां, हिळमिळ नाचां गावां रे।
भेदभाव नै छोड़ उठां, अब सब ने गळे लगावां रे।
जगा रह्या सूता भारत ने, कृष्ण कन्हाई रे,
के होळी आई रे।।

सन् सत्तावन याद करो, और याद करो थै झांसी ने।
भगतसिंह सा वीर झूलग्या झूलो समझ के फांसी ने।
मरतां मरतां भी जयहिन्द री टेर लगाई रे,
के होळी आई रे।।

(2)

भायां फागुण रा गुण गाओ रे, गाओ रे।
होळी खेलां प्रेम सूं सगळा नै ल्याओ रे।।

बरसाने के रास में जी नाचे नन्द किशोर।
नाचे ग्वाळ बाल सब कर-कर भारी शोर।।
भायां...

भरो रंग री पिचकारी रे, लेवो लाल गुलाल।
होळी खेलां प्रेम से रे, भारत मां रा लाल।।
भायां...

सारे जग में छायो रे, स्नेह प्रेम रो रंग।
खेलो कूदो नाचो गाओ, बजा बजाकर चंग।।
भायां...

मुकुट हिमाळो माथो सौहे, केसर रो कश्मीर।
रामेश्वर में चरण पखारै, सिन्धुराज रो नीर।।
भायां....

(3)

थे खेलो लाल गुलाल, होळी नित आवै।
थे चलो प्रेम री चाल, होळी नित आवै।।

कीचड़ माटी थे न उड़ाओ, भेदभाव ने दूर भगाओ।
थे बणो देश रा लाल, होळी नित आवै।।

प्रेम भाव री भर पिचकारी, होळी खेलो देश पुजारी।
हो जावे देश निहाल, होळी नित आवै।
चन्द्रगुप्त बांको मतवाळो, कियो सिकन्दर रो मुंह काळो।।

थे एहड़ी चालो चाल, होळी नित आवै।
बंग-मध्य-आसाम मिळाओ, प्रान्त भेद ने दूर भगाओ।
यो खेल रह्यो पंजाब, होळी नित आवै।।

होळी खेली लक्ष्मीबाई, गोरा ने बा खड्ग दिखाई।
थे उठो जवानों आज, होळी नित आवै।

संकलन : कुन्दन जीनगर
गोपेश्वर बस्ती, गंगाशहर, बीकानेर-33401
मो. 8561049630

होली पर विशेष आलेख

बिखरते रंग : होली के संग

❒ मनमोहन अभिलाषी

भारतीय त्यौहारों में होली के पर्व का विशेष महत्त्व है। यह वर्ष भर के मनमुटाव को दूर कर प्रेम की सरिता प्रवाहित करने वाला स्नेह से परिपूर्ण रंग भरा त्यौहार है। इसका शुभारम्भ बसंतोत्सव के साथ प्रहलाद के स्वरूप में डंडा गढ़ने के प्रतीक से होता है। गली और चौराहों में होलिका-दहन हेतु लकड़ियाँ काटकर डाल दी जाती हैं। बस यहीं से शुरूआत हो जाती है होली के रंग-बिरंगे दिलों की स्मृतियों की। कल्पनाएँ होने लगती हैं इस बार होली इस प्रकार खेलेंगे।

यूँ तो होली का ये पर्व सम्पूर्ण भारत में धूमधाम के साथ खुशियों के रंग बिखेरता हुआ अपनी छाप छोड़कर मन को मन से जोड़ने का कार्य करता है। लेकन राजस्थान में बिखरते रंग होली संग अनेक परम्पराओं की स्मृतियाँ तरोताजा कर जाते हैं। गाँव से लेकर शहरों तक में इसकी अपनी अनुपम छटा होती है। महानगरों में राजमार्गों से लेकर नगरों, कस्बों और गाँव के गली गिरारों तक फैलकर यह अपनी स्नेहत्व की रंग बिरंगी पिचकारी अथवा गुलाल मलने की परम्परा से और भी रंगीन हो जाती है।

राजस्थान में गुलाबी नगर की होली की अपनी अलौकिक छटा होती है। एक तरफ महिलाओं के रंगीन घूँघट से होली की उमंग का रस बहता दिखाई देता है तो दूसरी तरफ बाजार के चौराहों पर पारम्परिक गीतों की धूम सुनाई पड़ती है।

अब आपको राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगरी की होली के दृश्यों की विहंगत छवि के कुछ रंग दिखाते हैं। पुराने शहर जयपुरम में होली का हुड़दंग महीनों पहले प्रारम्भ हो जाने की परम्परा थी। अब ये बात दूसरी है कि बढ़ती महँगाई और दिलों की दूरी ने इस पर्व की आत्मीयता में काले रंग भरकर उसे दूर जरुर कर दिया है।

एक समय था। अतीत के झरोखों में झाँके तो राज दरबार में तो होली के सप्ताह पूर्व ही आक्रमण हो जाते थे। उन्हें हेला कहा जाता था। न्यौते और बुलावे दिए जाते। चन्द्रमहल से सरबते में सुरापान का आयोजन हुआ करता था। धुलण्डी के दिन रामबाग में रंगों से भरी बड़ी-बड़ी टंकियाँ और हौज रंग में लबालब भरे जाते थे। पीतल की तापड़ियाँ में तरह-तरह के रंगों का घोल तैयार रहता था। पीतल, लोहे, टीन और चमड़े की पिचकारियों का जमकर प्रयोग किया जाता था। ढ़ोलनियाँ ढोलकी के साथ होली के रसिए गाया करती थी, हंसी-ठिठोली के रंगों की बौछारें पडती थीं। नजर और भेंट चढ़ाई जाती थीं। गणिकाओं के नृत्यगान महफिलों में शाही दरबार की खुशियों की उमंगों को बढ़ाकर होली के पर्व का आनन्दोत्सव मना करता था। सार्वजनिक रूप से होली के उत्सव पर हाथी की सवारी निकाली जाती थी। सजे हुए हाथी पर महाराजा विराजमान होकर प्रजा के साथ होली खेलते हुए निकलते थे। महाराजा साहब के हाथी की सजावट का तो कोई मुकाबला ही नहीं था। इसके अतिरिक्त जुलूस में चल रहे हाथी भी एक से बढ़कर एक सजाए जाते थे। सूँड पर रंगीन माँडणे, माथे पर भारी झूकर जो सलमें सितारों से जड़ी होती थीं। हाथी के गले में घंटियों का तोड़ा, लड़कियों का हार, नक्काशीदार हौदा, पैरों में बजती पाजेब। हाथ में चलते हुए ढोल मजीरे। प्रजा के नर-नारियों के समूह से सभी रास्ते और झरोखे भर जाते थे।

अब आइये राजस्थान के अन्य क्षेत्रों में होली खेलने की परम्परा और रीति-रिवाज पर भी दृष्टि डालें-

डूँगरपुर जिले के भीलूड़ा गाँव की 'पत्थरमार होली' विशेष रूप से अनोखी मिसाल है। यहाँ धुलण्डी को गुलाल के स्थान पर पत्थरों का प्रयोग होता है। जो 20 ग्राम से लेकर 20 किलो तक वजन के होते हैं। एक दूसरे पर पत्थर मारने की इस होली को भीलूड़ा गाँव में 'राड़-खेलना' कहा जाता है। राड़ खेलने वाले ग्रामीण दो दलों में विभक्त हो जाते हैं। पहाड़ी के ऊपर वाले दल में सेलोता, जेढ़ाणा, सागवाड़ा, सुवाड़ी, गामड़ा, नन्दोड़ आदि गाँवों के ग्रामीण भाग लेते हैं। दूसरी तरफ पहाड़ी के नीचे वाले दल में भीलूड़ा, वगेरी, पाडला, भीलूड़ी, सेमलिया पण्ड्या, परमोलिया, खरबेड़ा, नोहरू, बीलोदा आदि गाँवों के ग्रामीण होते हैं। दोनों पक्षों की ओर से जोरदार वजनदार पत्थर एक दूसरे को सुबह से सांय 6-7 बजे तक मारे जाते हैं। किसी चोट का कोई बुरा नहीं मानता। इसमें किसी प्रकार का कोई राग-द्वेष नहीं होता। पत्थर मार होली जब रुकती तब सेलौता गाँव का चौबीसा जाति का बूढ़ा-बढ़ा राड़ मैदान में आकर कपड़े को हाथ में ऊँचाकर हिलाता है। वह कहता है 'अब राड़ को रोक दो।' इस पत्थर मार होली में किसी को मरने तक की चिंता नहीं होती।

इस पत्थर मार होली के बारे में कहा जाता है कि भीलूड़ा बिना ही उनके सामने आत्म-समर्पण कर दिया था और अपनी योजना का रहस्य ग्रामीणों के समक्ष खोल दिया था। उसके पश्चात भीलूड़ा गाँव के लोगों ने डाकुओं से प्रतिज्ञा कराई कि वे भविष्य में इस गाँव में नहीं आयेंगे। इसे बनाए रखने के लिए एक चिह्न लगाया गया था जो आज भी भीलूड़ा के बाजार में गड़े पत्थर पर अंकित है। इसमें गधे का चिह्न है और महिला शयन कर रही है। इसी घटना से पत्थर मार की यह होली भीलूड़ा में अनवरत रूप से हर वर्ष खेली जाती है।

इसके साथ ही यहाँ होलिका दहन से जलती लकड़ी लेकर भागने की परम्परा थी। उसे लेकर जो तालाब में लकड़ी को बुझाने जाता है उसे भी पत्थर मारने की प्रथा है। तीन दिन पश्चात यहाँ अबीर गुलाल की होली होती है।

सागवाड़ा में तथा गलियाकोट कस्बों में गोबर से बने कंडों से भी होली खेली जाती है। यह कंडे मार होली का खेल आधा एक घंटे में पूर्ण हो जाता है। दोनों ओर से कंडे समाप्त होने पर ढोल और कुंडी बजाए जाते हैं। पूरे जोश के साथ कंडे फेंके जाते हैं। सामने से दल पर निशाना मारते हुए कंडा फेंका जाता है। डूँगरपुर जिले के ओबेरी गाँव में ही एक पेड़ से नारियल बाँध दिया जाता है। युवक उसे तोड़ने के लिए

ऊपर चढ़ते हैं जो नारियल लाने में सफल होते हैं वही विजयी माने जाते हैं। ठीक इसी तरह पत्थर मार होली बाड़मेर में भी खेली जाती हे।

ब्यावर की होली बादशाही होली के नाम से विख्यात है। दस दिन पूर्व ही वहाँ होली पर नाचगान प्रारम्भ हो जाते हैं। मंचों पर समूह रूप में ढोलक की थाप पर नृत्य होते हैं जो घुमावदार होते हैं। नृत्य के द्वारा ही चोर सिपाही का खेल, गूजरी और मैंम लड़की के स्वांग पर मनोरंजन किया जाता है। बादशाही होली में दो बादशाह बनते हैं। एक बीरबल बनता है। इस प्रकार बादशाही सवारी गुलाल की पुड़ियाँ इस तरह दर्शकों पर फेंकती है कि उन पर गिरकर वह खुल जाती है। दर्शक गुलाल में सराबोर हो जाते हैं। शेखावटी अंचल में गीदड़ नृत्य होता है।

मेवाड़ अंचल के भीलवाड़ा जिले के बरून्दगी गाँव में होली के सात दिन बाद शीतला सप्तमी पर लठामार होली खेली जाती है। इसी दिन चित्तौड़ वाली हवेली से मुर्दे की सवारी निकाली जाती हे। लकड़ी की सीढ़ी बनाकर उस पर जिंदा व्यक्ति को लिटाकर उसकी अर्थी पूरे बाजार में निकाली जाती है। इस मध्य दर्शक अर्थी ले जाने वालों को गुलाल और अबीर में सराबोर कर देते हैं।

बीकानेर क्षेत्र में होली खेलने की अलौकिक परम्परा है। यहाँ रम्मतें, अनूठे फागड़ियां, फुटबाल मैच, तणी काटने और पानी की डोलची का खेल होली के दिन का विशेष आयोजन है। रम्मतों में मंच पर विभिन्न कथानकों और किरदारों का अभिनय होता हे। जिसमें होली ठिठौली, मौज मस्ती होती है।

श्री गंगानगर में कोड़े मारने की होली की परम्परा है जो देवर-भाभी के मध्य होता है। उसकी सर्वत्र चर्चा है। होली पर देवर-भाभी को रंगने का प्रयास करता है तो भाभी देवर की पीठ पर तड़ातड़ कोड़े बरसाती है। देवर द्वारा कोड़ों की मार खाने के उपरांत भाभी से नेग मांगने की भी परम्परा है।

होली के त्यौहार पर यदि ब्रज क्षेत्र की होली की चर्चा न हो तो होली अधूरी ही होगी। तो आइए ब्रजांचल में फाल्गुन के आगमन से ही होने वाली होली की गतिविधियों के बारे में भी अवगत हो जाएं तो कितना अच्छा रहेगा। बसंत पंचमी पर होली का डांडा गड़ते ही यहाँ की महिलाएँ होली गीत गाना प्रारम्भ कर देती हैं। 'मत मारो द्रगन की चोट रसिया होली में मेरे लग जायेगी....' होली के आठ दिन पूर्व ही होलाष्टक लग जाते हैं। सभी नर-नारी, बालक-बालिकाओं के मन में अपूर्व उत्साह और उमंग के कारण सभी थिरकने लगते हैं। कुल वधुएं श्वसुर को देखकर गाने लगती हैं 'श्वसुर मौए देवर सौं लागे।'

होली दहन के दूसरे दिन भी सभी होली के रंग में रंगे होते हुए मदमस्त होकर पारम्परिक गीत गाते हुए देखे जाते हैं-ये रसिया प्रसिद्ध है-

आज बिरज में होरी रे रसिया,
होरी रे रसिया बर जोरी रे रसिया।
कौन के हाथ कनक पिचकारी,
कौन के हाथ कमोरी रे रसिया।। आज...
कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी,
राधा के हाथ कमोरी रे रसिया।। आज...
उडत गुलाल लाल भए बादर,
केसर रंग कौं घोरी रे रसिया।।
आज बिरज में...

ब्रज की होली में बरसाने की लठामार होली देखने पूरे भारत से ही नहीं विश्व के अनेक देशों से विदेशी पर्यटक भी बरसाने में उमड़ पड़ते हैं। फाल्गुन शुक्ला नवमीं के दिन नंद गाँव के हुरियारे श्री कृष्ण और उनके सखा बनकर राधा के गाँव बरसाना जाते हैं। बरसाना की ललनाएँ राधा और उसकी सखियों के धर्म का पालन कर नंदगाँव के छैल छकनियाँ हुरियारनों पर रंग की बौछार करते हैं। अबलाओं के प्रहारों से कई बार गोप लहूलुहान तक हो जाते हैं। आप सच मानें चाहें नहीं लेकिन यह सत्य है कि उन घावों पर ब्रज के ग्वाल और गोपी बस ब्रजरज मलकर श्री गिर्राज महाराज का जयघोष करते हुए होली खेलते रहते हैं। घाव अपने आप ठीक हो जाते हैं। अपार जनसमूह रसरंग में आत्मविभोर होकर लोकगीत गाते हुए होली खेलते हैं और गाते हैं कि-'फाग बरसाने खेलन आए हैं नटवर नंदकिशोर, घेर लई सब गली रंगीली, छाए रही छवि छटा रंगीली। ढप-ढोल मृदंग बजाए हैं, बंशी की घनघोर...। हुरियारे अपनी ढालों पर लाठियों के प्रहारों का घुटनों के बल मेंढक की तरह फुदक-फुदक कर बचाव करते हैं। पुरुष साखियाँ गाते हैं लोकगीत थिरकता हुआ इन क्षणों का आँखों देखा हाल सा प्रस्तुत करता है- जनसमूह के स्वरों में-

ले रहे चोट ग्वाल ढालन पै
केसर कीच मलै गालन पै
हरिहर बाँस मंगाए हैं, चलन लगे
चहूँ ओर....।

बरसाने की लठामार होली के पश्चात् दाऊजी में हुरंगा का आयोजन होता है। जो दाऊजी के मंदिर में चैत्र शुक्ल द्वितीया को अपार जन समूह के बीच होता है सैकड़ों बोरियों में अबीर और गुलाल। बड़े-बड़े हौजों में टेसू के फूल का केसरिया रंग। एक ओर महिला और दूसरी ओर पुरुष। नीचे से रंग की पिचकारी चलती है तो ऊपर से अबीर और गुलाल के बादलों की वर्षा होती है।

दाऊजी के हुरंगे में पुरुष वर्ग झंडा हाथ में लेकर मंदिर जगमोहन में निकलते हैं। महिलाएँ उस झंडे को लूटने का प्रयास करती हैं। भाभियाँ-देवरों पर बाल्टियों से भरकर रंग डालती हैं।....

भाभियाँ घूँघट निकाले देवर के कपड़े फाड़कर उन्हें रंग में गीला कर उसे कोडे से मारती हैं। जगमोहन के अन्दर एक-एक फुट तक रंग भरकर हिलोरे लेने लगता है। जगमोहन के ऊपर की ओर दर्शक पर्यटकों के साथ इस दृश्य का आत्मविभोर होकर अवलोकन करते हैं।

मथुरा के पास स्थित बलदेव में धूलंडी के दूसरे दिन चैत्र कृष्ण द्वितीया को बलराम जी के विशाल मन्दिर में मनाया जाना बाला 'हुरंगा' ब्रज की होली की दूसरी रंगीनी पेश करता है।

होलिकोत्सव के शुभ अवसर पर हमारी समरसता, हमारा सांस्कृतिक समन्वय देखने योग्य होता है। हमारे देश में होली के अनेक रूप प्रचलित है। फिर भी ये उमंग भरा त्यौहार हमें साम्प्रदायिक सद्भावना की प्रेरणा प्रदान कर विगत वैमनस्य को विस्मृत करने और आपसी भाईचारे को जोड़ने का संदेश देता है।

होली के इस पर्व पर हमें अपने सारे मतभेद भुला देने चाहिए। और एक दूसरे के गले मिलकर गुलाल लगाकर मन से मन को जोड़ने का प्रयास करना चाहिए तभी इस पारम्परिक पर्व की सार्थकता प्रमाणित होगी।

गुप्ता सदन
एस.बी.के. गर्ल्स हा. सैकण्डरी स्कूल के पास,
मण्डी अटलबंद, भरतपुर-321001
मो. 9983409454

वानिकी दिवस

वन-गोचर संसाधन

❐ रमेश कुमार शर्मा

देश के वन-गोचर संसाधनों की उपलब्धता बढ़े, यह दीर्घावधि योजना के अंतर्गत सहज संभव है यदि चिड़िया की आँख समान इस लक्ष्य को अर्जुन की भाँति साधा जाये। वस्तुतः बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में ही यह सुनिश्चित हो चला था कि विश्व के प्रत्येक भाग को आधुनिक तकनीकी के दौर से गुजरना है। सभी देशों में तकनीकी आई। तथापि तकनीकी प्रवाह की लागत अलग-अलग देशों में अलग-अलग रही है। कहीं तकनीकी आविष्कृत एवं विकसित हुई और कहीं आयातित हुई। स्वाभाविक रूप से तकनीकी आयात करने वाले देशों ने आविष्कार-विकास करने वाले देशों की तुलना में उसकी अधिक वित्तीय लागत चुकाई परन्तु तकनीकी की लागत की बात करते समय केवल वित्त के चिन्तन तक सीमित नहीं रहा जा सकता। जिन देशों में तकनीकी प्रवाह के साथ-साथ पर्यावरण-संरक्षण का चिंतन भी चल रहा था, वहाँ वन-गोचर भूमि संसाधनों सहित प्राकृतिक संसाधनों को एक बड़ी सीमा तक सुरक्षित रख पाना संभव हुआ। दूसरी ओर पर्यावरण के प्रति असावधान देशों में प्राकृतिक संसाधनों के ह्रास पर ही तकनीकी का पदार्पण संभव हो सका, चाहे वह आविष्कृत-विकसित हुई हो अथवा आयातित। उदाहरणार्थ यूरोप में तकनीकी का आविष्कार भी हुआ और विकास भी। साथ ही वहाँ पर्यावरण संरक्षण या प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा का विचार भी साथ-साथ चला। इस कारण औद्योगिक और आवासीय क्षेत्र वहाँ घनीभूत होकर बहुमंजिले भवनों में सिमटकर रह गया और वन-गोचर क्षेत्र को 40 प्रतिशत से अधिक धरातल मिलना संभव हुआ। एशिया महाद्वीप में ऐसी स्थिति जापान को छोड़कर अन्यत्र बहुधा देखने को नहीं मिलती। वर्ष 2013 में चीन की ओर से घोषणा अवश्य की गई कि वहाँ वनक्षेत्र वर्तमान में 15 प्रतिशत से शनै-शनै बढ़ाकर वर्ष 2050 तक 42 प्रतिशत कर दिया जायेगा। बहुलांश में आयातित तकनीकी पर निर्भर करने वाले भारत में आज 5 प्रतिशत से भी कम भूमि पर सघन वनक्षेत्र है जबकि वर्ष 1947 (स्वतंत्रता वर्ष) में देश में 22 प्रतिशत भूमि पर सघन वनक्षेत्र था। यह दूसरी बात है कि सरकारी आँकड़ों में आज भी 22 प्रतिशत भूमि वनान्तर्गत दर्शायी जाती है।

आज, जबकि प्रधानमंत्री के दायित्व पर नरेन्द्र मोदी हैं, भूमि संसाधन के साथ-साथ देश के मानव संसाधन के स्वरूप में भी बहुत परिवर्तन हो चुका है। वर्ष 1947 में जब जवाहरलाल नेहरु ने प्रधानमंत्री का दायित्व सँभाला तब देश में 22 प्रतिशत भूमि पर सघन वन-आवरण था। वर्ष 1960 के दशक की परिस्थितियाँ भी अब नहीं है जब वन-गोचर भूमि के आवासीय-औद्योगिक रूपान्तरण की आलोचना करते हुए संसद सदस्य बलराज मधोक ने कहा था, ''सरकार से लोगों के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाने की अपेक्षा होती है न कि छीनने की। यदि गोचर भूमि नहीं रही तो पशुपालन अपनी गाय-भैंसे कहाँ और कैसे चरायेंगे और वन नहीं रहे तो वनजीवियों को आजीविका कैसे मिलेगी।'' आज के भारत में वन-गोचर क्षेत्र समाप्ति के कगार पर है और तब के वनजीवियों की संतानें गाँवों, शहरों में बसती चली गई। अधिकांश पशुपालकों ने अपने पशु किसानों को बेच दिये। इस प्रकार देश का पशु संसाधन गोचर भूमि की घास से वंचित होकर खेतों के गेहूँ और चने के खरपतवार तूड़ और चारे पर आश्रित हो गया। धीरे-धीरे आनुवंशिक रूप से संशोधित (Genetically Modified) गेहूँ और चने के संकर बीज बाजार में आ गए। इससे खेतों में गेहूँ की फसल तथा तूड़ का और चने की फसल तथा चारे का अनुपात बहुत अधिक बढ़ गया। निश्चित रूप से कुछ समय के लिए खेतों में सिक्का अवश्य उछला किंतु पशुओं को आहार रूप में मिलने वाले तूड़ और चारे की मात्रा घटती गई। कई किसान तो खरपतवार नहीं देने वाली या नगण्य सी देने वाली नकदी फसलें खेतों में उगाने लग गये हैं। दुधारु पशुओं का स्वाभाविक स्वच्छंद विचरण गोचर भूमि पर ही संभव है। गोचर नष्ट होने से देश का पशुधन किसानों या पशुपालकों के घरों में खूंटे से बँधकर रह गया। यद्यपि देश में सहकारिता आधार पर बड़े-बड़े डेयरी उद्योग स्थापित हैं जैसे गुजरात में अमूल, राजस्थान में उरमूल किंतु उन्हें भी यथेष्ट गोचर भूमि उपलब्ध नहीं है। भारतीय डेयरियों में गायों, भैसों से सीधा दुग्धदोहन कम और सुदूरस्थ किसानों एवं पशुपालकों से टैंकर या टंकियों, ड्रमों के माध्यम से परिवहन हाने वाले दूध की खरीद अधिक होती है।

कहा जाता है कि भारत में कृषि विकास पर बहुत जोर है। चूंकि देश का पशुधन भी किसानों के घरों के खूंटों से बँधा है। इसलिए देश का राजनैतिक सोच कृषि एवं पशुपालन व्यवसायों को अब एक साथ जोड़कर देखने लगा है। नवीनतम तकनीकों से जुड़ी कृषि-पशुपालन व्यवस्था, जिनकी चर्चा देश में होती है, बहुलांश में कृत्रिम यूरिया आदि उर्वरक एवं कृत्रिम कीटनाशकों के बढ़ते प्रयोग और अल्पांश में जैविक खेती के नाम पर कतिपय चुने हुए क्षेत्र में प्राकृतिक गोबर-कम्पोस्ट खाद एवं प्राकृतिक नीमरस कीटनाशक प्रयोग पर केन्द्रित है। इसका अभिप्राय यही प्रतीत होता है कि भारत के लोग कीटनाशक युक्त आहार का सेवन करते रहें और तथाकथित जैविक खेती से उत्पन्न खाद्य सामग्री विदेशों में निर्यात की जा सके। यह अलग बात है कि खाद्य पदार्थों में कीटनाशकों एवं विषाक्त जीवाणुओं की उपस्थिति के संदर्भ में कठोर मानक अपनाने वाले यूरोपीय देशों में भारतीय खाद्य उत्पादों की स्वीकार्यता घटती जा रही है। भारतीय जैविक खाद्य उत्पाद मसाले, जड़ी-बूटियाँ, फल आदि कीटनाशक रहित भले ही पाये जायें किंतु मृदा संरक्षण के अभाव के कारण कई बार विषाक्त जीवाणुओं से मुक्त नहीं पाये जाते। उल्लेखनीय है कि कृषि एवं पशुपालन के क्षेत्र में भारत में परम्परागत रीतियाँ छोड़कर हरित क्रांति या धवल क्रांति के नाम पर नयी रीतियाँ अपनाई गई। दूसरी ओर यूरोपीय देशों, कनाड़ा, आस्ट्रेलिया एवं एशियाई देश जापान में परम्परागत रीतियों को अपनाये रखते हुए नई रीतियों से भी नाता जोड़ा गया। जापान का जनसंख्या घनत्व लगभग भारत के समान है (प्रति वर्ग किलोमीटर 300 व्यक्तियों से अधिक)। किन्तु वहाँ 25 प्रतिशत सघन वनभूमि और लगभग 35 प्रतिशत गोचर भूमि है। मात्र

16 प्रतिशत भूमि पर समग्र रूप से जैविक खेती अपनाते हुए जापान में भारत की तुलना में प्रति हेक्टेयर 2 या 3 गुनी पैदावार लेना सहज संभव है क्योंकि सघन वनों से वहाँ का मृदा संसाधन पोषक लवणों से पूरी तरह संरक्षित है। यूरोप महाद्वीप में समान रूप से औसतन 40 प्रतिशत भूमि सघन वनान्तर्गत है। पर्वतीय वृक्षों के उत्पादों की औषधीय महत्ता समझते हुए स्विट्जरलैंड आदि देशों में पर्वतीय क्षेत्रों में स्थापित रासायनिक व अन्य पर्यावरण प्रतिकूल उद्योग हटाये गये हैं और पर्वतीय वृक्षों के औषधीय उत्पादों के निष्कर्षण के उद्योग स्थापित किये जा रहे हैं। जनस्वास्थ्य की दृष्टि से स्वास्थ्य घाटी का निर्माण भी यूरोपीय पर्वतमालाओं पर होने लगा है।

संसाधन-सदुपयोग में प्रवृत्त प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भारत के संसाधनों में श्रीवृद्धि भी करेंगे, ऐसी अपेक्षा उनसे की जा सकती है। एशिया महाद्वीप ने तकनीकी विकास की भारी आर्थिक (तकनीकी आयात करने के कारण) और सांसाधनिक (परम्परागत भूमि प्रबंधन त्यागने के कारण) लागत चुकाई है। जापान इसका अपवाद है और चीन ने हाल ही में वन-विस्तार की दीर्घावधि योजना बनाई है। भारत में भी वननीति के अनुरूप न्यूनतम एक-तिहाई (33.33 प्रतिशत) भूमि पर सघन वनक्षेत्र होना चाहिए। दुर्भाग्य से स्वतंत्र भारत में भूमि रूपान्तरण की गलत ब्रिटिशकालीन नीति डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के उद्योग मंत्री पद से त्यागपत्र उपरांत भी चलती रही। इसलिए उपलब्ध सघन वन-संसाधन, जो स्वतंत्रता प्राप्ति के समय मात्र 22 प्रतिशत था, स्वतंत्रता उपरांत छह दशकों में और घटकर 5 प्रतिशत से भी कम रह गया। इसके कुप्रभाव वानिकी, पशुपालन, कृषि व्यवसायों पर तो पड़े ही, देश को इस कारण बाढ़, सूखा, जलवायु परिवर्तन जैसे कथित प्राकृतिक (वास्तव में मानवनिर्मित) प्रकोपों से भी जूझना पड़ रहा है जिससे निकट भविष्य में खाद्यान्न की कमी और कुपोषण का संकट आसन्न प्रतीत होता है। आशा है सघन वन-गोचर संसाधन में श्रीवृद्धि की दृष्टि से निर्णय लिया जायेगा ताकि वननीति की उचित अनुपालना हो सके।

6/134, मुक्ता प्रसाद नगर,
बीकानेर (राजस्थान)
मो. 9636291556

आरोग्य

अंकुरित अनाज

❑ अचलचन्द जैन

भोजन का पूरा-पूरा लाभ हमें तभी मिल सकता हैं जब हम अपने भोजन को कम से कम पकायें अथवा कच्चा ही खायें या फिर उबाल कर खाएँ। जरूरत से ज्यादा देर तक पकाने से खाद्य सामग्री स्वादिष्ट जरूर बनती है, लेकिन उनमें निहित प्राकृतिक तत्व नष्ट हो जाते हैं। इसके अलावा समय एवं ईंधन की भी बर्बादी होती है वह अलग से। अधिकांश फल-सब्जियों को हम कच्चा ही खाते हैं यथा-पत्तागोभी, ककड़ी, अनार, सेब, सन्तरा, टमाटर, गाजर, मूली आदि। कच्चे फल और कच्ची सब्जियों को मिक्स कर हम सलाद बनाकर खाते हैं। इसी तरह अंकुरित अनाज न केवल आरोग्यवर्द्धक है, अपितु रोग नाशक भी है। अंकुरित अन्न खाने से रोगों की संभावनाएँ काफी कम हो जाती हैं, क्योंकि उसमें पौष्टिक तत्व मौजूद रहते हैं। इसके सेवन से मनुष्य स्वस्थ जीवन जीते हुए दीर्घायु प्राप्त करता है।

जिन अनाजों को अंकुरित करना हो उन्हें मिट्टी के बर्तन, काँच के बर्तन अथवा चीनी मिट्टी के बर्तन में से किसी एक में प्रातः पानी में भिगोकर ढक कर रख दें। निम्न साबुत अन्नों को अंकुरित किया जा सकता है यथा-देशी चना, मूंग, मटर, कच्ची मूंगफली, तिल, गेहूँ, सोयाबीन आदि। इन अनाजों को सर्दी एवं ग्रीष्म ऋतु में अंकुरित कर सकते हैं। भिगोये हुए अनाज को उसी दिन शाम को निकाल कर कपड़े की पोटली में बाँधकर रख दें। अगले दिन अंकुरित अनाज खाने को तैयार मिलेगा। अंकुरित अनाज को प्रातः नाश्ते के रूप में अथवा दुपहर में अल्पाहार के रूप में खाया जा सकता हैं।

अंकुरित अनाज को निम्न के साथ मिलाकर भी खाया जा सकता हैं।

1. सेंधा नमक और अंकुरित अनाज
2. फल के साथ अंकुरित अनाज
3. सलाद के साथ अंकुरित अनाज
4. सब्जियों के सूप के साथ अंकुरित अनाज जो आसानी से पच जाता हैं।

अंकुरित अनाज में थोड़ी मिठास घोलने एवं इसे स्वादिष्ट बनाने के लिए इनको निम्न के साथ मिलाकर भी खाया जा सकता हैं।

1. आम के साथ अंकुरित अनाज
2. पपीते के साथ अंकुरित अनाज
3. गुड़ के साथ अंकुरित अनाज
4. केले के साथ अंकुरित अनाज
5. खजूर के साथ अंकुरित अनाज
6. किशमिश के साथ अंकुरित अनाज

अंकुरित अनाज सेहत के लिये हमेशा ही अच्छा माना जाता हैं। अंकुरित अनाज का नाश्ता काफी देर तक भूख का अहसास नहीं होने देता। इसे भुनी हुई सब्जियों के साथ खाने से शरीर की चर्बी और वजन कम होता है। अंकुरित अनाज और उसके साथ की नई सामग्री हर दिन के खाने को नया रूप देती हैं। यह शरीर को नई ऊर्जा देता हैं। मधुमेह के मरीजों के लिये भी यह फायदेमन्द है।

अंकुरित अनाज में पौष्टिक तत्व पूर्ववत मौजूद रहते हैं। अंकुरित अन्न का सेवन करने वाले लोग जीने के लिए खाते हैं, न कि खाने के लिये जीते हैं। अच्छा यही होगा कि हम अपने बच्चों में अंकुरित अन्न का सेवन करने की आदत डालें और 'फास्ट फूड' खाने की आदत छुड़ाएँ क्योंकि 'फास्ट फूड' से मोटापा बढ़ता है, जो कई बीमारियों को जन्म देता हैं।

गान्धीमुहत्तों का वास,
सायला, जिला जालोर

जो लोग अपने समय का सबसे ज्यादा दुरुपयोग करते हैं वे ही समय की कमी की सबसे ज्यादा शिकायत भी करते हैं।

❀ ❀ ❀

अच्छा स्वास्थ्य सबसे बड़ा उपहार है, संतोष सबसे बड़ा धन है और वफादारी सबसे बड़ा संबंध है।

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

धौलपुर : ऐतिहासिक नगर एवं पूर्वी सिंहद्वार

❑ अनुराग शर्मा

धौलपुर राजस्थान का प्राचीन नगर है। भौगोलिक रूप से यह राजस्थान के सुदूर पूर्वांचल में आगरा-मुम्बई राष्ट्रीय राजमार्ग-3 पर स्थित है। भारतीय मध्य रेल्वे का मार्ग भी राजस्थान के इस नगर से होकर गुजरता है। देश की राजधानी दिल्ली व राजस्थान की राजधानी जयपुर के साथ यह सड़क एवं रेलमार्ग से जुड़ा हुआ है।

राजस्थान के इस ऐतिहासिक नगर का अतीत भारतीय इतिहास में मत्स्य जनपद, धौरपिर, धवलपुरी और अंतिम रूप से धौलपुर के रूप में जाना जाता है। सांस्कृतिक विरासत के धनी इस नगर को धवलपुरी या धौलपुर के नाम दिए जाने का श्रेय किसे है, इस सम्बन्ध में ठोस प्रमाणों का अभाव है। लेकिन ऐसी मान्यता है कि दिल्ली में तोमर शासकों की सत्ता के समय धवलदेव नामक राजा ने चम्बल के आसपास के क्षेत्र में धौलपुर की स्थापना की थी। धौलपुर का धवलपुरी के रूप में नामांकित होने के सम्बन्ध में एक ऐतिहासिक प्रमाण है। 842 ई. में धौलपुर में चन्द्र महासेन नामक व्यक्ति का शासन था, जिसे गुर्जर-प्रतिहार शासक मिहिर भोज (प्रथम) ने यहाँ का स्थानीय सामन्त नियुक्त किया था। विक्रम संवत् के उपयोग का प्रथम ऐतिहासिक प्रस्तर अभिलेख धवलपुरी के इसी चन्द्र महासेन के शासन का उल्लेख करता है, जिसमें विक्रम संवत् 898 अंकित है।

मध्यकालीन भारत में दिल्ली सल्तनत के समय में धौलपुर नगर का विशेष उल्लेख है। दिल्ली से दक्षिण भारत को जाने वाले मुख्य मार्ग पर धौलपुर-ग्वालियर ही वे प्रमुख नगर थे जिन्हें अनेक आक्रमणों का सामना करना पड़ा, यहाँ तक कि आगरा के लालकिले की स्थापना का उद्देश्य भी यहीं था कि किसी प्रकार धौलपुर-ग्वालियर ध्रुवीकरण को ध्वस्त किया जा सके। 1501 में सिकन्दर लोदी ने धौलपुर में झोर स्थित शाही बाग को ध्वस्त किया तथा धौलपुर-दुर्ग (शेरगढ़) के स्थानीय राजा विनायक देव के साथ लंबे संघर्ष के बाद मूर्तियों को तोड़कर किले की

दीवारों में चिनवा दिया गया। मुगलकाल में धौलपुर नगर आगरा के निकट होने के कारण मुगल सम्राटों की और उनके परिवार के सदस्यों के लिए अत्यधिक रुचि और पसन्द वाला शहर रहा। आगरा के नजदीक होने के कारण बाबर ने भी धौलपुर को विशेष महत्त्व दिया। झोर स्थित 'कमलबाग' बाबर ने ही बनवाया।

आधुनिक धौलपुर नगर 200 वर्ष पूर्व विकसित हुआ माना जा सकता है। मध्यप्रदेश के गोहद नगर के राजा कीरत सिंह व ईस्ट इंडिया कम्पनी के मध्य समझौते के परिणामस्वरूप धौलपुर बाड़ी व राजाखेड़ा का क्षेत्र राजा कीरतसिंह को सौंपा गया। कीरत सिंह ने 1806 ई. में शेरगढ़ दुर्ग को अपना निवास स्थान बनाया तथा 1811 में शेरगढ़ को छोड़कर पुरानी छावनी को कीरतनगर के नाम से स्थापित किया। कीरत सिंह के पुत्र राजा भगवन्त सिंह ने मचुकण्ड के नए मन्दिर, चौपड़ा शिव मन्दिर, नृसिंह बाग (महाराणा स्कूल) तथा बाग में स्थित मजार जैसे सुन्दर भवनों की स्थापना कराई। नगर में कोठी नाम से पुकारा जाने वाला क्षेत्र इसी समय अस्तित्व में आया। भगवन्त सिंह के बाद उनके पौत्र निहाल सिंह ने धौलपुर नगर का शाही घंटाघर तैयार करवाया।

कुतुबमीनार के बाद यह भारत का ऐसा स्मारक है जिसकी सबसे सुन्दर तस्वीर खींची जा सकती है। धौलपुरवासियों के लिए यह घंटाघर (निहाल टॉवर) अतीत की गौरव पताका है। यह अद्भुत और शानदार है। धौलपुर का ऐतिहासिक शरद मेला निहाल सिंह के युग में प्रारम्भ हुआ। निहाल सिंह की पत्नी केसर की याद में धौलपुर नगर के मध्य केसर मेमोरियल हॉस्पिटल बना हुआ है और नगर से 8 कि.मी. दूर केसरबाग का महल भी महारानी केसर के नाम से विख्यात है। इब इस महल में मिलिट्री स्कूल चलता है।

धौलपुर सिटी पैलेस का श्री गणेश भी निहाल सिंह के समय में हुआ। निहाल सिंह के अल्पवयस्क रहने तक इस भवन में 'ब्रिटिश रेजीडेंट' का निवास था और उसी की देखरेख में यह भवन यूरोपियन शैली में तैयार किया गया।

1901 में निहाल सिंह के निधन के बाद उनका अल्पवयस्क पुत्र रामसिंह शासक बना, जिसके काल में राधा-बिहारी मंदिर तथा सिटी पैलेस का कुछ भाग तैयार हुआ। धौलपुर-बाड़ी रेलवे लाइन की स्थापना इनके युग की देन है।

1911 में रामसिंह के निधन के बाद उनके अनुज भ्राता, महाराजा उदयभानु सिंह ने सत्ता संभाली। इनके शासनकाल में सिटी पैलेस का निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ। धौलपुर का लाल बाजार, नगरपरिषद् भवन तथा सिटी जुबली हॉल पुस्तकालय उनके युग की प्रमुख इमारतें हैं। नगर के बाहर स्थित 'वन-विहार अभयारण्य' भी इन्होंने ही विकसित किया था।

उदयभानु सिंह रियासत युग के अन्तिम शासक थे। 17 मार्च 1948 में अलवर, भरतपुर, करौली व धौलपुर के एकीकरण से बने 'मत्स्य संघ' में धौलपुर नरेश, उदयभानु सिंह

राजप्रमुख बनाये गये तथा धौलपुर के डॉ. मंगलसिंह वित्त मंत्री बने।

पुराना धौलपुर शहर नये राजस्थान में विलीन होकर नूतन युग के विकास की ओर अग्रसर है। 15 अप्रैल 1982 में जिला बनने के बाद धौलपुर नगर जिला मुख्यालय के रूप में विकसित हो रहा है। 'विद्युत उत्पादन गृह' की स्थापना, राष्ट्रीय राजमार्ग-3 पर आवागमन के लिए बना फ्लाईओवर मार्ग, शहर के प्रमुख मार्गों को चौड़ा करके उनका सौंदर्यीकरण किया जाना बदलते हुए शहर का प्रतीक है।

धौलपुर नगर में विकास की प्रबल संभावनाएँ है। चम्बल के कारण अथाह जल राशि का होना धौलपुर के विकास का प्रमुख पक्ष है। 'चम्बल लिफ्ट परियोजना' के क्रियान्वयन के पश्चात् धौलपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि क्रान्ति का आगमन होना तय है।

धौलपुर-सरमथुरा रेलवे लाइन के प्रस्तावित ब्रॉडगेज रूपान्तरण के बाद धौलपुर नगर के व्यापारिक क्षेत्र का विस्तार गंगापुर तक हो जाएगा। पर्यटन की दृष्टि से नगर में स्थित मंदिर, महल, दरगाह, बावड़ियाँ, किला, पर्वत तथा चम्बल के रोमांचकारी बीहड़ आदि दर्शनीय स्थल हैं। नगर में रेलवे, सड़क मार्ग, जल तथा विद्युत उत्पादन, औद्योगिक क्षेत्रों की उपलब्धता तथा आगरा व ग्वालियर जैसे निकटवर्ती बड़े शहरों का होना धौलपुर के विकास में बड़ा योगदान है।

उल्लेखनीय है कि धौलपुर नगर वर्तमान के भीड़-भाड़ के प्रगतिशील दौर में भी एक पुरानी लोक संस्कृति का सम्मान करने वाला नगर है। इस नगर की पावन धरा पर सन्तों ने 'अयुतचण्डी महायज्ञ' का आयोजन वर्ष 2009 में किया जिसके फलस्वरूप अध्यात्म के क्षेत्र में 'यज्ञसंस्कृति' का सूत्रपात हुआ। धार्मिक व लोक आस्था का प्रतीक मचकुण्ड व 'देवछट' पर लगने वाला विशाल मेला लोक संस्कृति का अनूठा उदाहरण है। प्रतिवर्ष हनुमान जयन्ती पर निकलने वाली शोभायात्रा ने शहर को विशिष्ट पहचान प्रदान की है। निश्चित रूप से इस प्राचीन नगर की गाथा में आज भी बहुत-कुछ पुरातन-सनातन स्मृतियाँ जीवन्त है।

अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. सूरजपुरा, धौलपुर
मो. 9414446298

एक अभिनव प्रयोग

ई-लर्निंग

❐ राजेश कुमार तिवाड़ी

सरकारी विद्यालयों में अब शिक्षकों की कमी होने के बावजूद शिक्षण कार्य बाधित नहीं होगा। ऐसा संभव हो सकेगा ई-लर्निंग के माध्यम से। शिक्षा के क्षेत्र में एक अभिनव प्रयोग किया जा रहा है।

राजस्थान में सर्वप्रथम अलवर में राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान एवं प्रोजेक्ट एकता के संयुक्त तत्वाधान में चलाए जा रहे राजकीय नवीन उच्च माध्यमिक विद्यालय में सूचना एवं प्रौद्योगिकी आईसीटी पायलट प्रोजेक्ट का शुभारम्भ यहाँ के जिला कलक्टर मुक्तानंद अग्रवाल ने किया।

उन्होंने जिले के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सांथलका भिवाड़ी तथा राज. उ.मा.वि., बालेटा के विद्यार्थियों व शिक्षकों से वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से बात कर पायलट प्रोजेक्ट प्रथम का उदघाटन किया।

जिले में कम्प्यूटर व इंटरनेट सुविधा वाले सभी विद्यालयों को आईसीटी के इस प्रोजेक्ट से जोड़ा जाएगा। प्रथम चरण में 30 सरकारी स्कूलों को इसमें शामिल किया गया है, मार्च के अन्त में शुरू होने वाले दूसरे चरण में 50 स्कूल और लिए जाएँगे। बाद में सभी 359 सरकारी स्कूलों को जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है।

जिले के प्रत्येक सरकारी स्कूल में औसत तीन से पाँच शिक्षकों की कमी है लगभग सभी स्कूलों में कम्प्यूटर सुविधा तो है परन्तु इन उपकरणों का बेहतर प्रयोग नहीं हो रहा। इनके कम्प्यूटरों को ठीक करवा कर ऑन लाइन पढ़ाई से कुछ हद तक शिक्षकों की कमी दूर करने का प्रयास किया गया है। वीडियों कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से विद्यार्थियों व शिक्षकों के बीच सीधा संवाद कायम हो सकेगा तथा शिक्षा के स्तर में भी सुधार हो सकेगा।

इसके लिए जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डाइट अलवर में एक अत्याधुनिक लैब बनाई जाएगी। जहाँ से सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को विषय विशेषज्ञ पढ़ायेंगे जिन विद्यालयों में शिक्षकों की कमी है वहाँ इसके माध्यम से समय पर कोर्स पूरा हो सकेगा।

इस प्रोजेक्ट की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें भामाशाहों की मदद ली गई है। यहाँ की सनराईज यूनिवर्सिटी ने विद्यालयों में खराब पड़े कम्प्यूटरों को सुधारने की जिम्मेदारी ली है साथ ही राउमावि बहादुरपुर में आईसीटी सुसज्जित ब्लॉक सन्दर्भ केन्द्र बनवाने की घोषणा की है। इसके अलावा माता गोमती देवी ट्रस्ट द्वारा कक्षा एक से दस तक के छात्रों को पढ़ाने की व्यवस्था भी की है। लिट्रेसी फाउंडेशन द्वारा 75000 रुपये के निःशुल्क ज्ञान तंत्र सॉफ्टवेयर से कक्षा एक से पाँच तक के छात्रों को पढ़ाया जाएगा। सॉफ्टवेयर से पहले चरण में करीब 9000 बच्चों को पढ़ाया जाएगा।

इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम में आईसीटी समन्वयक अशोक यादव ने कार्यक्रम के उद्देश्यों को प्रस्तुत किया। समन्वयक वेद प्रकाश शर्मा ने ई-लर्निंग सॉफ्टवेयर रीना डिसूजा एवं बबीता जांगिड ने ज्ञान तंत्र सॉफ्टवेयर की जानकारी दी। रमसा के एडीपीसी. तिलकराज पंकज ने आगामी योजना की रूपरेखा तैयार की व प्रारम्भ में प्रधानाचार्य रमेश चौधरी ने स्वागत किया तथा अंत में डाइट प्रधानाचार्य रामअवतार शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

लिपिक ग्रेड 1
रा.मा.वि., रेलवेस्टेशन ,अलवर
मो. 9636932425

प्रेरणाशक्ति

प्रेरणाशक्ति के द्वारा बच्चों की उन शक्तियों का विकास किया जा सकता है जिन पर उन का स्वास्थ्य, सफलता और सुख निर्भर करता है।

-स्वेट मार्डेन

पुस्तक समीक्षा

भारतीय भू-भोम री टाळवां कहाणियां

(श्रीमती) पुष्पलता कश्यप **प्रकाशक** : नारवाल प्रकाशन, विष्णु वस्त्र भण्डार के पास, मेन मार्केट, पिलानी-333031 (राज.) **संस्करण** : प्रथम 2014 **पृष्ठ संख्या** : 110 **मूल्य** : ₹ 200

समीक्ष्य अनूदित कृति में विभिन्न भारतीय भाषाओं से चुनिंदा श्रेष्ठ कहानियों का राजस्थानी में अनुवादित संकलन है। संग्रह में बारह कहानियाँ हैं।

लेखिका ने कहानियों से पूर्व 'अनुवाद री जरुरतां अर अपेक्सावां' शीर्षक से अपना पूर्वोवाक् दिया है। दर हकीकत अनुवाद कर्म बहुत ही दुरुह और दुश्कर कार्य है। किसी रचना का अनुवाद उसको पुर्सृजन करना है। एक भाषा की समस्त इकाइयों को दूसरी भाषा में पूरी जीवंतता के साथ रूपान्तरित करना होता है। अनुवाद, मतलब और अभिव्यक्ति का प्रतिफलन है। अनुवाद में कलात्मकता, सृजन शीलता, शिल्पवत्ता और सहजता लानी होती है। मूल कृति की आत्मा को अभिव्यंजित करना ही असली अनुवाद है।

अनुवादित कहानियों में सर्वप्रथम उर्दू के मशहूर अफ़सानानिगार सआदत हसन मंटो की दो कहानियाँ 'बिजली पैलवान' और 'मंतर' ली गई है। 'बिजली पैलवान' बुढ़ापे में कम आयु की लड़की से शादी करने की विकृत्तियों एवं दुष्परिणामों का खुलासा करती है। दूसरी कहानी 'मंतर' मंटो की शुरुआती कहानियों में से है। अपने में सीधी-सरल होते हुए भी यह उच्च कोटि की रचना है, जिसे महज एक बार पढ़ने के बाद भुला पाना संभव नहीं। इसमें बालमनोविज्ञान का सूक्ष्म चित्रण है जो मंटो जैसे कथाशिल्पी का ही शाहकार हो सकता है। 'सौतिया डाह' सुप्रसिद्ध बंगला साहित्यकार ताराशंकर बंधोपाध्याय की रचना है जो स्त्री-जाति की सौतन के प्रति ईर्ष्या को अभिव्यक्त करती है फिर वह चाहे एक नागिन ही क्यों न हो। 'वोटर सावित्री बाला' बंगला कथाकार बनफूल रचित है। कहानी में एक गरीब वोटर की अंतर्व्यथा का सशक्त चित्रण है। डॉ. दशरथिभूयाँ रचित उड़िया कहानी 'कागलौ' अपने पेट के जाये और दत्तक के फर्क को गहराई से उकेरती है। नरेन्द्र खजूरिया की डोगरी कहानी 'आप-आप रौ धरम' एक गरीब मेहनतकश, ईमानदार, घरेलू नौकर और बड़े आदमी कहलाने वाले धनाढ्य मालिक वर्ग की मानसिकता के अंतर को बताती है। ख्यातनाम पंजाबी कथाकार नानकसिंह की कहानी 'खस्ताहाल खपरैल री अेक स्लेट' दुर्दिनों में बंगले के मालिक को किरायेदार के समक्ष अपने को उसका चौकीदार बताने की मजबूरी का किस्सा शिद्दत से बयां करती है। राधाकिशन चांदवानी की सिंधी कहानी 'कीड़ा-मकोड़ा' झोंपड़-पट्टी में जीने वाले लोगों की हालत का सशक्त विवेचन करती है जहाँ के कुंवारे युवा अपनी नसबंदी कराने का कारण यह बताने पर विवश हैं कि वे अपनी भावी पीढ़ी को अपने जैसा नारकीय जीवन जीने के लिए इस दुनियाँ में लाने के गुनाहगार नहीं बनना चाहते। कहानी पाठक की चेतना को झकझोर कर रख देती है। ईवा डेव की गुजराती कहानी 'पारटी' औरत के मनोविज्ञान को उकेरते खुलासा करती है कि वह दिलवाले से प्रीत-प्यार की भूखी होती है, न कि किसी दिमाग वाले धनी व्यक्ति से प्यार पाने की! वि.स. खांडेकर की मराठी कहानी 'आँसू' का कथानक है कि जवानी में अपने होनहार युवा पुत्र की मौत का सदमा झेल जाने वाला, कठोर हृदय समझा जाने वाला व्यक्ति, बुढ़ापे में अपनी जीवनसंगिनी को मृत्युशय्या पर पाकर द्रवित होकर रो पड़ता है। विजया राजाध्यक्ष की मराठी कहानी 'शो रूम' अमीरों की अपनी तड़क-भड़क, ऐश्वर्य, सम्पन्नता और शानोशौकत का दिखावा करने की प्रवृत्ति का आकलन करती है। त्रिवेणी की कन्नड़ कहानी में एक युवा लड़की के अकेले बाज़ार जाकर अपने लिए साड़ी खरीद करने के दौरान एक युवक की तरफ आकर्षित होने और दोनों की एकसमान पसंद के पीछे का रहस्य उस पर तब उजागर होता है, जब वह उसे अपने मंगेतर के रूप में घर पर देखकर विस्मित होती है।

प्रस्तुत संग्रह एक उच्चकोटि की अनूदित कृति है, जो साहित्य के पाठकों के लिए न केवल पठनीय है, अपितु अपनी निजी लायब्रेरी हेतु संग्रहणीय भी है।

-समीक्षक : **डॉ. बसंती पंवार**
'विष्णु', 90 महावीर पुरम्, जोधपुर-342008
मो. 09950538579

गद्य-सतरंग

संपादकः डॉ. नमामीशंकर आचार्य **प्रकाशक** : सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर **प्रथम संस्करण** : 2015 **पृष्ठ संख्या** : 80 **मूल्य** : ₹ 100

राजस्थानी कवि-मनीषी पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया जी की पक्तियों के साथ ''खाली धड़ री कद हुवै, चै'रै बिना पिछांण। मायड भासा रै बिना, क्यांरो राजस्थान।।'' सादर समर्पित करते हुए राजस्थानी के युवा कथाकार, समालोचक, शोध अध्येता, पत्रवाचक डॉ. नमामीशंकर आचार्य द्वारा संपादित 'गद्य-सतरंग' (राजस्थानी री टाळवीं गद्य-विधावां) पुस्तक बहुविध सतरंगी रंग लिए हुए है। यह पुस्तक छात्रोपयोगी संकलन है जो कि महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर के बी.ए. (तृतीय वर्ष) स्नातक राजस्थानी का द्वितीय प्रश्न-पत्र के रूप में स्वीकृत पाठ्यक्रम है।

राजस्थानी साहित्य के अध्ययन के लिए विद्यार्थी वैकल्पिक विषय के रूप में राजस्थानी विषय लेते हैं। उच्च शिक्षा में (स्नातक स्तर) राजस्थानी साहित्य का अध्ययन-अध्यापन वर्षों से हो रहा है, परन्तु पाठयक्रम का समग्र संकलन 'गद्य सतरंग' के रूप में ही देखने को मिला है। इसके लिए संपादक डॉ. नमामीशंकर आचार्य बधाई के पात्र है। राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता के प्रयास वर्षों से चल रहे हैं। राजस्थानी भाषा के संरक्षण, संवर्धन का एक उपक्रम ही है-'गद्य सतरंग'। राजस्थानी भाषा की विदुषी और राजकीय डूँगर महाविद्यालय बीकानेर, राजस्थानी विभागाध्यक्ष डॉ. प्रकाश अमरावत द्वारा 'ओछाड़' में इस पाठ्यपुस्तक की गद्य विधावों का मूल्यांकन किया गया है। राजस्थानी गद्य साहित्य का सांगोपांग विवेचन

हुआ है जो विद्यार्थियों को गद्य साहित्य परम्परा से जोड़ने का कार्य करता है। 'गद्य-सतरंग' में संकलित सात रचनाकारों की रचनाओं पर सारगर्भित समालोचना की गई है।

आधुनिक राजस्थानी साहित्य के सिरमौर रचनाकारों की रचनाएं कूदण बाबो (संस्मरण) डॉ. नेमनारायण जोशी, संत सालमनाथ बाबा (रेखाचित्रांम) शिवराज छंगाणी, 'हरख अर हेत' (निबंध) प्रो.(डॉ.) कल्याणसिंह शेखावत, प्रमाण-पत्र (अेकांकी) लक्ष्मीनारायण रंगा, डूंगर बळती (व्यंग्य) श्यामसुंदर भारती, पूंगी (व्यंग्य) बुलाकी शर्मा, गवाड़ (उपन्यास अंश) मधु आचार्य 'आशावादी' को सम्मिलित किया है। आधुनिक राजस्थानी साहित्य के महत्वपूर्ण हस्ताक्षरों का पाठयक्रम में होना एक सुखद अनुभव है। इसमें तीन पीढ़ियों के रचनाकार सम्मिलित हैं। संपादक डॉ. नमामीशंकर आचार्य ने अपने संपादकीय में राजस्थानी विद्यार्थियों के समक्ष राजस्थानी साहित्य की पाठ्यसामग्री न मिलने का समाधान करते हुए पोथी-पुहुप के रूप 'गद्य-सतरंग' को भेंट किया है जो प्रशंसा व सम्मान का विषय है। इस पुस्तक में अलग-अलग पाठ्यसामग्री को एक पाठ्यपुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की मन की बात संपादक द्वारा परतख दिखाई दी है, जो हमारे हाथों में प्रमाण रूप में ही है। पुस्तक में राजस्थानी के कवि-कहानीकार राजेन्द्र जोशी ने मातृभाषा राजस्थानी की मान्यता, विकास व संरक्षण संवर्धन के लिए युवाओं को आह्वान किया है। जो युवा पीढ़ी को राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति से 'गद्य सतरंग' के माध्यम से जोड़ने का कार्य करेगी। पुस्तक में भाषा की एकरूपता, रचनाओं का समग्र विवेचन, लेखक परिचय, पाठ-परिचय का विशेष ध्यान रखा गया है। सूर्य प्रकाश मंदिर, बीकानेर द्वारा प्रकाशित 'गद्य-सतरंग' राजस्थानी भाषा व राजस्थानी साहित्य समाज, राजस्थानी विद्यार्थियों के लिये उपयोगी सिद्ध होगी। इस बात की सार्थकता 'गद्य सतरंग' के माध्यम से पाठक करेंगे। पुस्तक की छपाई, कवर, प्रिंटिंग का कार्य बहुत ही शानदार है। राजस्थानी विद्यार्थियों के लिये अमोलक उपहार है।

-समीक्षक : **डॉ. गौरीशंकर**
मु.पो.-कुलचन्द्र वाया-संगरिया
हनुमानगढ़-335063
मो. 9983255410

पुस्तकों का आनन्द

❒ दीपचन्द सुथार

पुस्तकों का हमारे जीवन में क्या महत्व है? इनकी उपयोगिता के सन्दर्भ में गहराई से विचार करें तो ज्ञात होता है कि ये ज्ञान के कोष हैं। अच्छे मित्र हैं। जीवन की ज्योति हैं। सफर की सहयात्री हैं। नैतिक मूल्यों के सुरभित सुमन हैं। आत्मबल के सोपान हैं। जीवन के साफल्य सूत्र हैं। विपत्तियों में सहयोग देकर हौसला बुलंद करती हैं। यही भीतरी सौन्दर्य तथा वाणी का श्रृंगार हैं। इनके प्रत्येक पृष्ठ में शिक्षा का मधु भरा हैं। शक्कर के बिखरे दानों को देख चींटियाँ की कतारें लग जाती हैं। गुड़ के टुकड़े को देख मक्खियाँ भिन्न-भिन्नाने लग जाती हैं। तो जलते दीपक को देख उसकी लौ के चारों ओर मण्डराते पतंगे प्राणों को निछावर कर देते हैं। इससे प्रेरित होकर हमें भी इसमें छिपे आनन्द को पीते रहना चाहिये। यही स्वाध्याय हैं। जीवन का सार हैं। बालक का कर्तव्य हैं। बंकिमचन्द्र चटर्जी को बाल्यकाल से ही पुस्तकें पढ़ने का शौक था। वे हर समय पढ़ते रहते थे। उन्होंने युवावस्था में अपने एक सहपाठी से कहा था कि- ''मैं पुस्तकें पढ़ने में जैसा आनन्द पाता हूँ वैसा आनन्द मुझे इस जगत में और किसी में नहीं मिलता।'' तिलक ने विवाह के समय कुछ न लेकर अपने श्वसुर से पढ़ने के लिए पुस्तकें माँगी थी। इससे ज्ञात होता है कि उन्हें भी बचपन से ही पुस्तकें पढ़ने का शौक था। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर पढ़ाई में दिन-रात तल्लीन रहते। डॉक्टर सच्चिदानन्द सिन्हा को बालपन से ही पुस्तकों का शौक था। उनके निजी पुस्तकालय में पन्द्रह हजार पुस्तकें थी। उन सभी को वे पढ़ चुके थे। वृद्धावस्था में भी आँखे पुस्तकों में गड़ी रहती थी। रवीन्द्रनाथ टैगोर के पढ़ने का अनोखा तरीका था। वे पुस्तक के पूरे पैराग्राफ को सहजता से स्मरण कर लेते थे। अब्राहम लिंकन, गोपालकृष्ण गोखले आदि को भी पुस्तकें पढ़ने का बेहद शौक था। कार्ल मार्क्स व भीमराव अंबेड़कर भी हमेशा गंभीर अध्ययन में जुटे रहते थे। पुस्तकालय में प्रवेश करने के बाद रात्रि को वहाँ से प्रस्थान करते तो उस समय उनके हाथ में नोट्स किये गये कागजों का पुलिन्दा हो जाता था। गणेशदत्त के पढ़ने की तल्लीनता अद्भुत थी। इस सन्दर्भ की एक घटना है कि वे अपने कमरे में पुस्तक पढ़ रहे थे। सामने कुछ पुस्तकें पड़ी थी। आँखे पुस्तक में गड़ी थी और पुस्तक आँखों में। रात का वक्त था। दीपक जल रहा था। सिर झुका होने के कारण ललाट के बाल जल गये। दुर्गन्ध कमरे में तथा बाहर फैल गई परन्तु उन्हें कुछ भी ध्यान नहीं था। यह है पुस्तकों में छिपे ज्ञात का आनन्द। यह आनन्द प्रत्येक व्यक्ति ले सकता है परन्तु अब उन्हें इसकी आवश्यकता नहीं बल्कि भौतिकता में छिपे आनन्द का आवश्यकता हैं क्योंकि इसमें उन्हें तनिक भी परिश्रम नहीं करना पड़ता है। परन्तु इस बात को याद रखना चाहिए कि पुस्तक का आनन्द व्यक्ति के जीवन को चिर स्मरणीय बना देता है जबकि वह आनन्द जुगनू का प्रकाश बनकर रह जाता है।

बादशाह अकबर के नौ रत्नों में अबुलफजल भी था। उसकी स्मरण शक्ति अनूठी थी। जिस पुस्तक को एक बार पढ़ लेता वह उसे याद हो जाती थी। पढ़ने के शौक में वह खाना,पीना, सोना, खेलना सब भूल जाता था। तीन दिन तक बिना खाये पढ़ता रहता था। कवि मिल्टन ने यथार्थ ही कहा है-''एक श्रेष्ठ पुस्तक एक महान् आत्मा की बहुमूल्य रक्त की बूँदों की तरह है। जो शाश्वत उपयोग की वस्तु है, पथ निर्देशक है। उसके जीवन का सर्वोत्तम रस, अनुभवों का निचोड़ भावी पीढ़ी के लिए मौजूद रहता है।'' अतः पुस्तकों से बढ़कर संसार में और कोई वस्तु मूल्यवान नहीं है। आज प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर घुटन, प्रताड़ना, व्यथा, वेदना आदि महसूस कर रहा है, इसका कारण स्वाध्याय की अनदेखी है। इसलिए इसके महत्व को ध्यान में रखकर प्रत्येक बालक में पढ़ने की रूचि को जाग्रत करना माता-पिता का नैतिक दायित्व है। ताकि अन्तस निहित आनन्द के बन्द पड़े द्वारों को खोलकर जीवन को ज्ञान के उज्ज्वल प्रकाश से भर सकें।

दयाल भवन के पास
उम्मेद चौक, ब्राह्मणों की गली

शाला प्रांगण से

> 'शाला प्रांगण' स्तम्भ में प्रकाशनार्थ सभी संस्था प्रधान अपने विद्यालय में आयोजित होने वाली शैक्षिक, सह शैक्षिक रचनात्मक गतिविधियों के अच्छे छपने योग्य चित्रों के साथ आवश्यक रपट भी भेजें।
>
> **–वरिष्ठ संपादक**

शाला में छात्राओं को स्वेटर वितरण : झाड़ोल (फलासिया) उदयपुर के रा.बा.उ.मा. विद्यालय में श्रीमान त्रिलोकचन्द मीणा, उपखण्ड अधिकारी झाड़ोल ने प्रेरक बनकर विभिन्न विभागों के अधिकारियों, कर्मचारियों व व्यापारियों को प्रोत्साहित कर करीब एक लाख तीन हजार (103,000) की राशि एकत्रित कर विद्यालय की लगभग 363 छात्राओं को स्वेटर वितरण किये। आदिवासी क्षेत्र की इन बालिकाओं ने स्वेटर प्राप्त कर श्रीमान एस.डी.एम. साहब का शाब्दिक आभार व्यक्त किया। संस्था प्रधान ने शाला परिवार की ओर से हार्दिक आभार करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

शाला में अभूतपूर्व सहयोग से नव निर्माण : साण्डिया (पाली) के राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय में स्थानीय भामाशाह श्री माणकचन्द सिलोड़ा पुत्र श्री लक्ष्मीनारायण सिलोड़ा ने विद्यालय की 900 फीट लम्बी चारदीवारी को न केवल 3 फीट ऊंची करवाई बल्कि उसके ऊपर तारबंदी करवाई जिसमें तीन लाख सात हजार रुपये खर्च हुये। इसके अलावा विद्यालय की 60 वर्ष पुरानी बिल्डिंग के 7 कमरों व कक्षाओं के प्लास्टर सुधार कर दुबारा तथा 7 कमरों की छतों को सुधार कर पुनः बनवाया जिससे इनका सदुपयोग हो सके। साथ ही सम्पूर्ण विद्यालय का रंग रोगन आदि कार्य करवाया। इस सम्पूर्ण जीर्णोद्वार में श्री माणक चन्द सिलोड़ा ने 12,99,530 रुपये की राशि खर्च की। प्रधानाचार्य एवं समस्त शाला स्टाफ तथा प्रबन्ध समिति ने भामाशाह का हार्दिक आभार जताया तथा अभिभावकों ने खुशी प्रकट की। आज नवीन स्वरूप में विद्यालय भवन पाकर छात्र-छात्रा व अभिभावक तथा शाला परिवार अभिभूत हैं।

अनुकरणीय शिक्षिकाएं : कौथूदा (तालेड़ा) बूंदी के रा.उ.मा.वि. 26 जनवरी 2016 को विद्यालय की अध्यापिका रेणु जैन ने छोटे बालकों को दस हजार (10,000) रु. की 70 जर्सियाँ व कक्षा 1 से 5 तक के विद्यार्थियों के फर्नीचर हेतु 23,500 (तेईस हजार पांच सौ) रुपये दान किये। इसी प्रकार सेवानिवृत्त वरिष्ठ अध्यापक श्री सोहन लाल भारतीय ने 5,000 रुपये एवं अध्यापिका स्थानीय विद्यालय राधा रानी गोठानिया ने 5,000 रुपये की राशि भेंट की। इनसे प्रेरित होकर 5,000 रुपये नवयुवक मण्डल कैथूदा व अन्य दानदाताओं ने मौके पर फर्नीचर हेतु राशि भेंट की। प्रधानाचार्य श्री भागीरथ बसवाल ने भामाशाहों का हार्दिक आभार जताते हुए बताया कि पूर्व में प्राप्त राशि का फर्नीचर दिया जा चुका है। इस वर्ष कुल 54000 रु. भामाशाहों से प्राप्त हुए जिसमें आधी राशि शाला स्टाफ सदस्यों ने सहयोग कर अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। एस.डी.एम.सी. बैठक में सभी का आभार व्यक्त किया गया।

शाला में केरियर डे पर विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित : कालियास (भीलवाड़ा)-रा.आ.मा.वि. कालियास, भीलवाड़ा में दिनांक 12.1.16 को हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 'स्वामी विवेकानन्द जयंती' को 'कैरियर डे' के रूप में विभिन्न गतिविधियों के साथ शाला प्रांगण में मनाया गया जिसमें उच्च माध्यमिक कक्षा उत्तीर्ण के बाद रोजगार की संभावनाएँ विषय पर पत्रवाचन, वार्ताएँ, निबन्ध लेखन प्रतियोगिताओं के साथ साहित्य संकलन एवं पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रधानाचार्य श्री रामेश्वर प्रसाद आमेटा ने युवा शक्ति को स्वामी जी के जीवन चरित्र से अधिगम कर मानव जीवन को सार्थक बनाने की ओर अग्रसर होने के लिए उद्‌बोधन दिया। साथ ही कैरियर डे प्रतियोगिता में श्रेष्ठ विद्यार्थियों को संस्था द्वारा पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्राध्यापक श्री गोपाल लाल बलाई ने किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राध्यापक श्री भीमसिंह राठौड़ व सह प्रभारी श्री दिनेश कुमार कोली ने की। कार्यक्रम प्रेरणादायी एवं छात्रों के लिए उत्साहवर्धक रहा।

शाला में स्वेटर वितरण कार्यक्रम आयोजित : लाडखानी (सीकर)-राजकीय माध्यमिक विद्यालय सांवलोदा लाडखानी, सीकर ने 13.1.2016 को शाला प्रांगण में स्वेटर वितरण कार्यक्रम जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक प्रथम श्री रेखाराम खीचड़ के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न किया। मुख्य अतिथि ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि समाज के अन्तिम छोर तक शिक्षा का प्रसार होना चाहिए जिससे कोई बालक शिक्षा से वंचित नहीं रहे। यह विद्यालय शिक्षा व खेल में अग्रणी है जो जिले के लिए गर्व की बात है। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व सरपंच रामेश्वर लाल थालोड़ ने की। विशिष्ट अतिथि भामाशाह हवाकंवर, सर्व श्री सुमेरसिंह, मदनलाल, राजेन्द्र जांगिड़ व पूर्व सरपंच शैलाबसिंह शेखावत रहे। प्रधानाध्यापक श्री फूल सिंह भास्कर ने बताया कि इस सत्र में विद्यालय का बोर्ड परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा और हैण्डबॉल में जिला स्तर पर शाला टीम विजेता रही जिसमें से एक का राष्ट्रीय स्तर पर तथा आठ का राज्य स्तर पर चयन हुआ। शारीरिक शिक्षक श्री भंवर सिंह ने बताया कि भामाशाह हवाकंवर ने 32 हजार रुपयों की लागत से 154 विद्यार्थियों को स्वेटर बांटी। इस सत्र में भामाशाहों द्वारा दो लाख रुपयों के भौतिक संसाधन उपलब्ध करवाये गये। कार्यक्रम को वरिष्ठ अध्यापक सर्व श्री दौलत सिंह, पुष्पेन्द्र सैनी, राजेश पूनिया, अर्जुनलाल शर्मा व सन्तोष ने सम्बोधित किया। इस अवसर पर शाला स्टॉफ के अतिरिक्त गाँव के भामाशाह, गणमान्य अभिभावक एवं छात्र-छात्राएँ उपस्थित रही। कार्यक्रम प्रेरणादायी रहा जिसका संचालन शा.शि. भंवर सिंह ने किया।

शाला में केरियर डे पर विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित : बरजिला पाली-स्थानीय रा.आ.उ.मा. विद्यालय बर, जिला-पाली के प्रांगण में 12 जनवरी 2016 को 'केरियर डे' उत्सव बड़े हर्षोउल्लास के साथ मनाया। इस अवसर पर शाला के प्रधानाचार्य श्री मोहनलाल गुर्जर ने बताया कि कैरियर प्रभारी श्री विनोद मेहरा ने विद्यालय में कैरियर संबंधी महत्त्वपूर्ण पत्र वाचन कर छात्र छात्राओं का मार्गदर्शन किया। साथ ही कैरियर विषय पर

निबन्ध लेखन, कैरियर चार्ट, कैरियर प्रदर्शनी, स्लोसाइकिल, सुलेख, मेंहदी-माण्डणा, पूजाथाल सजावट आदि प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन किया जिसमें छात्र छात्राओं ने पूर्ण मनोयोग से भाग लिया। इन विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम व द्वितीय स्थान पर रहने वाले विद्यार्थियों का शाला की प्रबन्ध समिति द्वारा पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम पूर्णत: रचनात्मक एवं उत्साहवर्धक रहा।

शाला की अध्यापिका ने निजी खर्चे से किया कक्षा-कक्ष का जीर्णोद्धार : सबलपुरा (सीकर)-रा.उ.मा.वि. सबलपुरा (सीकर) में रा.उ.प्रा.वि. के समायोजन होने से भवन की कमी के कारण बालकों के बैठने की जगह की कमी को देखते हुए समायोजित राउप्रावि. की शिक्षिका सुनीता रेवड़ ने परिसर में जीर्ण शीर्ण कक्ष को स्वयं के वेतन से 4 लाख रुपये खर्च कर जर्जर हिस्से को नये कक्षा-कक्ष के रूप में बदल दिया। यही नहीं अध्यापिका सुनीता ने स्कूल में बिजली, पानी का कनेक्शन करवाया तथा दीवारों पर शिक्षाप्रद जानकारियाँ रंग-रोगन करवाकर लिखवा दी। यही नहीं अध्यापिका सुनीता ने अभिभावकों से व्यक्तिगत सम्पर्क करते हुए 30 नये बालकों का प्रवेश भी करवाया तथा एक प्रेरणादायी एवं उत्साहवर्धक भामाशाह के रूप में स्वयं का उदाहरण प्रस्तुत किया। शाला परिवार एवं अभिभावकों ने इसके लिए अध्यापिका सुनीता का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

पूर्व छात्र ने शाला में करवाया हॉल मय बरामदे का निर्माण : हरमाड़ा (अजमेर) रा.आ.उ. मा.वि. हरमाड़ा, अजमेर के पूर्वछात्र श्री अमित कुमार चौरड़िया ने 15 अगस्त को घोषणा कर अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए एक बड़ा हॉल मय बरामदा तथा शौचालय बनाने के लिए 5 लाख रूपये दिये। संस्था प्रधान श्री करतार सिंह राठौड़ के अनुसार निर्माण कार्य प्रारम्भ कर दिया है। कार्य प्रगति पर है। प्रधानाध्यापक ने पूर्व छात्र की प्रशंसा करते हुए धन्यवाद दिया व आभार जताया।

राजकीय उच्च प्रा. विद्यालय 9-10 बी.एन.डब्ल्यू सादुर्लशहर श्रीगंगानगर के प्रांगण में 26 जनवरी 2016 का समारोह धूमधाम से मनाया गया। इस समारोह में जन सहयोग से विद्यालय के खेल मैदान के लिए हैण्डबाल के पोल बनवाकर दिये जिसकी निर्माण राशि 4000 रुपये आई है। प्राप्त हुई विद्यालय में इससे खेलकूद को बढ़ावा मिलेगा।

23 वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान काँग्रेस में रा. करणी उच्च माध्यमिक विद्यालय देशनोक की कक्षा 11 की छात्रा बाल वैज्ञानिक सपना शर्मा ने अपने शोध कार्य का राष्ट्रीय स्तर पर चण्डीगढ़ में प्रस्तुतीकरण किया। राज्य स्तर पर कुल 96 शोधकार्यों का प्रस्तुतीकरण किया गया। उनमें से 27 शोधकार्यों का राष्ट्रीय स्तर के लिये चयन किया गया था। बाल वैज्ञानिक सपना शर्मा बीकानेर मण्डल की एक मात्र छात्रा है। जिसका शोधकार्य राज्य के पाँच सर्वश्रेष्ठ शोधकार्यों में चयनित हुआ है। यह बीकानेर मण्डल के लिए गौरव की बात है।

बाल वैज्ञानिक सपना शर्मा ने बताया कि ज्यादातर ग्रामीण महिलायें ईंधन के रूप में गोबर से बनी थेपड़ी का उपयोग करती है। लेकिन समस्या यह है कि थेपड़ी धुँआ अधिक देती है। जिससे महिलाओं में दमा नामक बीमारी होने की सम्भावना रहती है। इसके अलावा वायु प्रदूषण भी होता है। इस समस्या के समाधान हेतु सपना शर्मा ने एक विशेष चूल्हा बनाया है। जिसकी सहायता से गर्म खाने के साथ-साथ गर्म पानी भी मिलता है। इसके अलावा धुँए को वायुमण्डल में जाने से रोकने के लिए चूने के पानी का उपयोग किया जो धुँए को अवशोषित करके कैल्सियम कार्बोनेट बनाता है जो चाक बनाने में प्राथमिक अभिकर्मक के रूप में काम आता है।

राष्ट्रीय बाल विज्ञान काँग्रेस प्रतियोगिता विज्ञान एवं प्रौद्योगिक विभाग द्वारा करवाई जाती है।

राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान द्वारा प्रथम बार विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें शाला की छात्रा सपना शर्मा सीनियर वर्ग में प्रदर्शन प्रतियोगिता (मांतुला) में प्रथम स्थान प्राप्त किया। बीकानेर जिले के जिला प्रतियोगिता समन्वयक श्री सुरेन्द्र सिंह भाटी ने सपना शर्मा को 2000 रु. का चैक देकर सम्मानित किया था। राज्य स्तर पर छात्रा ने अपने प्रदर्शन का प्रस्तुतीकरण उदयपुर में किया। वहाँ पर भी सपना शर्मा ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। छात्रा को तीसरा स्थान प्राप्त करने पर 11000 रु. का चैक देकर सम्मानित किया गया था जो शाला के लिए गौरव की बात है।

उपनिदेशक (माध्यमिक) बीकानेर मण्डल श्री ओमप्रकाश सारस्वत तथा जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) बीकानेर श्री हेमेन्द्र उपाध्याय ने भी छात्रा सपना शर्मा को बधाई दी है। छात्रा को शाला में आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह में शाला की ओर से सम्मानित किया गया।

वार्षिकोत्सव का गरिमापूर्ण आयोजन : रा.बा.उ.मा.वि. गुलाबपुरा में नगरपालिका अध्यक्षों की राज्यस्तरीय समिति के अध्यक्ष एवं नगरपालिका गुलाबपुरा अध्यक्ष श्री धनराज गुर्जर के मुख्य आतिथ्य में वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर संस्था प्रधान डॉ. रूपा पारीक ने विद्यालय द्वारा राज्य सरकार की योजनानुसार आदर्श विद्यालय बनने की ओर से किये गये प्रयासों का विवरण प्रस्तुत किया। विद्यालय की छात्राओं और अध्यापिकाओं ने इस सत्र में विज्ञान मेले, टूर्नामेंट एवं कला उत्सव में राज्य स्तर पर सहभागिता करते हुए कस्बे का नाम रोशन किया। सत्र में हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड़, फोर्टम कम्पनी, नगरपालिका गुलाबपुरा, भारत विकास परिषद् एवं विकास व प्रबंधन समिति के सदस्यों द्वारा विद्यालय को दिये गये भौतिक संसाधनों हेतु आभार व्यक्त किया गया। वर्षपर्यन्त संचालित शैक्षिक-सहशैक्षिक व खेलकूद प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली रौनक कुरैशी (राष्ट्रीय स्तर पर सहभागिता), मोनिका धोबी, सुमन कुमावत, टीना जाट, सबना नीलगर, मिथलेश कंवर, सीता जाट, मोनिका साहू, अंजली शर्मा, दीपिका सर्वा आदि (राज्य स्तरीय प्रदर्शन) के साथ-साथ जिले व उपखण्ड पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। विद्यालय के सर्वांगीण विकास में सहयोगी भामाशाहों का अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम अध्यक्ष श्री रामसुख गुर्जर तहसीलदार हुरड़ा ने छात्राओं द्वारा किये गये कार्यों के विज्ञान, समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं कलात्मक कृतियों की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

संकलन-**नारायणदास जीनगर**

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाते है। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

पानी से चलती है बाइक

पेट्रोल और डीजल के लगातार बढ़ते दामों से हर व्यक्ति परेशान है। काश! कुछ ऐसा हो कि पानी से सब वाहन चलने लगे । तो खुश हो जाइये। क्योंकि ऐसा हो चुका है। ब्राजील के साओंपोलो में रहने वाले एक व्यक्ति ने यह कारनामा कर दिखाया है। साओंपोलो में रहने वाले रिकार्डो एजवेडो इस नाम के व्यक्ति ने एक ऐसी बाइक का निर्माण किया है जो एक लीटर पानी में 500 किमी तक की दूरी तय कर सकती है। रिकार्डो ने अपनी इस बाइक का नाम टी पॉवर एच 2 ओ रखा है। इस बाइक में एक बैटरी लगी है। पानी डालने पर इस बैटरी के जरिए हाइड्रोजन बनती है। बाइक में इसी हाइड्रोजन को ईंधन के तौर पर इस्तेमाल किया जाताहै। जिससे बाइक चलती है।

डीएनए में सुरक्षित रह सकती है करोड़ो डीवीडी

कम्प्युटर डाटा में मैग्नेटिक टेप, डिस्क और ऑप्टिकल स्टोरेज सिस्टम में संग्रहित किया जाता रहा है। किन्तु वाशिंगटन युनिवर्सिटी व माइक्रोसॉफ्ट और इलिनॉय युनिवर्सिटी के एक समूह ने यह दिखा दिया है कि हमारी कोशिकाओं में पाए जाने वाले डीएनए के अणु में डेटा संग्रह किया जा सकता है। इसकी संग्रह क्षमता इतनी अद्भुत है कि पूरी दुनिया की डिजिटल जानकारी नौ लीटर घोल में संग्रहित की जा सकती है। सबसे बड़ी बात है कि यह जानकारी हजार साल या इससे भी ज्यादा समय तक सुरक्षित रहेगी। अत्याधुनिक इलेक्ट्रानिक या मैग्नेटिक सिस्टम की तुलना में डीएनए अणु की क्षमता भौंचक्का कर देती है। मसलन, यदि जानकारी को डीएनए कोड में कर दिया जाए तो एक कण में एक्जाबाइट यानी 20 करोड़ डीवीडी के बराबर जानकारी स्टोर होगी । उम्मीद है कि यह पांच साल के भीतर में यह सिस्टम आम हो जायेगा। वैज्ञानिक मानते है कि डीएनए धागे पर जानकारी लिखने की योग्यता अभी सीमित है । मैग्नेटिक या ऑप्टिकल सिस्टम पर जानकारी स्टोर करने में कुछ सेकंड लगते हैं, लेकिन उन्हें जिन मैग्नेटिक टेप या डिस्क पर स्टोर किया जाता है, उन्हें शैल्फ पर या रोबोटिक सिस्टम में रखना पड़ता है, जहां से प्राप्त करने में कई बार घंटों लग जाते है।

मिलावटी दूध की जाँच हेतु नई मशीन की खोज

राजस्थान के झुंझुनू जिले के पिलानी कस्बे स्थित केंन्द्रिय इलेक्ट्रोनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान (सीरी) के वैज्ञानिकों ने दूध में पानी समेत कई प्रकार के हानिकारक तत्वों की जानकारी चन्द सेकंड में पता लगाने वाली नई मशीन का आविष्कार किया है। इस मशीन का नाम क्षीर टेस्टर दिया गया है तथा आम आदमी तक पहुंचाने के लिए कंपनी बड़े पैमाने पर मशीन का उत्पादन कर लोगों तक पहुंचाएगी। आविष्कार करने वाली टीम प्रभारी एवं सीरी संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. पीसी पंचारिया ने बताया कि देश में दूध की जांच के लिए अब तक विदेशी मशीन काम में ली जा रही थी। क्षीर टेस्टर विदेशों में बनी मशीन के मुकाबले हल्की सस्ती एवं सटीक आंकड़े बताती है। दूध कारोबारी मिलावट को छिपाने के लिए दूध में इस प्रकार के हानिकारक पदार्थ मिलाते हैं जिनका साधारण जांचों में पता ही नहीं चलता । जैसे यूरिया, सोडा, कास्टिक सोडा, नमक, डिटर्जेट पावडर, अमोनियम सल्फैट, हाइड्रोजन प्रोक्साइड आदि प्रमुख है। वैज्ञानिकों अनुसंधानों में मिली जानकारी के अनुसार इस प्रकार के दूध का सेंवन करने वाले व्यक्ति में डायरिया, किडनी फैल होना, मनोरोग, गठिया सहित विभिन्न प्रकार के दर्द, रक्तचाप सहित कई प्रकार की बीमारियों के होने की आशंका रहती है। विकसित उपकरण देश में अपने प्रकार का प्रथम उपकरण है। चार से पांच लाख रुपये कीमत की विदेशी मशीन की जगह उद्योग हेतु सित्तर हजार में व घरेलु उपयोग हेतु मात्र दस हजार रूपये है। यह विदेशी मशीन की तुलना में परिणाम शीघ्र व उत्तम परिणाम देतीहै।

15 साल की उम्र में किया किशोर ने डबल ग्रेजुऐशन

एक 17 साल के मोशेकाई कैवलिन ने इन्होंने वे उपलब्धियां हासिल की जो इनकी उम्र के बच्चे सोच भी नहीं सकते । केवलिन ने 11 साल की उम्र में कम्युनिटी कॉलेज से ग्रेजुएशन किया था। चार साल बाद में कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी से मैथ्स बैचलर डिग्री हासिल की। इसके बाद कैवलिन ने साइबर सिक्योरिटी में मास्टर डिग्री हासिल करने के लिए ब्रैंडिज यूनिवर्सिटी में ऑनलाइन क्लासेज ज्वॉइन की थी। कैवलिन नासा को हवाई जहाजों और ड्रोन विमानों के लिए निगरानी तकनीक विकसित करने में मदद कर रहे हैं।

अंगुलियों से गणित की समस्याएं सुलझाएं

गणित की समस्याओं को अंगुलियों से पहचानने पर उन्हें आसानी से सुलझाया जा सकता है। शोध के अनुसार, ऐसे बच्चे जो कैलकुलेटर की जगह अंगुलियों के जरिए जोड़-घटाना करते हैं वह जल्दी और आसानीसे गणित के सवालों को हल कर लेते हैं। सिडनी यूनिवर्सिटी के शोधकर्त्ता पॉलगिंनस ने कहा, शोध के निष्कर्ष शिक्षकों और छात्रोंको गणित सीखने का आसान तरीका बताते हैं।

अमृता शेरगिल पर गूगल का डूडल

नईदिल्ली। वैश्विक सर्च इंजन गूगल ने शनिवार को अपने होम पेज पर 3 युवतियों वाली प्रसिद्ध पेटिंग प्रदर्शित कर प्रसिद्ध चित्रकार अमृता शेरगिल को उनके जन्मदिन पर याद किया। अमृता का जन्म 30 जनवरी 1913 में हुआ था। इन्हें भारत की फ्रीडा काल लोभी कहा जाता था। अमृता के चित्र उनकी जुनूनी जीवन शैली को बताते रहे हैं। शेरगिल की गिनती 20वीं सदी के मशहूर चित्रकारों में होती है।

संकलन-**नारायण दास जीनगर**

व्यक्ति महान, उत्कृष्ट साहित्य ग्रन्थों के अध्ययन से ही अपनी रुचियों को परिष्कृत कर सकता है और अपने आचरण को सभ्य बना सकता है।

-डॉ. राधाकृष्णन

विद्यालयों में उदारमना दानदाताओं के द्वारा लाखों रूपयों का सहयोग कर निर्माण एवं संसाधन जुटाने के महान कार्य किये जाते रहते हैं। भामाशाह जयन्ती के अवसर पर विभाग भी इन विभूतियों को सम्मानित करता है। इस कॉलम में प्रति माह आदरजोग भामाशाहों के अवदान का वर्णन कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें।

-वरिष्ठ संपादक

हमारे भामाशाह

उदयपुर

रा.मा.वि., गुड़ तह. सलूम्बर को श्री प्रताप सिंह अदावत द्वारा 25,000 रुपये लागत से एक कम्प्यूटर सैट, सर्वश्री नारायण लाल नंगारची से 11,000 रुपये नकद सर्व श्री चन्दन सिंह धनावत, केशर सिंह जैकणात, भैरूसिंह भिंदावत, जोरावर सिंह अदावत और केशर सिंह धनावत प्रत्येक से 1,100-1,100 रुपये नकद प्राप्त हुए, श्री गणेश लाल जोशी से 1,001 रुपये नकद प्राप्त हुए तथा विद्यालय परिवार श्री भरत कुमार चौबीसा (प्र.अ.) श्याम किशोर उपाध्याय (व.अ.), श्री छत्रपाल सिंह राठौड़ (व.अ.), राकेश कुमार आमेटा (व.अ.), रविशंकर त्रिवेदी (शा.शि.), राजेन्द कुमार पण्ड्या (अध्यापक) द्वारा एक एच.पी. प्रिन्टर लागत 13,000 रुपये।

चूरू

रा. आदर्श उ.मा.वि., धोधलिया को सभी ग्रामवासी (धोधलिया) द्वारा 150 टेबल-स्टूल सैट (लोहे की) लागत 1,50,000 रुपये, श्री जालूराम मोटसरा एवं समस्त भाई द्वारा पानी की टंकी (10'×6'×8') का निर्माण करवाया गया लागत 67,000 रुपये, श्री खिवराज मोटसरा एवं समस्त भाई द्वारा नलकूप (ट्यूबवेल) लागत 47,000 रुपये, श्री सुरेन्द्र सिंह द्वारा मुख्य द्वार (विद्यालय का) लागत 31,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि., छापर** को श्री नेमाराम प्रजापति (पूर्व छात्र) से शा.शि. वाक्पीठ में आर्थिक सहयोग 10,000 रुपये, शा.शि. वाक्पीठ में भोजन व्यवस्था हेतु 42,800 रुपये, श्री चिमनी राम, कैलाश चन्द रतावा (पूर्व छात्र) से शिक्षण कार्य में सहयोग 11,000 रुपये, श्री नरेन्द्र कुमार नाहटा से टेबल टेनिस बेट (5 सैट) हेतु 2,500 रुपये, खेलकूद प्रतियोगिता में सहयोगी स्वयं सेवकों को पुरस्कार हेतु 5,510 रुपये, श्री वासुदेव सूंठवाल (पूर्व छात्र) से 60वीं जिला स्तरीय टेबल टेनिस व टेनिस प्रतियोगिता सहयोग 5,000 रुपये, श्री शिवप्रकाश सोनी (पूर्व छात्र) 60वीं जिला स्तरीय बेडमिंटन व बास्केटबॉल प्रतियोगिता (17-19 वर्षीय) छात्र-छात्रा में पुरस्कार 20,000 रुपये तथा एक समय का भोजन 35,000 रुपये, श्री कैलाश कुमार पेड़ीवाल से बास्केटबॉल व बेडमिंटन प्रतियोगिता (17-19 वर्षीय) छात्र-छात्रा में सहयोग हेतु 5,100 रुपये तथा वृक्षों में पानी डलवाने हेतु 2,200 रुपये, श्री अनिल कुमार (पूर्व छात्र) से प्रतियोगिता में आर्थिक सहयोग 20,000 रुपये, श्री कपीन्द्र से खेलकूद सामग्री, शिक्षण कार्य में सहयोग 26,000 रुपये, श्री राजकुमार सरावगी से शिक्षण कार्य में सहयोग 12,000 रुपये, काली देवी हुकमाराम चैरिटेबल ट्रस्ट बड़ौदा से शिक्षण कार्य में सहयोग व वृक्षों में देने हेतु जल हेतु 14,300 रुपये, श्री बसन्त कुमार चाण्डक से खेल सामग्री हेतु 3,600 रुपये, श्री विनोद कुमार भुतोड़िया से खेल प्रतियोगिता में सहयोग 2,000 रुपये, स्व. धनीदेवी सारड़ा परिवार से खेल सामग्री में सहयोग हेतु 5,000 रुपये श्री गौतम करवा से मेधावी छात्रों हेतु छात्रवृत्ति हेतु 9,500 रुपये, श्री बिहारी लाल से खेल सामग्री हेतु सहयोग 3,000 रुपये, श्री राजेन्द्र प्रसाद नाहटा से बेडमिंटन एवं बास्केटबॉल प्रतियोगिता हेतु सहयोग 5,000 रुपये, श्री सोहन लाल, भीकम चन्द चौरड़िया, चैरिटेबल ट्रस्ट गाँधी नगर दिल्ली (मैसर्स जे.एम. जैन) से 100 विद्यार्थियों को पोशाक 50,000 रुपये, पूर्व विद्यार्थी द्वारा गुप्तदान से विद्यालय परिवार को भोजन हेतु 19,580 रुपये, श्री जयप्रकाश शर्मा से खेलकूद सामग्री हेतु 2,100 रुपये, विद्यालय के पूर्व छात्र से (गुप्तदान) खेल सामग्री 17,800 रुपये शिक्षण सामग्री एवं शिक्षण कार्य हेतु सहयोग 19,000 रुपये, टेनिस एवं टेनिस प्रतियोगिता में पुरस्कार वितरण हेतु सहयोग 15,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि., बैरासर छोटा तह. राजगढ़** में श्री ईश्वरचन्द गोयल व उनके भ्राताओं द्वारा 1,50,000 रुपये की लागत से विद्यालय के मुख्य द्वार का निर्माण करवाया गया तथा जन सहयोग से 30000 रुपये की लागत से शौचालय का नवीनीकरण, श्री ईश्वर सिंह (सरपंच) से एक कूलर भेंट लागत 10,000 रुपये।

संकलन-रमेश कुमार व्यास

अलवर

रा.उ.मा.वि., बहरोड़ में बलवन्त सिंह उर्फ बली काका द्वारा सम्पूर्ण भवन की सफेदी करवाई गई लागत 75,000 रुपये, श्री अशोक (पूर्व पार्षद) से 10 पंखें लागत 15,400 रुपये, श्री गीगाराम सैनी से 8 ग्रीन बोर्ड लागत 15,350 रुपये, श्री देवेन्द्र यादव (जिला उपाध्यक्ष भाजपा) से 8 ग्रीन बोर्ड लागत 15,500 रुपये, श्री जलेसिंह यादव (पूर्व चेयरमेन) से 10 पंखे लागत 15,500 रुपये, श्री प्रदीप यादव (पार्षद) से 10 कुर्सी लागत 18,000 रुपये, श्री रमेश चन्द सैनी से 5 पंखे लागत 7,750 रुपये, श्री खुशीराम मीर से 05 पंखे लागत 6,000 रुपये, श्री अजीत सिंह ठेकेदार से 05 पंखे लागत 6,000 रुपये, श्री श्यामलाल शर्मा से 05 पंखे लागत 7,750 रुपये, श्री शिवचरण यादव (पूर्व प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य भाजपा) से 04 लैक्चर स्टैण्ड लागत 10,500 रुपये, श्री राम सिंह गुर्जर (पूर्व पार्षद) से 25 कुर्सी लागत 15,000 रुपये, श्री ईश्वर सिंह यादव से 10 कुर्सी लागत 6,000 रुपये, श्री नत्थूराम पार्षद से 08 कुर्सी लागत 7,200 रुपये। **रा.उ.मा.वि., दोसोद** को सरपंच श्रीमती सोनू चौहान एवं भामाशाह पति श्री नवरंग सिंह चौहान द्वारा 100 मेज व 100 स्टूल लोहे की बनवाकर विद्यालय को भेंट लागत 1,00,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि., नाँगलिया** में श्री यादराम यादव द्वारा 1,05,000 रुपये की लागत से सरस्वती माँ के मन्दिर का निर्माण करवाया गया। **रा.उ.मा.वि., मानका** को श्री भगवान सहाय शर्मा से 18,000 रुपये नकद, भवानी सहाय ट्रस्ट से आर.ओ. और श्री जयसिंह से एक वाटर कूलर विद्यालय को सप्रेम भेंट। **रा.मा.वि., जागीवाड़ा तह. मुण्डावर** में ग्राम विकास समिति द्वारा विद्यालय में रंगाई-पुताई कराई गई लागत 1.20 लाख रुपये, श्री जगदीश प्रसाद चौधरी से एक इनवर्टर लागत 18,000 रुपये, श्री जगदेव चौधरी से 5,100 रुपये विद्यालय में लाइट फिटिंग हेतु, श्री मुकेश कुमार, श्री बद्री प्रसाद से विद्यालय में लाइट फिटिंग हेतु 1500-1500 रुपये प्राप्त हुए।

श्री गंगानगर

रा.मा.वि., 72 जी.बी. पं.स. अनूपगढ़ को श्री धर्मेन्द्र छाबड़ा (ईंट भट्टा यूनियन अध्यक्ष) से एक फोटो मय प्रिन्टर मशीन लागत 13,100 रुपये, विद्यालय में दानदाताओं द्वारा 170 स्टूल सैट प्राप्त हुए लागत 4,00,000 रुपये। **रा.मा.वि., जीवनदेसर तह. पदमपुर** को श्री गुरमीत सिंह (सरपंच ग्रा.प. जीवनदेसर) से 5000 रुपये, श्री हंसराज से 5,000 रुपये एवं समस्त नरेगा कार्मिकों द्वारा सामूहिक एक दिन का वेतन लगभग 6,000 रुपये से 18 सैट बैंच बनवाये गये। सर्व श्री कृष्ण पूनियां (व.अ.), लक्ष्मी वधवा (व.अ.), श्री पवन गुप्ता (व.अ.), महेन्द्र सिंह (व.अ.) पुरुषोत्तम दास (अ.) नरेन्द्र पूनिया (अ.), सोमदत मांझू (शा.शि.) व श्री लालचन्द (क.लि.) प्रत्येक से 500-500 रुपये नकद प्राप्त हुए। **रा.मा.वि., दलियांवाली तह. सादुलशहर** में श्री नगेश वर्मा द्वारा मंच (28'×20') का निर्माण करवाया गया लागत 31,000 रुपये, श्री निशान सिंह (मैसर्स जशन फिलिंग स्टेशन) द्वारा विद्यालय को एक एच.पी. लेजर प्रिन्टर कम स्कैनर कम फोटो कॉपियर लागत 12,500 रुपये सप्रेम भेंट। **रा.मा.वि., पतरोड़ा, पं.स. घड़साना** को श्री धर्मपाल जसूजा द्वारा विद्यालय को 100 सैट मेज व स्टूल लागत 70,000 रुपये।

शिविरा पत्रिका (मासिक) : मार्च 2016 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। © वरिष्ठ सम्पादक : प्रकाश चन्द जाटोलिया, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

चित्र वीथिका - मार्च, 2016

बाएँ : माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रो. वासुदेव देवनानी ने पुष्कर के स्काउटर रोशन कुमार मिश्रा को स्मृति चिह्न और प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित किया। साथ हैं माननीया महिला बाल विकास मंत्री श्रीमती अनिता भदेल; जिला कलक्टर श्रीमती आरुषि मलिक; पुष्कर विधायक श्री सुरेश सिंह रावत और अध्यक्ष, नगर पालिका पुष्कर श्री कमल पाठक। **दाएँ :** माननीय सांसद श्री सी.आर. चौधरी की सांसद निधि वर्ष 2015–16 से नवनिर्मित, लड़कों का शौचालय ब्लॉक राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मुआना (नागौर) का उद्घाटन श्रीमती कमला देवी भुगासरा (सरपंच) ग्राम पंचायत, मुआना (नावां) द्वारा किया गया।

बाएँ : राज्यस्तरीय एथेलेटिक्स प्रतियोगिता प्रारंभिक शिक्षा के उद्घाटन समारोह में श्रीमती अर्चना सिंह, जिला कलेक्टर, चूरू एवं ओमप्रकाश मुद्गल, जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक शिक्षा चूरू खेल मशाल भेंट करते हुए। **दाएँ :** राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, गुलाबपुरा, हुरड़ा (भीलवाड़ा) के वार्षिकोत्सव में छात्राओं द्वारा रंगारंग प्रस्तुति।

एस.आइ.क्यू.ई. कार्यक्रम के तहत विद्यालयों में कक्षा-कक्षीय गतिविधियाँ

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, धीरेरा (बीकानेर)

बच्चों द्वारा तैयार पोर्टफोलियो राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, प्रतापुरा (झुन्झुनूं)

डाक पंजीयन संख्या Jaipurcity408/2014-16 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● मार्च, 2016 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 मार्च, 2016 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : हर माह की 5, 6 तारीख

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

मचकुण्ड, धौलपुर

सांस्कृतिक विरासत के धनी धौलपुर के बारे में मान्यता है कि दिल्ली के अन्दर तोमर शासकों की सत्ता के समय धवलदेव नामक राजा ने चम्बल के आस-पास के क्षेत्र में धौलपुर की स्थापना की थी।

आधुनिक धौलपुर नगर 200 वर्ष पूर्व विकसित हुआ माना जा सकता है। मध्यप्रदेश के गोहद नगर के राजा कीरत सिंह व ईस्ट इण्डिया कम्पनी के मध्य समझौते के फलस्वरूप धौलपुर, बाडी व राजाखेड़ा का क्षेत्र राजा कीरत सिंह को सौंपा गया। कीरत सिंह के पुत्र राजा भगवन्त सिंह ने मचकुण्ड के नए मन्दिर, चौपड़ा शिव मन्दिर, नृसिंह बाग (महाराणा स्कूल) तथा बाग में स्थित मजार जैसी सुन्दर स्थापना करवाई।

मचकुण्ड धौलपुर के शहर से लगभग चार किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक प्राचीन स्थान है। यहाँ एक तालाब है जो विभिन्न मन्दिरों की एक शृंखला से घिरा हुआ है। मचकुण्ड प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर मनोरम स्थल है। ऐतिहासिक महत्त्व और सांस्कृतिक विरासत का धनी मचकुण्ड तीर्थ यात्रियों के लिए एक पवित्र स्थान है।

सौजन्य : मुकेश व्यास, सह-सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। मो. 9460618809